पाठ 1

इतिहास जानने के स्त्रोत

आइए सीखें

- इतिहास क्या है?
- इतिहास के विभिन्न स्त्रोत कौन-कौन से हैं?
- इतिहास के स्त्रोतों के महत्व व उपयोगिता।
- ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व एवं उनके सुरक्षा में हमारा क्या दायित्व है?

'संस्कृत' भाषा में इति + ह + आस से मिलकर **इतिहास** शब्द बना है। जिसका अर्थ होता है जो ऐसा (घटा) था। अर्थात् भूतकाल में घटित घटनाओं या उससे सम्बन्धित व्यक्तियों का विवरण इतिहास है।

मानव अपने अतीत के सम्बन्ध में जिज्ञासु रहा है। अपने निवास स्थलों के समीप निर्मित भवनों दुर्गों, मंदिरों, तालाबों एवं बावड़ियों आदि पुरातात्विक सामग्री के अवशेषों से वह अपनी प्राचीनता का अनुमान लगाता है। इतिहास के अध्ययन से हमें मानव के क्रमिक विकास की जानकारी मिलती है।

इतिहासकार प्राचीन काल की जानकारी के लिए कुछ निश्चित साधनों की मदद लेते हैं। ये साधन उस काल के औजार, जीवाश्म, पात्र, भोजपत्र, आभूषण, इमारतें, सिक्के, अभिलेख, चित्र, यात्रियों द्वारा लिखे यात्रा विवरण तथा तत्कालीन साहित्य आदि हैं। इन साधनों को इतिहास जानने के स्त्रोत कहते हैं, जिन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटा जाता है- 1. पुरातात्विक स्त्रोत, 2. साहित्यिक स्त्रोत।

शिलालेख: पत्थरों पर खोदकर लिखी गई बातों को शिलालेख कहते हैं।

भोजपत्र : एक विशेष प्रकार के वृक्ष की छाल, जिस पर प्राचीन ग्रंथ आदि लिखे जाते थे।

ताड़पत्र : ताड़वृक्ष के पत्तों पर रंग या स्याही से लिखी गई बातों वाले पत्र को ताड़पत्र कहते हैं।

ताम्रपत्र : तांबे के पत्तरों पर खोद कर लिखी गई बातों वाले तांबे के पत्तरों को ताम्रपत्र कहते हैं।

जीवाश्म : प्राचीन जीव, मनुष्य, जानवरों की हड्डियाँ जो पाषाण के रूप में परिवर्तित होना प्रारंभ हो जाती है।

अधिकांश शिलालेख संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं तमिल भाषा में हैं तथा ब्राह्मी लिपि में लिखे गये हैं। इसलिए इन्हें सभी लोगों के लिए पढ़ना कठिन होता है। लेकिन कुछ लिपिशास्त्री और पुरातत्ववेत्ता इन्हें पढ़ लेते हैं।

पुरातत्ववेत्ता : वे व्यक्ति जो पुरानी वस्तुओं, स्थलों की खोज करते हैं, और उनके बारे में सही तथ्यों का पता लगाते हैं।

मानव को जब लिपि का ज्ञान नहीं था तब उस समय वे चित्रों के माध्यम से अपनी बातें शिलाओं पर चित्रित करते थे। इन चित्रों को **'शैल चित्र'** कहते हैं। मध्यप्रदेश में भोपाल के पास भीमबेटका के शैल चित्र इस बात के जीवंत प्रमाण है। शैलचित्र भारत के विभिन्न भागों में मिलते हैं। भीमबेटका विश्व का सबसे बड़ा शैल चित्र स्थल है। इसकी खोज पद्मश्री डॉ. वि.श्री. वाकणकर के द्वारा की गई थी। इस स्थल को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया है।

क्या आप जानते हैं कि भारत के लगभग तीन-चौथाई शैलचित्र मध्यप्रदेश में विन्ध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियों में पाये गये हैं।

शिक्षण संकेत : उपरोक्त चित्रों को देखकर बच्चों से अनुमान लगाने को कहें कि ये वस्तुएँ प्राचीन काल में मनुष्य के किस काम आती रही होंगी।

भवन तथा अन्य स्त्रोत मानव के गणितीय ज्ञान व स्थापत्य कला के विकास की कहानी से परिचय कराते हैं।

साहित्यिक स्त्रोत तत्कालीन समय की विभिन्न बातों पर प्रकाश डालते हैं। प्राचीन समय के ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, संगम साहित्य और त्रिपिटिक आदि उस समय के समाज, नगरों, रीति-रिवाजों, संस्कृति के बारे में प्रकाश डालते हैं।

प्राचीनकाल के भवन, महल, मंदिर, मस्जिद, चर्च, किले, बावड़ी आदि हमें उस समय की कला-संस्कृति, समृद्धि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक स्थिति की जानकारी देते हैं।

यूनानी यात्री मेगस्थनीज, चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाह्यान तथा इत्सिंग और अन्य देशों के यात्रियों ने हमारे देश की यात्रा की तथा उनके द्वारा लिखे गये यात्रा-विवरण से हमें उस समय की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।

समय के प्रवाह के साथ-साथ व्यापार वाणिज्य ने अपनी जगह बनाई। व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान पर गये, आपसी मेल-मिलाप हुआ। लेन-देन बढ़ा। संस्कृति का परिवर्तन क्रम शुरू हुआ। भाषा एवं लिपि एक स्थान से दूसरे स्थान पर गई तथा विभिन्न भाषाओं के मिश्रण से नई भाषाओं ने जन्म लिया। जीवन के क्षेत्रों में परिवर्तन शुरू होकर जीवन मूल्यों में परिवर्तन का दौर शुरू हुआ।

हमें अपने देश की प्राचीन धरोहरों की रक्षा करना चाहिये क्योंकि उन्हीं के आधार पर हमें अपने अतीत की जानकारी मिलती है। प्राचीन धरोहरें राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति की परिचायक होती है।

अभ्यास प्रश्न

1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

(अ) इतिहास जानने के मुख्य स्त्रोत कौन-कौन से हैं?

(ब) शैल चित्र क्या होते हैं व मध्यप्रदेश में वे कहाँ मिलते हैं?

(स) भोजपत्र किसे कहते हैं?

(द) इतिहास का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

(य) ऐतिहासिक धरोहरों की सुरक्षा हमें क्यों करनी चाहिए?

2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए?

(अ) ह्वेनसांग और फाह्यान ..... यात्री थे।

(ब) भीमबेटका की खोज ..... ने की थी।

(स) पुरानी वस्तुओं/स्थलों की खोज करने व उनके बारे में सही तथ्यों का पता लगाने वाले को ..... कहते हैं।

3 सही विकल्प चुनकर लिखिए -

(अ) ताम्रपत्र लिखे जाते हैं :-

(i) पत्थरों पर (ii) तांबे के पत्तरों पर (iii) वृक्ष के छाल पर

(ब) शिलालेख कहा जाता है :-

(i) पत्थरों पर खोद कर लिखी जानकारी (ii) किताबों में लिखी जानकारी

(iii) भोजपत्र पर लिखी जानकारी

(स) स्थापत्य कला से हमें ज्ञान होता है :-

(i) भवनों का (ii) चित्रों का (iii) औजारों का।

प्रोजेक्ट कार्य-

- अपने गांव/शहर/संग्रहालय का अवलोकन कीजिए। वहाँ देखी गई ऐतिहासिक चीजों की सूची बनाइये।
- इतिहास जानने के कौन-कौन से स्रोत हैं। उनकी सूची बनाइए।
- अपने गांव/स्कूल के आसपास का भ्रमण करें। लोगों से बातचीत कर अपने गांव के इतिहास की जानकारी एकत्रित करें।

❖❖❖❖

पाठ 2

आदिमानव

आइए सीखें -

- मानव का क्रमिक विकास किस प्रकार हुआ है?
- आदिमानव का खानपान व रहन-सहन कैसा था?

आधुनिक खोजों से ज्ञात हुआ है कि लाखों वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर मानव का जन्म हुआ था। पहले मनुष्य चार पैरों पर चलता था और जंगलों में रहता था। वह पेड़ों की जड़ें, पत्तियाँ, फल-फूल इत्यादि खाता था। कुछ छोटे जानवरों को मारकर उनका कच्चा माँस खाता था। वस्त्र नहीं पहनता था व घूमता रहता था।

यह बानर जैसा मानव खाने की तलाश में इधर-उधर दिन भर भटकता लेकिन रात होने पर और जानवरों से सुरक्षा व ठंड/बरसात से बचने के लिए गुफा जैसे स्थान मिलने पर उसमें रहने लगा। लेकिन वह अधिकांशत: पेड़ों पर चढ़कर ही रहता था और इस तरह रात में जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा करता था। संभवतः जब उसने ऊँचाई पर लगे पेड़ों के फलों को देखा होगा तब उनको तोड़ने के लिए वह धीरे-धीरे अपने शरीर को संतुलित करते हुए चार के बजाए दो पैरों का उपयोग करने लगा होगा। इस प्रकार उसके दो हाथ स्वतंत्र हो गए होंगे जिनका उपयोग वह धीरे-धीरे किसी चीज को खोदने, पकड़ने व उठाने में करने लगा होगा और इस तरह वह दो पैरों का उपयोग चलने एवं हाथों का उपयोग काम करने के लिए करने लगा होगा।

इस तरह मनुष्य में धीरे-धीरे शारीरिक परिवर्तन होते गए। जैसे जब वह पैरों पर खड़ा होने लगा तो अधिक दूर तक देखने लगा होगा व आसपास की चीजों को देखने के लिए पूरे शरीर को घुमाने के बजाय

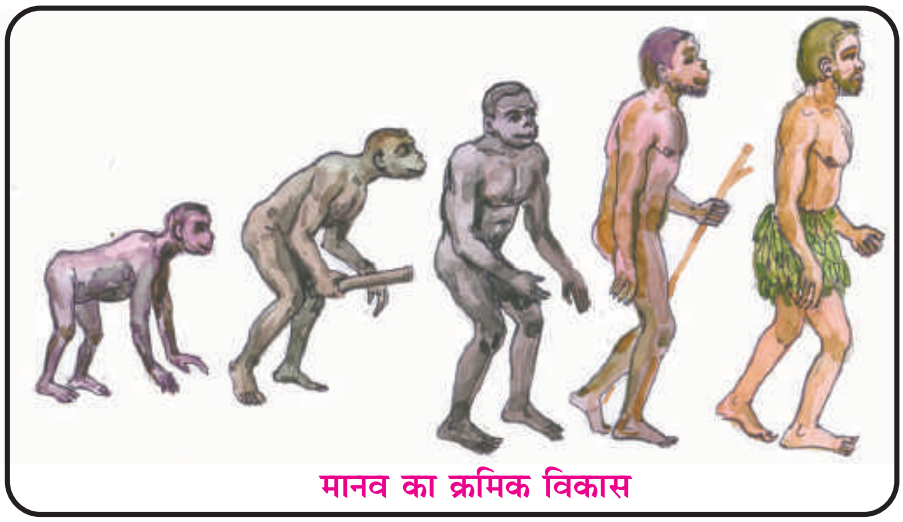

मानव का क्रमिक विकास

सिर्फ गर्दन का उपयोग करने लगा। हाथों का उपयोग पेड़ों की टहनियाँ पकड़कर फल तोड़ने, खाना लाने, खाना खाने के लिए करने लगा, इसी समय वह पीठ के बल सोने लगा होगा। इस प्रकार शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानव के सोचने की शक्ति का भी तेजी से विकास होने लगा। उसके स्पष्ट रूप से रोने व हँसने की आवाज में भी अधिक स्पष्टता आती गयी।

निरन्तर आते परिवर्तनों के द्वारा अब मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास व सुरक्षा के बारे में भी सोचने लगा होगा। भोजन की तलाश में घूमते रहने के साथ-साथ अब वह भोजन इकट्ठा भी करने लगा और जंगल में जानवरों से बचाव करने के लिए लकड़ी, जानवरों की हड्डियों, सींगों, धारदार, नुकीले पत्थरों का प्रयोग करने लगा।

उपरोक्त तरह के मानव अर्थात आज से लाखों वर्ष पुराने मानव को **आदिमानव** कहा गया है।

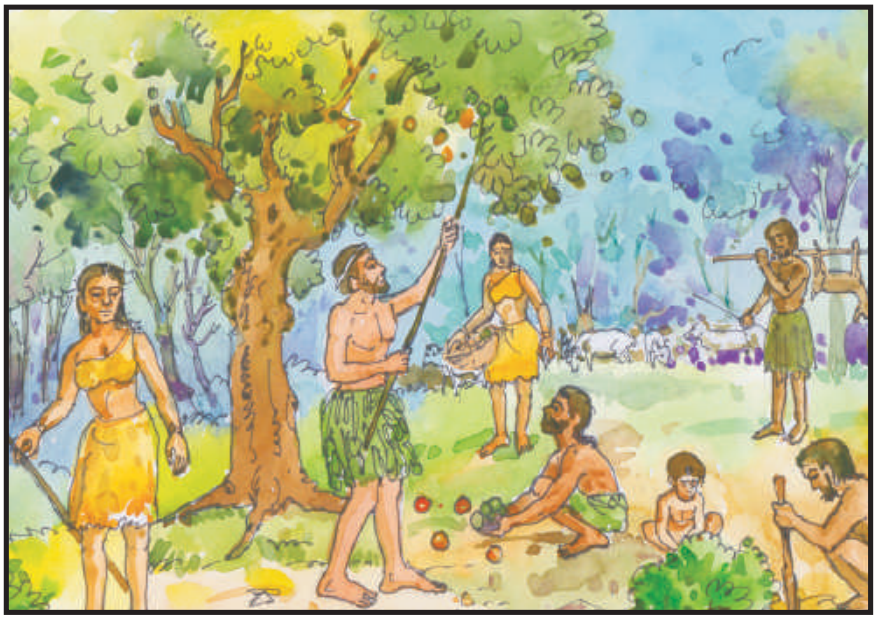

ऊपर दिए चित्र को ध्यान से देखों और नीचे बनी तालिका को भरो -

1.	आदिमानव भोजन कैसे प्राप्त करता था।	
2.	आदिमानव क्या पहनता था?	
3.	शिकार कैसे करता था?	

आदिमानव पत्थरों का उपयोग जानवरों के शिकार करने, माँस काटने, लकड़ी काटने, कन्दमूल खोदने आदि के लिए करता था। पत्थर को पाषाण भी कहते हैं, इसलिए इसे पाषाण युग कहा गया है। आइए

शिक्षण संकेत : तालिका भरने से पहले उपरोक्त चित्र पर बच्चों से चर्चा कराएँ।

पाषाण युग के बारे में जानें -

पाषाण काल - पाषाण काल लाखों वर्षों तक चला। पत्थरों के औजारों के स्वरूपों के आधार पर इस युग को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं :-

1. पुरा पाषाण काल 2. मध्य पाषाण काल 3. नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल

1. **पुरा पाषाण काल** में औजार, पत्थरों को तोड़कर बनाए जाते थे। ये आकार में विशाल होते थे। धीरे-धीरे मानव ने इस कला में दक्षता प्राप्त कर ली। सैकड़ों वर्षों के अनुभव व भौगोलिक परिवर्तन के कारण औजारों में बदलाव आया।

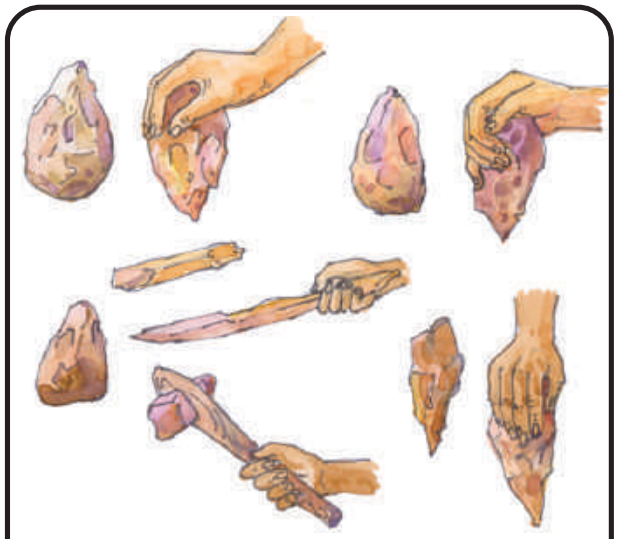

पत्थर के औजार

2. **मध्य पाषाण काल** में औजार आग्नेय पत्थरों से अधिक छोटे व पैने बनाये जाने लगे। इनमें कठोर एवं मजबूत पत्थर का प्रयोग किया जाने लगा। इन पत्थरों की खास बात यह थी कि इनके फलक (चिप्पड़) आसानी से निकाले जा सकते थे और इन्हें मनचाहा आकार दिया जा सकता था। प्रारंभ में हाथ में आसानी से पकड़े जा सकने वाले पत्थरों के औजार बनाए जाते थे। धीरे-धीरे हथियारों में हत्थे लगाकर प्रयोग करने की कला मानव ने सीखी। इन औजारों को लकड़ी के हत्थे में बांधकर इनकी शक्ति को बढ़ाया गया।

3. **नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल -** इस काल में छोटे पैने तथा अधिक संहारक हथियार कड़े पत्थरों से बनाये जाने लगे। जिनकी मारक क्षमता अधिक थी। इन्हें बाण के अग्रभाग में तथा कुल्हाड़ी के पैने भाग के स्थान में लगाया जाता था।

इस काल में पत्थर की चिकनी कुल्हाड़ियाँ, हाथ के बनाये बर्तन, झोपड़ियों के निर्माण स्थल तथा लघु पाषाण उपकरण प्राप्त होते हैं। इनका काल लगभग 2500 ई.पू. माना जाता है। इस काल से सिंधु सभ्यता के विकास का क्रम आरंभ होता है।

आग की खोज- पहले मनुष्य आग के बारे में नहीं जानता था। जब उसने पहली बार जंगल में सूखी लकड़ियों को आपस में तेज रगड़ खाकर आग लगते हुए एवं पत्थरों के औजारों के निर्माण के दौरान दो पत्थरों के आपस में टकराने व चिंगारियों को निकलते हुए देखा होगा तब पहली बार मानव ने दो पत्थरों के आपस में टकराकर आग उत्पन्न की होगी। यह मनुष्य की पहली सबसे बड़ी उपलब्धि थी। आग के जलने से आदि मानव को बहुत लाभ हुआ जैसे-

- अब वे मांस को भूनकर खाने लगे।
- रात के समय आग जलाकर प्रकाश प्राप्त करने लगे।
- ठंड के समय आग जलाकर गर्मी प्राप्त करने लगे।
- जंगली जानवर आग से डरते हैं अत: वे आग जलाकर जानवरों से अपनी सुरक्षा करने लगे।

आदि मानव भोजन की तलाश में घूमता रहता था। थक जाने पर पेड़ों तथा पहाड़ों की गुफाओं में निवास करता था। पहाड़ों की चट्टान को शैल भी कहते हैं। शैल में निर्मित इन आश्रय स्थलों के कारण इन्हें **शैलाश्रय** भी कहते हैं। ये शैलाश्रय कहीं-कहीं तो इतने बड़े हैं कि इनमें पाँच सौ व्यक्ति तक बैठकर आश्रय प्राप्त कर सकते हैं। इन्हीं गुफाओं में बैठकर आदि मानव ने अपने दैनिक जीवन की क्रियाओं को चित्रित किया है। चूंकि ये चित्र गुफाओं की चट्टानों पर बने हैं अत: इन्हें शैलचित्र कहते हैं। भारत में सैकड़ों स्थलों पर ऐसे चित्रित शैलाश्रय मिले हैं। मध्यप्रदेश में भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, होशंगाबाद, जबलपुर, मन्दसौर कटनी, सागर, गुना आदि जिलों में कई चित्रित शैलाश्रय मिले हैं। आदि मानव के पास हमारे जैसे वस्त्र नहीं थे। वे ठंड-बरसात आदि से बचने के लिए वृक्षों की छाल, पत्तों तथा जानवरों की खाल से अपना शरीर ढँकते थे। इनके साथ-साथ लकड़ी, सीप, पत्थर, सींग, हाथी दाँत और हड्डी के बने आभूषणों का भी प्रयोग करते थे। ये पक्षियों के पंखों से भी आभूषण बनाते थे।

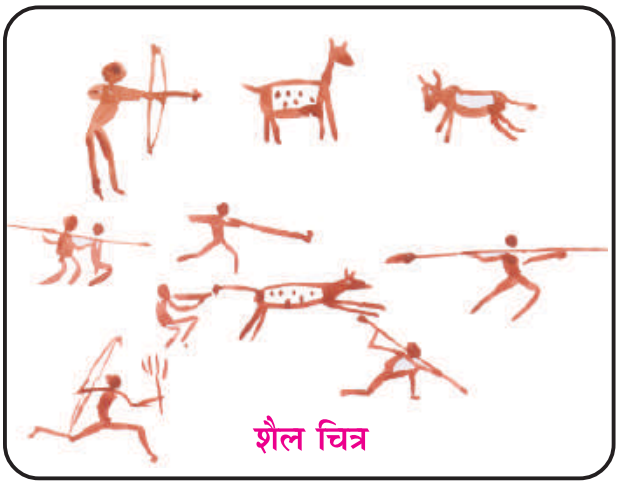

शैल चित्र

मालाएँ

हमारे प्रदेश में आज भी कई जनजातियां ऐसे ही श्रृंगार करती हैं और पंख, सीप, हड्डी, लकड़ी, रंगीन पत्थर जानवरों के सींग तथा दाँतों से अपने आभूषण बनाते हैं।

पशुपालन एवं कृषि

नव पाषाण काल तक आदि मानव ने पशुपालन और खेती करने के प्रारंभिक तरीकों की खोज कर ली थी। अब वह जान गया था कि शिकार के साथ-साथ पशुपालन उसके लिए महत्वपूर्ण है। वह अनेक उपयोगी पशुओं को पालने लगा। पशुओं से वह कई

तरह के काम लेता था- शिकार करने में कुत्ता, खेती करने में बैल, दूध प्राप्त करने में गाय, भैंस, बकरी, मांस प्राप्त करने में बकरा, भेड़, भैंसा, सवारी हेतु बैल, भैंसा, घोड़ा, ऊँट आदि। पुरातत्वविदों के अनुसार भारत में कृषि की शुरूआत आज से लगभग दस हजार साल पहले हो चुकी थी। इस प्रकार आदि मानव का भोजन की तलाश में घूमना-फिरना कम हो गया। अब वह जान गया था कि मानव और पशु-पक्षियों द्वारा खाकर फेंके हुए फलों के बीजों से नए पौधे उग आते हैं। खेती करने की कला एक महत्वपूर्ण खोज थी जिसके कारण मानव को भोजन की तलाश में भटकने की जरूरत नहीं रही और अब उसने एक जगह बसना सीख लिया।

लेकिन मानव को जब खाद्य सामग्री की कमी पड़ने लगी तब उसने जमीन/ खेत की खुदाई/ पत्थर/ लकड़ी/ हड्डियों से बने यंत्रों से करके जमीन में बीज बोना शुरु किया। धीरे-धीरे मिट्टी व उसकी निदाई गुड़ाई व पौधों के लिए पोषक तत्वों का महत्त्व जाना व पानी के स्त्रोत के निकट वाली जमीन में सामान्यतः खेती करने लगा। समयानुसार धीरे-धीरे कृषि का विकास हुआ वर्तमान में अपनी आवश्यकता के साथ-साथ मनुष्य ने अनेक विकसित कृषि यंत्रों का विकास किया जिससे कम समय में अधिक फसलें ली जा रही है। इस प्रकार आदिकाल से लेकर आज तक मानव की कृषि पर निर्भरता लगातार बढ़ती गई और कृषि के विकास के साथ-साथ सभ्यता का विकास हुआ।

पहिए की खोज

आदिमानव की प्रगति में पहिए की खोज का महत्वपूर्ण स्थान है और यह खोज उसके जीवनयापन के लिए वरदान साबित हुई। इस खोज से मानव ने बड़ी तेजी से प्रगति की। इस खोज से मानव को कई लाभ हुए। जैसे-

- भारी चीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने ले जाने में,
- गहराई से पानी खींचने में,
- चाक से मिट्टी के बर्तनों के निर्माण में,
- पशुओं द्वारा खीची जाने वाली पशु गाड़ी निर्माण में,

इस खोज के बाद मनुष्य की लगातार प्रगति होती गई।

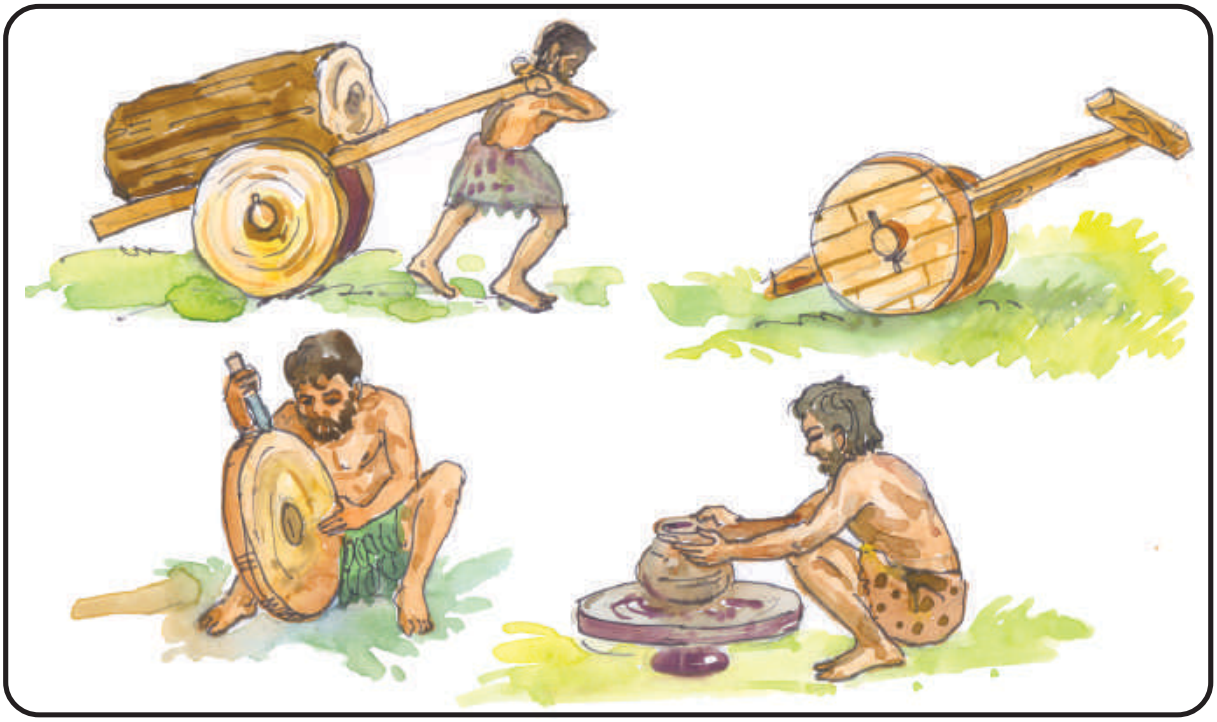

पहिए के उपयोग

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) आदिमानव अपने औजार किससे बनाता था?

(ब) आदिमानव पत्थर के औजार किस-किस काम में लाते थे?

(स) मध्यप्रदेश के किन-किन जिलों में शैलचित्र मिलते हैं?

(द) आदिमानव जानवरों से अपनी रक्षा किस तरह करता था?

(य) आग की खोज कैसे हुई? इससे आदि मानव को क्या लाभ हुए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए :-

(अ) मानव का क्रमिक विकास बताइए।

(ब) मानव खेती करना और पशुपालन करना कैसे सीखा? विस्तार से लिखिए।

3. टिप्पणी लिखिए-

अ. आग की खोज

ब. पहिए की खोज एवं उपयोग।

प्रोजेक्ट कार्य

- मानव के विकास के क्रम की सूची बनवाइए।

❖❖❖❖

पाठ 3

परिवार एवं समाज

आइए सीखें

- व्यक्ति तथा परिवार क्या हैं?
- समाज कैसे बनता है?
- परिवार एवं समाज के आपसी संबंध।

आप जब शिशु अवस्था में थे, विद्यालय में पढ़ने नहीं आते थे, तब आपको घर पर कौन नहलाता-धुलाता था? आपको भोजन कौन करवाता था? कपड़े कौन पहनाता था? इन सभी कार्यों को आपके माता-पिता एवं घर के अन्य बड़े सदस्य करते रहे होंगे। जैसे-जैसे आप बड़े होते गए, कुछ काम आप स्वयं करने लगे होंगे। घर अथवा पड़ोस में जब कोई बीमार पड़ जाता है, अथवा कोई कठिनाई में होता है, तब उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है।

जरा सोचिए! जब आप शिशु थे तब आपकी माता आपकी देखभाल न करती तो क्या होता? माता-पिता अपने शिशुओं की जिम्मेदारी सहज रूप से स्वीकारते हैं। यही भावना परिवार तथा समाज के सदस्यों में होती है। इसी से परिवार व समाज संगठित रहता है।

व्यक्ति

आइए व्यक्ति, परिवार एवं समाज के विषय में जानें। व्यक्ति परिवार की एक इकाई है। व्यक्ति अपने परिवार में रहते हुए पलते-बढ़ते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अपना विकास करते हैं। यदि आप अपने घर में कभी अकेले रहे हों, तो बताइए कि उस समय आपको कैसा लगा। यदि अधिक समय तक अकेले रहना पड़ा होगा तो आपको निश्चित ही अच्छा नहीं लगा होगा।

व्यक्ति की विशेषताएँ उसके वैयक्तिक गुण, भोजन, वस्त्र, आवास आदि के आधार पर निर्धारित होती हैं। समाज में व्यक्ति राजनेता, धर्म उपदेशक, अध्यापक, न्यायाधीश, चिकित्सक, कृषक एवं श्रमिक आदि पद धारण कर विभिन्न कार्य करता है एवं समाज में अपनी पहचान बनाता है।

परिवार

परिवार में व्यक्ति एक इकाई है। एकल परिवार में प्रायः पति-पत्नी, उनके पुत्र-पुत्रियाँ एवं संयुक्त परिवारों में पति-पत्नी व पुत्र-पुत्रियों के अतिरिक्त, दादा-दादी, चाचा-चाची आदि भी शामिल होते हैं।

एकल परिवार

संयुक्त परिवार

परिवार में व्यक्तियों के साथ-साथ रहने पर सुरक्षा का भाव पैदा होता है। परिवार के सदस्यों की परिवार में व्यक्तिगत आवश्यकताएँ भी पूरी होती हैं। परिवार के बड़े एवं बुजुर्ग सदस्यों का प्यार, सीख व मार्गदर्शन छोटों को प्राप्त होता है। माता को प्रथम गुरू भी कहा गया है। बच्चे को प्रथम शिक्षा परिवार में माता के माध्यम से प्राप्त होती है। परिवार के बड़े सदस्य बच्चों की साफ-सफाई, स्वास्थ्य व शिक्षा का ध्यान एवं बड़े-बूढ़ों की देखभाल सहर्ष करते हैं। बच्चों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए परिवार ही उन्हें विद्यालयों को सौंपता है। परिवार के छोटे सदस्य भी वृद्धजनों की देखभाल करते हैं, व बड़ों का आदर करते हैं।

आपस में रिश्तेदारी, रक्त संबंध होते हुए एक घर में रहने वाले सदस्यों से मिलकर परिवार बनता है। छोटे परिवार को आदर्श परिवार माना गया है। विद्यालय भी एक परिवार के समान है।

समाज

कई परिवारों से मिलकर समाज का निर्माण होता है। परिवार समाज की एक इकाई है। एक प्रकार के समाज में खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ प्राय: एक ही प्रकार के होते हैं।

वर्तमान में बदलते आर्थिक एवं सामाजिक संदर्भों में समाज नए प्रकार से भी संगठित हो रहे हैं। इन परिवर्तनों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका उद्देश्य सामाजिक रीति-रिवाजों में आ गई कुरीतियों को दूर करना है। वर्तमान में जागरूक समाज के लोग अपने-आपको संगठित कर एक मंच पर आना शुरू हो गए हैं। वे अशिक्षा, बाल-विवाह, दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कार्य कर रहे हैं। यह नवीन सामाजिक प्रवृत्ति का परिचायक है। ऐसे संगठित समाज के लोगों ने अपने समाज के नियमों का भी निर्धारण किया है और सामाजिक क्रियाकलापों द्वारा व समाज के सदस्यों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहन भी दे रहे हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: समाज से पृथक रहकर वह अपनी तथा अपने सामाजिक हितों की रक्षा नहीं कर सकता। यदि मनुष्य, मनुष्य की भांति रहना चाहता है, तो उसे अपने आसपास के लोगों से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने चाहिए।

समाज एक व्यवस्था है। प्रत्येक समाज की एक संरचना होती है। समाज का अपना संगठन होता है। समाज का आधार सामाजिक संस्थाएँ और संबंध होते हैं।

सामाजिक संबंध

यदि दो व्यक्ति रेलगाड़ी या बस में साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं और आपस में बातचीत भी कर रहे हैं, तो इतने मात्र से सामाजिक संबंध नहीं बन जाते। यह कुछ देर का संपर्क मात्र है। यदि सम्पर्कों को बढ़ाया जाए, एक-दूसरे के सुख-दु:ख में शामिल हुआ जाए तथा सम्पर्कों को किसी प्रकार का स्थाई आधार दिया जाए और इनका निर्वाह भी किया जाए तो सामाजिक संबंधों की स्थापना हो सकती है।

समाज कैसे बनता है?

समाजशास्त्रियों ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल माना है। वास्तव में अनेक परिवारों के आपसी संबंधों से समाज का निर्माण होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है अत: वह परिवार एवं समाज दोनों से जुड़कर रहता है। व्यक्ति के जीवन में विवाह हेतु उचित साथी का चुनाव तथा विवाह के बाद बच्चों का पालन-पोषण उनकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करना आदि की चिंताएँ सामने आती हैं। समाज के सदस्य एवं उसके पारिवारिक मित्र आदि इन समस्याओं को सुलझाने में अपनी राय भी देते हैं।

एक उन्नत समाज में व्यक्तियों की आपस में निर्भरता, साथ-साथ कार्य करने की भावना, व्यक्तिगत विचारों का सम्मान एवं किसी सामाजिक घटना का सही-गलत विश्लेषण करने की क्षमता पाई जाती है।

शिक्षित समाज अनेक सामाजिक समस्याओं जैसे कम उम्र में विवाह, अधिक संतानों का होना, बच्चों को प्रारंभिक एवं अनिवार्य शिक्षा न दिलाना जैसी बुराइयों पर नियंत्रण लगा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) परिवार की इकाई क्या है?

(ब) समाज में व्यक्ति अपनी पहचान कैसे बनाता है?

(स) बच्चे का प्रथम गुरु किसे माना गया है?

(द) आपके परिवार में कितने सदस्य है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) एकल परिवार और संयुक्त परिवार से आप क्या समझते हैं? आपका परिवार आपकी कौन-कौन सी आवश्यकताएँ पूरी करता है? सूची बनाइए ।

(ब) समाज कैसे बनता है? आप समाज की किन-किन बुराईयों पर नियंत्रण लगाना चाहते है लिखिए ।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) अपने शिशुओं की जिम्मेदारी ..... सहज रूप से स्वीकारते हैं।

(ब) छोटे परिवार को ..... माना गया है।

(स) परिवार की इकाई ..... होती है।

(द) समाज की इकाई..... होती है।

प्रोजेक्ट कार्य

- आपके आस-पड़ोस में रहने वाले पाँच एकल परिवार तथा पाँच संयुक्त परिवारों की सूची बनाइये।
- परिवार, आस-पड़ोस के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, परम्पराओं और त्यौहारों का अवलोकन कर उसका वर्णन कीजिए।
- आप अपने आस-पड़ोस के उन बच्चों की सूची बनाएँ जो विद्यालय नहीं जाते उन्हें विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए आपने क्या प्रयास किया उसका विवरण अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए।

❖❖❖❖

पाठ 4

पारस्परिक निर्भरता

आइए सीखें

- पारस्परिक निर्भरता क्या है?
- समुदाय को पारस्परिक निर्भरता की आवश्यकता क्यों होती हैं?
- नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के लोग आपस में किस प्रकार एक-दूसरे पर निर्भर है?
- नागरिक जीवन में परस्पर निर्भरता का क्या महत्व है?

प्राचीन काल में व्यक्तियों की आवश्यकताएँ सीमित थीं। व्यक्ति अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लेता था। जैसे-जैसे विकास क्रम में वह आगे बढ़ा, उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गई। व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करने में दूसरों का सहयोग लेने लगा एवं कुछ मामलों में दूसरे लोगों पर निर्भर रहने लगा। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ समान होती हैं, जैसे भोजन, कपड़े व आवास। इन आवश्यकताओं में वृद्धि और विविधता, पारस्परिक निर्भरता का कारण बनी।

मनुष्य को जब विविधता का ज्ञान हुआ, उदाहरण के लिए भोजन में विभिन्न खाद्य वस्तुओं को पकाने के भिन्न ढंग, स्वाद में भिन्नता, आवास हेतु झोपड़ी या मकानों में भिन्नता तथा कपड़ों में विविधता आई तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही ये सब जुटाना कठिन पड़ने लगा। साथ ही विशेष चीजों में रुचि पैदा हुई और वह वस्तु उसे आवश्यक लगने लगी। यह आवश्यकता उसे दूसरों के करीब ले गई तथा अपनी आवश्यकता व रुचियों की पूर्ति के लिए वह एक दूसरे पर निर्भर हो गया।

किसी कार्य या आवश्यकता के लिए एक का दूसरे पर निर्भर होना पारस्परिक निर्भरता कहलाता है।

गाँव व शहर के मध्य निर्भरता

भारत में लगभग 65-70 प्रतिशत लोग आज भी कृषि के व्यवसाय से जुड़े हुए है। हम अपनी अधिकांश आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए कृषि पर निर्भर है । शहरी क्षेत्र अत्यधिक तकनीकी विकास के बावजूद भी कच्चे माल के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं जैसे- अनाज, सब्जियों, फल, दूध आदि के लिए गाँव पर निर्भर रहते है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र खेती संबंधी वस्तुओं जैसे-खाद, बीज, दवाई, उन्नत मशीनें, कृषि यंत्र एवं दैनिक उपयोग की वस्तुओं आदि के लिए कारखानों व शहरों पर निर्भर रहते है। इस प्रकार गाँव और शहरों में पारस्परिक निर्भरता बनी हुई है । बच्चों आइए गाँव और शहरों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की एक सूची बनाएँ-

गाँवों में उत्पादित/तैयार वस्तुएँ	शहरों में उत्पादित/तैयार वस्तुएँ
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.
6.	6.

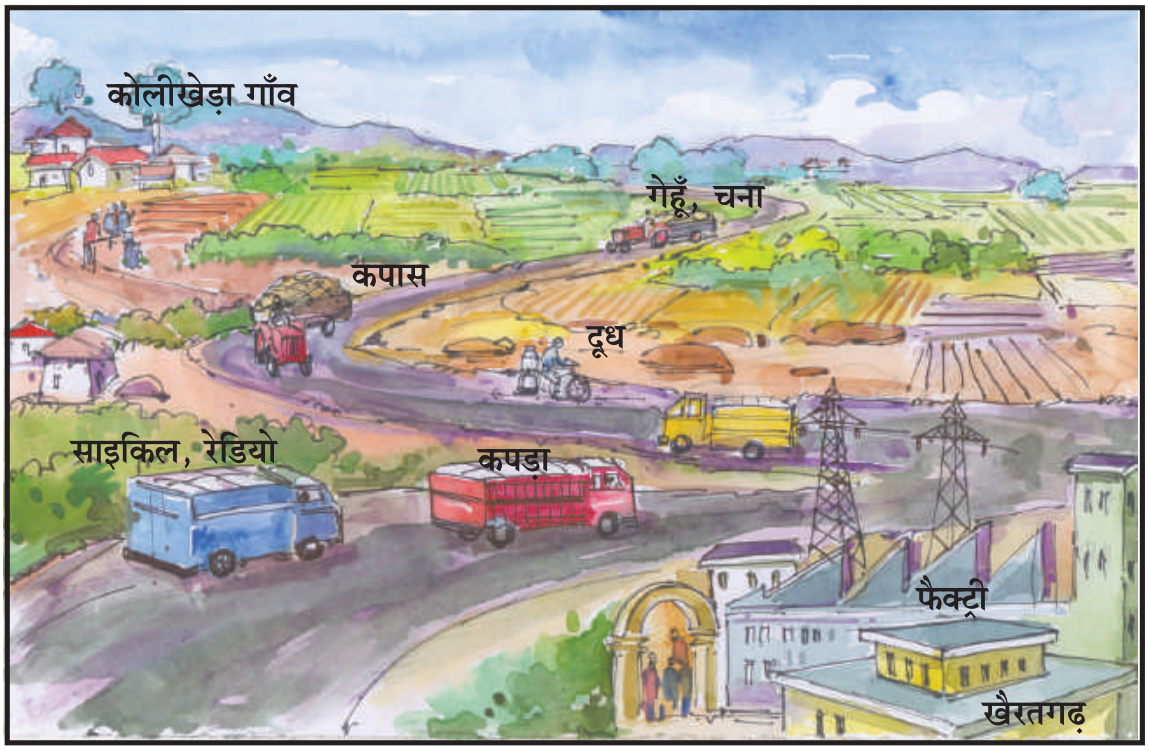

गाँव-शहर के मध्य परस्स्पर निर्भरता

उपरोक्त चित्र को ध्यान से देखो और अपने साथियों से चर्चा करो कि कोलीखेड़ा गाँव से कौन-कौन सी वस्तुएँ खैरतगढ़ जाती हैं तथा कौन-कौन सी वस्तुएँ खैरतगढ़ से कोलीखेड़ा जाती हैं।

शिक्षण संकेत : बच्चों से उपरोक्त चित्र पर बातचीत कराएँ तथा उनसे जानकारी एकत्र कराएँ कि उनके गाँव/शहर में ऐसी कौन सी वस्तुएँ हैं जो बाहर भेजी जाती हैं।

एक क्षेत्र की दूसरे क्षेत्र पर निर्भरता-

आपने देखा कि गाँव से बहुत सी वस्तुएँ शहर के लिए जाती हैं और शहर से बहुत सी वस्तुएँ गाँव में पहुँचती हैं। इसके अलावा कई दूसरी चीजें अलग-अलग क्षेत्रों से शहर में पहुँचती है और वहाँ से दूसरे गाँव तक ले जाई जाती हैं। इस तरह एक क्षेत्र बहुत दूर-दूर के अन्य क्षेत्रों से जुड़ जाता है।

एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र पर निर्भर है। इस बात को आप अपने गाँव या शहर के अनुभव से जान सकते हैं। किसी एक क्षेत्र में सभी प्रकार की चीजें उपलब्ध नहीं होतीं। जैसे एक क्षेत्र में सभी प्रकार की फसलें नहीं उगाई जा सकतीं। इसी तरह अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग वस्तुएँ बनाई जाती हैं। जैसे साबुन कहीं बनता है तो खाद कहीं और बनती है। इसलिए एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चीजों को मंगवाना जरूरी हो जाता है। इस प्रकार एक क्षेत्र दूसरे पर निर्भर हो जाता है। इसी प्रकार दो अलग-अलग क्षेत्रों में बसे शहरों के बीच भी परस्पर निर्भरता पाई जाती है।

दो देशों के मध्य निर्भरता -

इसी प्रकार किसी एक देश में सभी आवश्यकता की चीजें उपलब्ध नहीं होती या कम मात्रा में होती हैं, इसलिए उन्हें दूसरे देशों से मंगाना पड़ता है। हम अपने देश का ही उदाहरण लें तो यहां पेट्रोलियम पदार्थ (पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल), सेना के उपयोग के लिए आधुनिक उपकरण, हथियार आदि दूसरे देशों से मंगाए जाते हैं। हमारे देश से मसाले, चाय, सीमेंट, तैयार कपड़े आदि दूसरे देशों को भेजे जाते हैं।

हमारा देश किन-किन चीजों में आत्मनिर्भर है तथा किन-किन चीजों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है, इनकी सूची बनाएँ।

नागरिक जीवन में परस्पर निर्भरता-

हम सब भारत के निवासी हैं। भारत में जन्म लेने एवं यहाँ के निवासी होने के कारण हम सब भारत के नागरिक हैं। आप अपने परिवार के साथ रहते हैं, आपके माता-पिता भी साथ रहते हैं, आपके भाई-बहन, दादा-दादी भी आपके साथ रहते होंगे। आपके परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। आपके घर के आसपास और भी परिवार रहते हैं। वे भी कई प्रकार से आपकी सहायता करते होंगे, आप भी उनकी सहायता करते होंगे। विद्यालय में भी प्रधानाध्यापक, शिक्षक, भृत्य, मॉनीटर आदि सभी विद्यालय चलाने में मदद करते हैं। हम अपने परिवार, पड़ोस, विद्यालय, कस्बों, गाँवों में अनेक प्रकार के कार्य करते हैं। हम सब एक साथ मिलकर रहते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं, इससे हमारा सामाजिक जीवन बेहतर व सुविधाजनक बनता है।

नागरिक जीवन आपसी सहयोग पर निर्भर करता है। परिवार, विद्यालय, पड़ोस आदि में इस तरह के आपसी सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। आपके विद्यालय के भी कुछ नियम होंगे जिनका पालन करना प्रत्येक छात्र तथा शिक्षक के लिए जरूरी है। जो काम हमें नियमपूर्वक करने होते हैं, हम उन्हें कर्तव्य भी कह सकते हैं। हमारा नागरिक जीवन परस्पर सहयोग और कर्तव्य पालन पर ही निर्भर है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) प्राचीन काल में मनुष्य की आवश्यकताएँ कैसी थीं?

(ब) मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ क्या हैं?

(स) अनाज, सब्जी व फल कहाँ उत्पादित होते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) पारस्परिक निर्भरता किसे कहते हैं? बताइए।

(ब) पारस्परिक निर्भरता की आवश्यकता क्यों पड़ती है? दो देशों के मध्य पारस्परिक निर्भरता को उदाहरण देकर समझाइए।

(स) नागरिक जीवन में परस्पर निर्भरता का क्या महत्व हैं?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(अ) हमारा नागरिक जीवन परस्पर ..... और ..... पर निर्भर करता है।

(ब) एक क्षेत्र में सभी तरह की ..... नहीं उगाई जातीं।

प्रोजेक्ट कार्य-

- रेल, डाक, तार, बिजली, टेलीफोन आदि सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें कि हमारी इन पर क्या निर्भरता है?

❖❖❖❖

पाठ 5

सौरमण्डल में हमारी पृथ्वी

आइए सीखें

- सौरमण्डल से क्या आशय है?
- आकाशीय पिण्ड एवं आकाश गंगा क्या है?
- सौरमण्डल के विभिन्न सदस्य एवं उनकी क्या स्थिति हैं?
- सौरमण्डल को रेखाचित्र के द्वारा प्रदर्शित करना।
- क्या सूर्य एक तारा है।
- ग्रहों एवं तारों के मध्य क्या अंतर है?
- ग्रहों एवं उपग्रहों के मध्य क्या अंतर है?
- पृथ्वी एक जीवित ग्रह क्यों है?

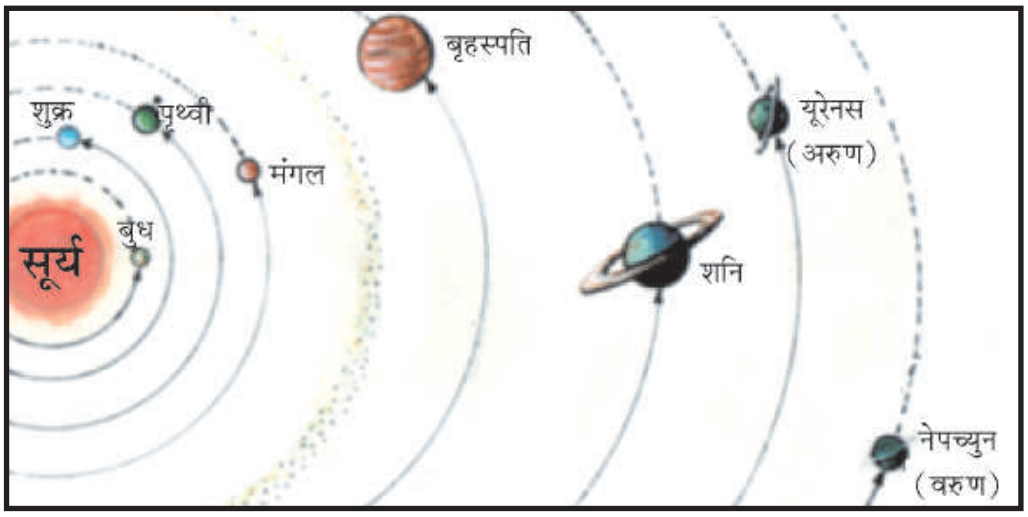

सौरमण्डल

उपर्युक्त चित्र में कुछ आकाशीय पिण्ड दर्शाए गए हैं चित्र का ध्यान से अवलोकन कर सभी आकाशीय पिण्डों के नाम अपनी कापी में लिखिए।

शिक्षण संकेत : बच्चों से पूछें कि हमें दिन-रात में आकाश में क्या-क्या दिखाई देता है। बच्चों के उत्तरों को आधार बनाते हुए बताएँ कि सूर्य, चन्द्रमा, तारे सभी आकाशीय पिण्ड हैं। सभी ग्रह, उपग्रह भी आकाशीय पिण्ड हैं।

सौरमण्डल

सूर्य सहित उसके समस्त आकाशीय पिण्डों के समूह को सौरमण्डल कहते हैं। जैसा आपने सौरमण्डल के चित्र में देखा है। सौर परिवार में सूर्य के अलावा ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रह, धूमकेतू, उल्काएं तथा धूल कण सम्मिलित हैं। इस प्रकार सूर्य का अपना बहुत बड़ा परिवार है। सौरमण्डल के चित्र में सूर्य और अन्य ग्रहों के साथ हमारी पृथ्वी की स्थिति को दर्शाया गया है। आइए सौरमण्डल के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करें —

सूर्य- यह सौरमण्डल का मुखिया है। यह सौरमण्डल के केंद्र में स्थित है। सभी सदस्य ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रह, उल्काएं और धूमकेतु उसकी परिक्रमा करते हैं। सभी सदस्य सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं और ऊर्जा प्राप्त करते हैं। सौरमण्डल के समस्त पदार्थों का लगभग 99 प्रतिशत भाग सूर्य में निहित है। सूर्य का आकार ही इतना बड़ा है कि ये सब ग्रह मिल कर उसका केवल एक प्रतिशत भाग ढँक पाएंगे।

इतनी विशालता के कारण ही सूर्य में अपार गुरुत्वाकर्षण शक्ति है जिसके कारण सभी ग्रह और उपग्रह निरन्तर उसकी परिक्रमा करते रहते हैं। सूर्य धधकता हुआ एक विशाल महापिण्ड है। यह प्रकाश एवं ऊर्जा का भण्डार है। हमारी पृथ्वी सूर्य से प्रकाश और ऊर्जा प्राप्त करती है। सूर्य के प्रकाश के कारण ही पृथ्वी पर दिन होता है।

सूर्य से पृथ्वी की औसत दूरी 15 करोड़ किलोमीटर है। पृथ्वी तक सूर्य की किरणें 8 मिनिट 19 सेकंड में पहुँचती है।

सूर्य में इतनी विशाल ऊर्जा व प्रकाश कैसे उत्पन्न होता है? वास्तव में सूर्य एक विशालकाय परमाणु भट्टी की तरह प्रज्ज्वलित है। वैज्ञानिकों ने अध्ययन कर पता लगाया है कि सूर्य कई ज्वलनशील गैसों का जलता हुआ पिंड है जिसमें हाईड्रोजन, हीलियम आदि अनेक गैसें निरंतर जल कर व क्रिया करके ताप एवं प्रकाश करोड़ों वर्षों से उत्पन्न करती आ रही है।

हाइड्रोजन एवं हीलियम दो ज्वलनशील गैसें हैं जो सूर्य के ताप को बढ़ाती है। अनुमान है कि सूर्य की सतह का तापमान 6000 सेल्सियस तथा केंद्रीय भाग का तापमान 1.5 करोड़ सेल्सियस है।

ग्रह- ऐसे आकाशीय पिण्ड जो अपनी-अपनी कक्षाओं में सूर्य की परिक्रमा करते हैं, **ग्रह** कहलाते हैं। प्रत्येक ग्रह की परिक्रमा की अवधि अलग-अलग होती है। जो ग्रह सूर्य से जितना दूर होगा। उसकी कक्षा उतनी ही बड़ी होगी तथा उसकी परिक्रमा की अवधि भी उतनी ही अधिक होगी। सूर्य की परिक्रमा के साथ-साथ सभी ग्रह अपने अक्ष पर भी घूर्णन करते हैं। **सभी ग्रह सूर्य से प्रकाश एवं ऊर्जा प्राप्त करते हैं।** हमारे सौरमण्डल में ग्रहों की संख्या 8 है। सूर्य से दूरी के क्रम के अनुसार उनके नाम हैं- बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण (यूरेनस/हर्षल)

शिक्षण संकेत : सूर्य के चारों ओर अन्य ग्रह किस प्रकार अपने स्थान पर घूमते हुए चक्कर लगाते हैं इस हेतु कक्षा में गतिविधि कराएँ।

और वरुण (नेपच्यून) है। आकार में सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति और सबसे छोटा बुध है। इसी प्रकार सूर्य के सबसे निकट का ग्रह बुध तथा सबसे दूर वरुण है। तालिका में प्रत्येक ग्रह की दी गई जानकारी को ध्यान से देखिये और उनकी विशेषताओं को जानिए —

तालिका-सौरमण्डल

क्र.	पिंड का नाम	ग्रह/तारा/ उपग्रह	भौतिक स्थिति	सूर्य से स्थिति	सूर्य की परिक्रमा में लगने वाला समय	ग्रहों पर जीवन से संबंधित वैज्ञानिक सोच
1.	सूर्य (सन)	तारा	ज्वलनशील गैस हाइड्रोजन/हीलियम आदि का जलता हुआ पिंड	स्वयं मुखिया है	—	—
2.	बुध (मरकरी)	ग्रह	इसे आकाश में सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के पश्चात देखा जा सकता है।	सूर्य के सबसे निकट वाला ग्रह है।	यह 88 दिनों में सूर्य की परिक्रमा पूरी कर लेता है	अत्यधिक गर्म होने से इस पर जीवन की कोई संभावना नहीं है
3.	शुक्र (वीनस)	ग्रह	आकाश में सबसे ज्यादा चमकदार ग्रह है।	यह लगभग पृथ्वी के बराबर है। सौर-मंडल का दूसरे नंबर का सदस्य है	सूर्य की परिक्रमा 225 दिनों में पूरी करता है। इसका कोई उपग्रह नहीं है	अत्यधिक गर्म होने से इस पर जीवन की कोई संभावना नहीं है
4.	पृथ्वी (अर्थ)	ग्रह	यह नीले ग्रह के नाम से जाने जाना वाला अनूठा ग्रह है। इस पर जीवन के समस्त लक्षण पाये जाते हैं।	यह सौर परिवार का तीसरा सदस्य है	यह अपनी परिक्रमा 365 ¼ दिनों में पूरा करती है। इसका एकमात्र उपग्रह चंद्रमा है।	जीवन पाये जाने से इसे जीवंत ग्रह कहा जाता है।
5.	मंगल (मार्स)	ग्रह	यह लाल तांबे के रंग का ग्रह है।	यह सौर परिवार का चौथा सदस्य है।	यह सूर्य की परिक्रमा 687 दिनों में पूरी करता है।	जीवन की संभावना हेतु वैज्ञानिकों के प्रयास निरंतर जारी है।
6.	बृहस्पति (जूपिटर)	ग्रह	यह पीले रंग का है तथा सभी ग्रहों में आकृति में बड़ा है।	यह सौर परिवार का पांचवें नंबर का सदस्य है।	यह सूर्य की परिक्रमा लगभग 11 वर्ष 9 माह में पूरी करता है।	इस पर जीवन की कोई संभावना नहीं है।

7.	शनि (सैटर्न)	ग्रह	यह सौरमंडल में बृहस्पति के बाद दूसरा बड़ा ग्रह है यह सबसे सुन्दर दिखाई देने वाला वलयधारी ग्रह है।	यह सौर परिवार के छंठवे सदस्य के रूप में जाना जाता है।	यह लगभग 29 वर्ष 5 माह में अपनी परिक्रमा पूरी करता है।	यह अत्यधिक ठंडा होने के कारण इस पर जीवन की कोई संभावना नहीं।
8.	अरुण (यूरेनस)	ग्रह	यह शनि से कुछ छोटा ग्रह है। इसके आसपास भी वलय (चक्र) का पता चला है।	यह सौर परिवार का सांतवा सदस्य और सूर्य से अधिक दूरी पर है।	यह 84 वर्षों में अपनी परिक्रमा पूरी करता है।	यह भी अत्यंत ठंडा होने के कारण इस पर जीवन के कोई संकेत नहीं पाये गये।
9.	वरुण (नेपच्यून)	ग्रह	यह आकार में यूरेनस से छोटा ग्रह है। व सूर्य से अत्यधिक दूरी पर है।	यह सौर मंडल का आठवां सदस्य है।	इसे सूर्य की एक परिक्रमा में 164 वर्ष लगते हैं।	यह भी यूरेनस की भांति अत्यधिक ठंडा है और अंधकार से भरा है। इस पर जीवन की कोई संभावना नहीं है।
10.	चन्द्रमा (मून)	उपग्रह	यह पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है। यह आकार में पृथ्वी का 1/4 है। पृथ्वी से इसकी औसत दूरी 3 लाख 84 हजार कि.मी. है।	—	चन्द्रमा अपने कक्ष पर 27 दिन 7 घंटे में एक बार घूम जाता है।	वैज्ञानिक चन्द्रमा की सतह पर पहुँच चुके हैं। किन्तु पूर्ण जीवन की संभावना उन्हें प्राप्त नहीं हुई।

24 अगस्त 2006 को अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान परिषद द्वारा पारित प्रस्ताव अनुसार प्लूटो अब ग्रह के श्रेणी में नहीं आता है अत: उसे ग्रहों में नहीं गिना जाना है।

उपर्युक्त तालिका का अध्ययन कर लिखिए-

(अ) 1. सौर परिवार का मुखिया ..... है।
2. ग्रह जिस पर पूर्ण जीवन है .....।
3. सूर्य के सबसे निकट वाला ग्रह ..... है।
4. पीले रंग का सबसे बड़ा ग्रह ..... है।
5. पृथ्वी ग्रह का उपग्रह ..... है।

(ब) नीचे दी गई सारिणी में उपयुक्त जानकारी भरें -

क्र.	ग्रहों की विशेषता	ग्रहों के नाम
1.	सबसे गर्म ग्रह	बुध
2.	सबसे ठंडा ग्रह	----------
3.	सूर्य के सबसे निकट वाला ग्रह	----------
4.	सूर्य से सबसे अधिक दूरी वाला ग्रह	----------
5.	ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा में सबसे अधिक समय लेता है।	----------
6.	ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा में सबसे कम समय लेता है	----------

- **ग्रह-** निश्चित कक्षाओं पर सूर्य की परिक्रमा करने वाले आकाशीय पिण्डों को ग्रह कहते हैं।
- **कक्षा-** आकाश में जिस मार्ग से ग्रह सूर्य की तथा **उपग्रह ग्रह की परिक्रमा** करते हैं उसे ग्रह पथ या **'कक्षा'** कहते हैं।
- **घूर्णन-** ग्रहों का अपनी धुरी या अक्ष पर घूमना **'घूर्णन'** कहलाता है।
- **अक्ष-** ग्रहों के दोनों ध्रुवों को अपने केंद्र से एक सीध में मिलाने वाली काल्पनिक रेखा को **'अक्ष'** कहते हैं।

सूर्य का व्यास चन्द्रमा के व्यास से 400 गुना अधिक बड़ा है किन्तु चन्द्रमा की तुलना में पृथ्वी से सूर्य 400 गुना अधिक दूर है। इसीलिए दोनों का आकार आकाश में समान दिखाई देता है। वास्तविकता यह है कि आकाश में छोटे-छोटे पिण्ड निकट होने से आकार में बड़े दिखाई देते हैं जबकि बड़े-बड़े पिण्ड दूर होने के कारण आकार में छोटे दिखाई देते हैं।

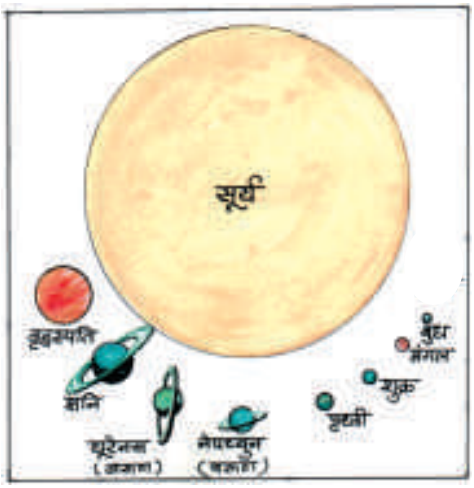

सूर्य की तुलना में ग्रहों का आकार

उपग्रह- ऐसे आकाशीय पिण्ड जो ग्रहों की परिक्रमा करते हैं। 'उपग्रह' कहलाते हैं। उपग्रह भी सूर्य से प्रकाश और ऊष्मा प्राप्त करते हैं। बुध और शुक्र को छोड़ सभी ग्रहों के अपने-अपने उपग्रह है। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह

शिक्षण संकेत : अपने परिवेश में दूर और पास में स्थित चीजों का अवलोकन कराकर बताएँ कि दूर की चीजें हमें छोटी दिखाई देती हैं और वही चीज पास में बड़ी दिखती है।

है। प्राकृतिक उपग्रह के अतिरिक्त कुछ उपग्रह ऐसे भी हैं जो मानव द्वारा बनाये गये हैं। उन्हें कृत्रिम उपग्रह कहते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा कुछ कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़े गये हैं। उनमें सबसे पहला उपग्रह आर्यभट्ट, भास्कर, रोहणी, एप्पल आदि महत्वपूर्ण उपग्रह हैं। इनके सूचना तंत्र का उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, दूरदर्शन प्रसारण, रेडियो प्रसारण, संचार व्यवस्था, कृषि को उन्नत बनाने हेतु जानकारी का प्रसारण, खनिज संबंधी जानकारी प्रसारण आदि में किया जाता है।

क्षुद्र ग्रह- सौरमण्डल के चित्र में देखिये मंगल और बृहस्पति के बीच छोटे-बड़े असंख्य पिण्डों की पट्टी फैली हुई है। इन्हें क्षुद्र ग्रह कहते हैं। ये ठोस पिण्ड विभिन्न आकारों के होते हैं।

उल्काएं- कभी-कभी रात में तारों के बीच अचानक क्षण-भर के लिए तेज चमकदार लकीर सी दिखाई देती हैं जिन्हें बोल-चाल की भाषा में तारों का टूटना कहते हैं। वास्तव में ये ऐसे छोटे-छोटे भटकते हुए उल्का पिण्ड हैं जो कभी-कभी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में आकर वायुमण्डल के घर्षण से जल उठते हैं।

धूमकेतु- इन्हें पुच्छल तारे भी कहते हैं। धूमकेतु सिर और लंबी पूँछ वाले ऐसे आकाशीय पिण्ड है, जिनका दिखने का समय और दिशा अनिश्चित होती है। परिक्रमा करते हुए जब ये सूर्य के निकट से गुजरते हैं तो हमें दिखाई देते हैं। हेली नामक धूमकेतु हमारा परिचित धूमकेतु है जो नियमित रूप से प्रति 76 वर्ष में दिखाई देता है।

- **उपग्रह-** वे आकाशीय पिण्ड जो अपने ग्रहों की परिक्रमा करने के साथ सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं, उपग्रह कहलाते हैं।
- **क्षुद्रग्रह-** मंगल और बृहस्पति ग्रहों के बीच संकरी पट्टी में छितराए हुये छोटे-छोटे आकाशीय पिण्डों को क्षुद्रग्रह कहते हैं।
- **चन्द्रमा-** हमारी पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा है।
- **धूमकेतु-** ऐसे प्रकाशमान आकाशीय पिण्ड जिनके सिर और लंबी पूंछ होती है तथा वे सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं, पुच्छल तारे या धूमकेतु कहलाते हैं।
- **कृत्रिम उपग्रह-** मनुष्य द्वारा निर्मित छोटे और अस्थाई उपग्रह।

पृथ्वी-अनोखा जीवित ग्रह

हमारी पृथ्वी सौरमण्डल का एक महत्वपूर्ण सदस्य है। यह सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 5 घंटे और 48 मिनिट 46 सेंकड में पूरी करती है जो इसका एक **सौर वर्ष** कहलाता है। प्राचीन काल में अधिकांश लोगों की यह धारणा थी कि पृथ्वी का धरातल चपटा और वृत्ताकार है। सर्वप्रथम **'पाइथागोरस'** और **'अरस्तु'** ने यह बताया कि पृथ्वी गोलाकार है और आकाश में स्वतंत्र रूप से घूम रही है। भारतीय विद्वान **आर्य भट्ट** और **वराहमिहिर** ने भी पृथ्वी को गोलाकार बताया। आर्यभट्ट ने तो यहां तक लिखा कि पृथ्वी आकाश में अपने अक्ष पर घूमती

है। गतिमान पृथ्वी से नक्षत्र- तारे भी उल्टी दिशा में जाते हुए दिखाई देते हैं।

आकार में हमारी पृथ्वी सौरमण्डल का पांचवा सबसे बड़ा ग्रह है। बुध, शुक्र और मंगल इससे छोटे तथा अरुण, वरुण, शनि और बृहस्पति इससे बड़े ग्रह है।

सही-सही माप के बाद पता चला कि पृथ्वी एकदम गोल नहीं बल्कि ध्रुवों पर कुछ चपटी है। अंतरिक्ष से देखने पर हमारी पृथ्वी का आकार गोल दिखाई देता है।

चन्द्रमा से लिया गया पृथ्वी का चित्र

- पृथ्वी सौरमण्डल का पांचवा सबसे बड़ा ग्रह है।
- सूर्य से दूरी के क्रम बुध तथा शुक्र के बाद पृथ्वी का स्थान तीसरा है।
- सूर्य की परिक्रमा की अवधि- 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट 46 सेकंड है।
- पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूर्णन का समय-23 घंटे 56 मिनिट 4 सेकंड।

जीवित ग्रह- अभी तक हुई खोजों के अनुसार सौरमण्डल ही नहीं बल्कि पूरे ब्रह्मांड में केवल हमारी पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है इसीलिए इसे जीवित ग्रह कहते हैं। आइए जाने वे कौन-कौन से कारण हैं जिनके कारण केवल पृथ्वी पर ही जीवन का विकास संभव हुआ है:-

(i) **सूर्य से पृथ्वी की दूरी-** सौरमण्डल में केवल पृथ्वी की ही ऐसी स्थिति है जो न तो सूर्य के अधिक पास है न अधिक दूर। इसलिए यह न अत्यधिक गर्म है न अत्यधिक ठंडी। इसका औसत तापमान 15° सेल्सियस रहता है। इसमें थोड़ी-सी घट-बढ़ होती रहती है जिससे यहां जल ठोस, तरल और गैसीय अवस्था में मिलता है। यहाँ जल की उपलब्धता से जीवन का विकास हुआ है।

(ii) **ऑक्सीजन गैस की उपलब्धता-** यहां जीवनदायिनी गैस आक्सीजन पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है जो किसी भी प्रकार के जीवन के लिए आवश्यक है। आक्सीजन के अलावा यहां नाइट्रोजन और कार्बन डाईआक्साइड भी पर्याप्त मात्रा में वायुमंडल में विद्यमान है।

(iii) **जीवनरक्षक गैस ओजोन-** वायुमण्डल में स्थित ओजोन गैस की परत सूर्य की पराबैंगनी जैसी घातक किरणों से हमारी रक्षा करती है। ओजोन परत नहीं होती तो सारे जीव और वनस्पति नष्ट हो जाते।

(iv) **पृथ्वी पर तीन परिमण्डलों का होना-** पृथ्वी पर वायुमण्डल, जलमंडल और स्थलमंडल का विस्तार है। तीनों का आपस में उचित सन्तुलन बना हुआ है। तीनों परिमण्डल के बारे में अधिक जानकारी आगे के अध्याय में दी गई है।

इनके अलावा पृथ्वी पर 12-12 घंटे वाली दिन-रात की आदर्श अवधि भी यहाँ जीवन के विकास में अनुकूल दशाएं प्रस्तुत करती है।

इन्हीं कारणों से हमारी पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु एवं वनस्पतियाँ पाई जाती हैं इसलिए पृथ्वी को एक जीवित ग्रह कहा गया है।

चन्द्रमा - चन्द्रमा हमारी पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है। रात में आसमान पर दिखने वाले समस्त आकाशीय पिण्डों में चन्द्रमा सबसे बड़ा नजर आता है। क्योंकि अन्य पिण्डों की तुलना में वह पृथ्वी के अधिक निकट है। अपने अक्ष पर चन्द्रमा लगभग 27 दिन 7 घंटे में एक बार घूम जाता है। और इतने ही दिनों में पृथ्वी की एक परिक्रमा भी पूरी कर लेता है। यह पहला आकाशीय पिण्ड है जिसके धरातल पर मनुष्य के चरण पड़े।

हम प्रतिदिन चन्द्रमा के प्रकाशित भाग को घटता-बढ़ता देखते है। जिन 15 दिन की अवधि में यह घटता है उसे **'कृष्ण पक्ष'** और दूसरी 15 दिन की अवधि में यह क्रमशः बढ़ता है उसे **'शुक्ल पक्ष'** कहते हैं। जिस रात यह पूरा दिखाई देता है उसे **पूर्णिमा** कहते हैं तथा जिस दिन इसका प्रकाशित भाग बिल्कुल दिखाई नहीं देता उसे **अमावस्या** कहते हैं। पृथ्वी से चन्द्रमा की औसत दूरी 3 लाख 84 हजार किलोमीटर है। यह पृथ्वी से चार गुना छोटा है। यह सूर्य से प्रकाशित होता है।

तारे- बादल रहित रात में हमें असंख्य तारे आसमान में झिलमिलाते हुई दिखाई देते हैं। सौर मण्डल से बहुत दूर ऐसे आकाशीय पिण्ड जिनका अपना प्रकाश और ऊर्जा होती है, **तारे** कहलाते हैं। इनकी दूरिया प्रकाश वर्षों में मापी जाती है।

प्रकाश वर्ष- प्रकाश वर्ष वह दूरी है जिसे प्रकाश तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकण्ड के वेग से एक वर्ष में तय करता है। हमारा निकटतम तारा प्रोक्सिमा सेन्चुरी हमसे $4^{1/3}$ प्रकाश वर्ष दूर है।

सूर्य भी एक तारा है जिसका अपना प्रकाश और अपनी ऊर्जा है। आकाश के कुछ तारे तो हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़े हैं। लेकिन सूर्य की तुलना में वे इतने अधिक दूर है कि केवल टिमटिमाते हुए दिखते हैं।

तारे व ग्रह में अंतर - तारे स्वयं प्रकाशवान होते हैं जबकि ग्रहों का स्वयं का प्रकाश नहीं होता है। तारों की चमक स्थिर नहीं होती है, कम ज्यादा होती रहती है जबकि ग्रहों की चमक एक जैसी रहती है, तारे स्थिर होते हैं, जबकि ग्रह आकाश में अपना स्थान परिवर्तित करते रहते हैं।

आकाश गंगा- स्वच्छ रात्रि में तारों के बीच बादलों जैसी एक दूधिया पट्टी दिखाई देती है। वास्तव में वह बादल नहीं अपितु असंख्य तारों के समूह हैं। जिसे **आकाश गंगा** कहते हैं। उसमें हमारे सूर्य जैसे अरबों तारे हैं। हमारा सूर्य आकाश गंगा के एक छोर पर स्थित है।

ब्रह्माण्ड- सारे पदार्थों और सारी आकाश गंगाओं और सारी ऊर्जा जिस अन्तहीन आकाश में व्याप्त है उसे **ब्रह्माण्ड** कहते हैं। इस प्रकार ब्रह्माण्ड अनन्त है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) सूर्य में ऊर्जा कैसे पैदा होती है।

(ब) पृथ्वी के तीन परिमण्डल कौन-कौन से हैं?

(स) सूर्य के महत्व को समझाइए?

(द) सौरमण्डल के ग्रहों के नाम लिखिए?

(य) ग्रह एवं तारे में क्या अंतर है लिखिए?

(र) कौन सी गैस हमारी जीवन रक्षक है?

(ल) पृथ्वी पर पाई जाने वाली तीन महत्वपूर्ण गैसों के नाम लिखिये? इनमें जीवन दायिनी गैस कौन सी है।

(व) ग्रह एवं उपग्रह में अंतर बताइए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) सौरमण्डल किसे कहते हैं? सौरमण्डल के ग्रहों को चित्र सहित नामांकित कीजिए।

(ब) पृथ्वी एक अनोखा व जीवित ग्रह कैसे है समझाइएँ?

(स) प्राकृतिक व कृत्रिम उपग्रह किसे कहते हैं तथा पृथ्वी के प्राकृतिक उपग्रह का वर्णन कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य का एक-एक पारिभाषिक शब्द बताइए-

(अ) सारे पदार्थों, सारी आकाशगंगाओं, सारी ऊर्जा तथा अन्तरिक्ष का अन्तहीन समूह।

(ब) वह दूरी जिसे प्रकाश तीन लाख कि.मी. प्रति सेकेण्ड के वेग से एक वर्ष में तय करता है।

(स) तारों भरे आकाश में बादलों जैसी दूधिया पट्टी।

(द) मंगल और बृहस्पति के बीच सौरमण्डल में छोटे-छोटे असंख्य पिण्डों की पट्टी।

4. सही जोड़ी बनाइए-

अ.	ब.
(अ) तारा	बुध
(ब) सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह	चन्द्रमा
(स) पृथ्वी का सबसे निकटतम आकाशीय पिण्ड	वरुण
(द) सबसे दूर का ग्रह	प्रोक्सिमा सेन्चुरी
(य) सूर्य के सबसे निकट का ग्रह	बृहस्पति

प्रोजेक्ट कार्य

- सौरमंडल का बड़ा चित्र बनाइए। प्रत्येक ग्रह के नाम लिखिए।

❖❖❖❖

पाठ 6

ग्लोब और मानचित्र

आइए सीखें

- पृथ्वी के प्रतिरूप के रूप में ग्लोब को।
- भूगोल में ग्लोब के महत्व को।
- ग्लोब के उपयोग को।
- मानचित्र की आवश्यकता व महत्व।
- मानचित्र को पढ़ना।

ब्रह्माण्ड में हमारी पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन है क्योंकि पृथ्वी पर जल और वायु दोनों विद्यमान है। क्या आप जानते हो कि पृथ्वी का आकार कैसा है? पृथ्वी को यदि हम सामान्य रूप से देखें तो इसे दूर-दूर तक सपाट रूप में ही देख पाते हैं। पृथ्वी बहुत विशाल है। इसलिए इतनी बड़ी पृथ्वी को हम पृथ्वी से ही एक साथ नहीं देख पाते हैं। लेकिन यदि अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखें, तो पृथ्वी की आकृति या आकार गोलाकार है।

'ग्लोब' पृथ्वी का एक नमूना अर्थात पृथ्वी जैसी आकृति का एक मॉडल है, जो पृथ्वी की आकृति का सही-सही प्रतिनिधित्व करता है। ग्लोब की सहायता से हम ठीक तरह से जान पाते हैं कि पृथ्वी की आकृति गोलाकार है।

ग्लोब

भूगोल में ग्लोब का बहुत महत्व है क्योंकि इसकी मदद से ही हम पृथ्वी के आकार, उसके झुकाव, उसकी गति को समझ पाते हैं और उससे जुड़ी घटनाओं को समझने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही हम पृथ्वी पर जल और थल के वितरण अर्थात महासागरों और महाद्वीपों के विस्तार व पृथ्वी पर उनकी स्थिति को देख व समझ पाते हैं।

अपनी शाला में शिक्षक से ग्लोब प्राप्त कर, शिक्षक की सहायता से उसका निम्नांकित उपयोग जानिए :-

ग्लोब का उपयोग : ग्लोब को ध्यान से देखते हुए हम निम्न बातें जान सकते हैं-

- पृथ्वी का आकार गोलाकार है।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर सीधी नहीं है बल्कि कुछ झुकी ($23\frac{1}{2}^{\circ}$) हुई है।
- पृथ्वी ध्रुवों पर थोड़ी चपटी है।
- पृथ्वी का अपनी धुरी (कील) पर घूमना।
- ग्लोब पर खीचीं आड़ी व खड़ी रेखाओं की विशेषताएं।
- ग्लोब पर कई रंग दिखाई पड़ते हैं जिसमें नीला रंग सबसे ज्यादा दिखाई देता है। जो जल भाग को दर्शाता है।
- पृथ्वी पर महाद्वीप, महासागर, द्वीप, प्रमुख पर्वत, देशों इत्यादि की स्थिति को जान पाते हैं।
- पृथ्वी पर दिन-रात का होना ।

ग्लोब को देखते हुए महाद्वीप और महासागरों के नाम ढूंढकर नीचे बनी तालिका में लिखो-

क्र.	महाद्वीप	क्र.	महासागर
1.	_____	1.	_____
2.	_____	2.	_____
3.	_____	3.	_____
4.	_____	4.	_____
5.	_____		
6.	_____		
7.	_____		

- **ग्लोब :** ग्लोब पृथ्वी का एक नमूना है, जो पृथ्वी की आकृति का सही-सही प्रतिनिधित्व करता है।
- **महाद्वीप :** पृथ्वी के बड़े भू-भाग जिसमें कई देश होते हैं, उसे महाद्वीप कहते हैं। पृथ्वी पर 7 महाद्वीप है।
- **महासागर :** पृथ्वी पर फैले विशाल जल भाग को महासागर कहते हैं। पृथ्वी पर प्रमुख 4 महासागर है।

शिक्षण संकेत : पृथ्वी पर सात महाद्वीप है- 1. उत्तरी अमेरिका 2. दक्षिणी अमेरिका, 3. एशिया 4. यूरोप 5. अफ्रीका 6. आस्ट्रेलिया 7. अन्टार्कटिका। पृथ्वी पर प्रमुख चार महासागर है- 1. प्रशांत महासागर, 2. अटलांटिक महासागर, 3. हिंद महासागर, 4. आर्कटिक महासागर।

मानचित्र की आवश्यकता

जब तक हम पूरी पृथ्वी की बात करते हैं तब तक ग्लोब हमारे लिए बहुत उपयोगी होता है। लेकिन ग्लोब के उपयोग की कुछ सीमाएं भी हैं। जब हम पृथ्वी के किसी स्थान विशेष या छोटे भाग का अध्ययन करना चाहे जैसे देश, जिले, शहर या गांव की जानकारी प्राप्त करना चाहें तब हमें मानचित्र की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि मानचित्र की सहायता से हम किसी भी भू-भाग का भलीभांति पठन-पाठन कर सकते हैं। इस प्रकार- **गोलाकार पृथ्वी अथवा उसके किसी भू-भाग का मापन के अनुसार समतल सतह पर चित्रण मानचित्र कहलाता है।**

मानचित्र शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'मेप्पा' (Mappa) से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ है मेजपोश या रूमाल। मध्यकाल में संसार का चित्र कपड़े पर बनाये जाते थे। अंग्रेजी भाषा का 'मेप' शब्द लेटिन भाषा mappa का ही अपभ्रंश है। अंग्रेजी शब्द map को हिन्दी में मानचित्र कहते हैं।

इसी तरह संसार के विभिन्न छोटे-छोटे भागों के मानचित्र भी होते हैं। किसी गांव या शहर के एक छोटे हिस्से का भी मानचित्र होता है जैसे आप अपने गांव के मानचित्र को पटवारी के पास देख सकते है।

मानचित्र को कैसे पढ़ें?

जिस तरह हम पुस्तक पढ़ते हैं। पुस्तकों को पढ़कर अनेक जानकारी प्राप्त करते हैं। ठीक उसी तरह मानचित्र को पढ़ा व समझा जाता है। मानचित्र मुख्यत: चार बिंदुओं के आधार पर पढ़ा व बनाया जा सकता है- शीर्षक, दिशा, **रूढ़िचिह्न** और मापक। मानचित्र इस प्रकार बनाया जाता है जैसे हम पृथ्वी या उसके उस

हिस्से को, जिसका मानचित्र बना रहे हैं, ऊपर से देख रहे हैं।

शीर्षक- प्रत्येक मानचित्र का एक **शीर्षक** होता है, जो यह बताता है कि मानचित्र विश्व या विश्व के किस भू-भाग का है। उपर्युक्त मानचित्र का शीर्षक 'भारत' है अर्थात यह भारत देश का मानचित्र हैं। सामान्यत: शीर्षक मानचित्र के दायीं ओर लिखा होता है।

दिशा : यह मानचित्र की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रत्येक मानचित्र में उत्तर दिशा को तीर के चिन्ह द्वारा दिखाया जाता है। दिशा के बिना मानचित्र पढ़ना मुश्किल होता है। परम्परा के अनुसार उत्तर दिशा मानचित्र के ऊपरी हाशिए की ओर इंगित होता है।

रूढ़चिह्न : मानचित्र में कई विषय वस्तुओं, बिंदुओं इत्यादि को कुछ पारम्परिक चिन्हों के द्वारा वर्षों से उपयोग में लाया जाता रहा है। इन चिन्हों को रूढ़ **चिह्न** कहते हैं। कुछ रूढ़चिन्हों को यहां बताया गया है जैसे-

मापक : धरातल की वास्तविक दूरी को कागज पर आनुपातिक रूप में छोटा या बड़ा, मापक की

	पक्की सड़क		पेड़
	कच्ची सड़क		बसाहट
	पगडन्डी		कुआँ
	रेल्वेलाइन बड़ी		उद्यान
	रेल्वेलाइन छोटी		अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
	नदी		राज्य की सीमा
	तालाब		जिले की सीमा
	मन्दिर		मस्जिद

सहायता से ही दर्शाया जाता है। उदाहरण के लिए धरातल की वास्तविक दूरी 1 कि.मी. को

शिक्षण संकेत : मानचित्र या एटलस दिखाकर मानचित्र के शीर्षक, दिशा, संकेत (रूढ़चिह्न) मापक की जानकारी दी जा सकती है। अलग-अलग मापक वाले मानचित्र से धरातल की वास्तविक दूरी और मानचित्र में दर्शाए दूरी के मध्य संबंध को बताएँ।

कागज में दर्शाना हो तो मान सकते हैं 1 से.मी. = 1 कि.मी.। हर मानचित्र में पैमाना (मापक) अलग हो सकता है। प्रत्येक मानचित्र में मापक शीर्षक के नीचे या फिर मानचित्र में नीचे की ओर लिखा होता है। इस प्रकार पैमाने के अनुसार मानचित्र में किन्हीं दो स्थानों की दूरी को मापक से मापकर उन्हीं दो स्थानों की धरातल पर वास्तविक दूरी को जान सकते हैं।

इसके अलावा मानचित्र में **रंगों का उपयोग** भी किया जाता है। जल भाग को नीले रंग से दर्शाया जाता है, पहाड़ी भाग को भूरे रंग से दर्शाया जाता है और मैदान को हरे रंग से दर्शाया जाता है, आदि।

उपर्युक्त मानचित्र को पढ़कर निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. मानचित्र का शीर्षक क्या है?

———————————————————

2. उत्तर दिशा किस चिह्न द्वारा दिखाई गयी है। चिह्न बनाइए।

———————————————————

3. मानचित्र में दिए रुढ़चिह्नों में से कोई 2 रूढ़चिह्न नाम सहित बनाइए।

1. .....

2 .....

4. मानचित्र का मापक क्या है?

———————————————————

मानचित्र- पृथ्वी व उसके किसी भू-भाग का मापक के अनुसार समतल सतह पर चित्रण मानचित्र कहलाता है।

मापक- मानचित्र के दो स्थानों की दूरी एवं धरातल पर उन्हीं दो स्थानों की वास्तविक दूरी के अनुपात को मापक कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) ग्लोब किसे कहते हैं?

(ब) ग्लोब से हमें क्या-क्या जानकारियां प्राप्त होती हैं? कोई 5 लिखिए।

(स) मापक किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) मानचित्र पढ़ने के लिए किन-किन बातों को जानना आवश्यक है, कोई दो बताइए।

(ब) मानचित्र क्यों बनाए जाते हैं? भूगोल में ग्लोब व मानचित्र का क्या महत्व है लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति निम्नलिखित में से सही शब्द चुनकर कीजिए-

(सात, चार, ग्लोब, मानचित्र, नीला)

(अ) किसी भू-भाग का मापक के अनुसार समतल सतह पर चित्रण ..... कहलाता है।

(ब) पृथ्वी के प्रतिरूप या नमूने को ..... कहते हैं।

(स) पृथ्वी पर ..... महाद्वीप व ..... महासागर है।

(द) ग्लोब पर ..... रंग सबसे अधिक दिखाई देता है।

4. सही जोड़ी मिलाओ-

	अ	ब
(अ)	मापक, दिशा, रूढ़चिह्न	महासागर
(ब)	पृथ्वी का आकार	महाद्वीप
(स)	प्रशांत	गोलाकार
(द)	एशिया	मानचित्र

5. निम्नलिखित सांकेतिक चिन्हों के कोष्टक में दिए सही नाम में से चुनकर रिक्त स्थान पर लिखिए- (जिला सीमा, राज्य सीमा, रेल्वे लाइन, पक्की सड़क, कुआं)

(अ) _____

(ब) _____

(स) 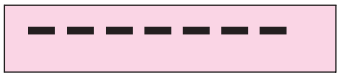 _____

(द) 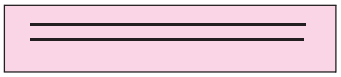 _____

(इ) 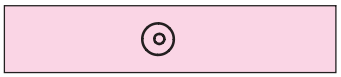 _____

6. किसी मानचित्र में मापक 1 से.मी. = 20 कि.मी. है। बताइये मानचित्र में 4 से.मी. धरातल के कितने किलोमीटर की दूरी को प्रदर्शित किया गया है।

7. ग्लोब का चित्र बनाइए और उस पर भूमध्य रेखा, कर्क रेखा तथा मकर रेखा दर्शाइए

प्रोजेक्ट कार्य

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र देखकर संसार के महाद्वीपों, महासागरों, सागरों, द्वीपों के नाम सूचीबद्ध कीजिए।
- ग्लोब की सहायता से उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थित प्रमुख अक्षांश रेखाओं के नाम लिखिए।

❖❖❖❖

पाठ 7

अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएं

आइए सीखें

- अक्षांश व देशान्तर रेखाएं क्या है, व उनकी विशेषताएँ कौन-कौन सी है?
- अक्षांश व देशान्तर रेखाओं की आवश्यकता और उपयोगिता क्या है?
- अक्षांश व देशान्तर रेखाओं की सहायता से पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति कैसे ज्ञात करते हैं?

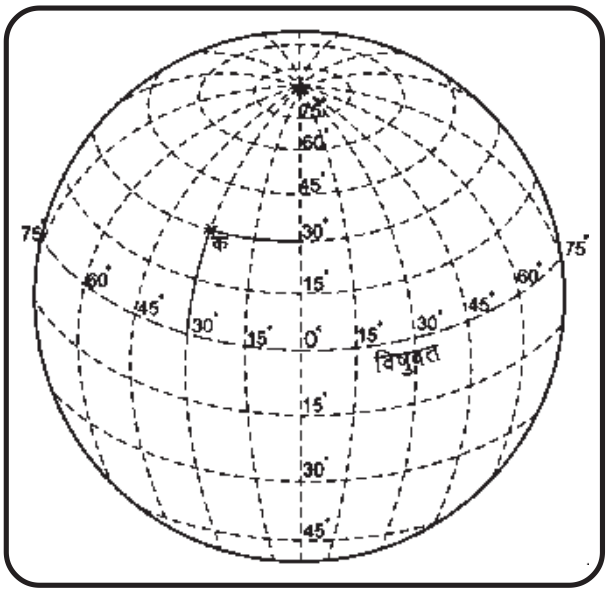

अक्षांश और देशान्तर रेखाओं का ग्रिड

ग्लोब और मानचित्र पर बहुत सी रेखाएं खिंची होती है। कुछ रेखाएं खड़ी होती है और कुछ आड़ी। ये रेखाएं एक-दूसरे को काटती भी है, और ग्लोब पर जाल सा बनाती है। वास्तव में ये रेखाएं काल्पनिक है। पृथ्वी पर ऐसी कोई रेखाएं खिचीं हुई नहीं हैं। **पृथ्वी पर किसी स्थान की ठीक-ठीक स्थिति दर्शाने के लिए ये रेखाएं ग्लोब एवं मानचित्र पर खींची गयी हैं। इन रेखाओं की मदद से हम किसी गांव, नगर, देश या किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति को आसानी से जान सकते हैं।** रेखाओं के इस जाल को समझने के लिए हमें ग्लोब पर दो बिन्दुओं को देखना होगा। एक बिन्दु ग्लोब के ठीक ऊपर की ओर होता है। जिसे हम **उत्तरी ध्रुव** कहते हैं और दूसरा एकदम नीचे की ओर होता है जिसे **दक्षिणी ध्रुव** कहते हैं। यदि हम ग्लोब को ध्यान से देखें तो हमें इन दोनों ध्रुवों के बीचों बीच एक वृत्त खींचा हुआ दिखाई देता है। जिसे **भूमध्य रेखा** या **विषुवत वृत्त** कहते हैं। यह वृत्त पृथ्वी को दो बराबर भागों में बांटता है। इस वृत्त के उत्तर वाले भाग को **उत्तरी गोलार्द्ध** एवं दक्षिण वाले भाग को **दक्षिणी गोलार्द्ध** कहते हैं।

अक्षांश रेखाएं- भूमध्य रेखा के समानान्तर खींचे हुए वृत्तों या आड़ी रेखाओं को अक्षांश वृत्त अथवा अक्षांश रेखाएं कहते हैं। भूमध्य रेखा के केंद्र बिन्दु से प्रत्येक अंश पर एक-एक वृत्त खींचे गये हैं व उनके सामने उ. एवं द. लिखा जाता है जिसका अर्थ क्रमश: उत्तरी एवं दक्षिणी अक्षांश होता है। इस तरह 90

शिक्षण संकेत : पाठ का शिक्षण ग्लोब तथा मानचित्र की सहायता से करें।

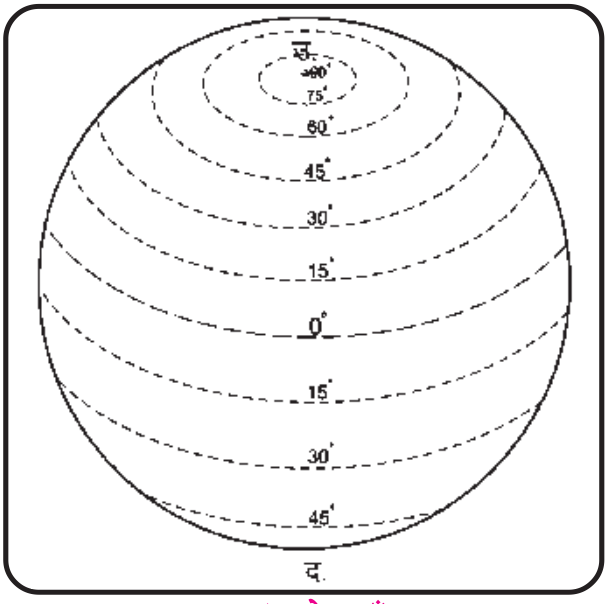

अक्षांश रेखाएँ

अक्षांश उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 अक्षांश दक्षिणी गोलार्द्ध में खींचे है। इस प्रकार कुल 180 अक्षांश वृत्त या रेखाएं ग्लोब पर खींची गयी है। ग्लोब पर खिंचे हुए सभी वृत्तों में विषुवत वृत्त या विषुवत रेखा सबसे बड़ा वृत्त है। इस वृत्त को 0° अक्षांश रेखा के नाम से जाना जाता है। उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तरी अक्षांश वृत्त को कर्क वृत्त या **कर्क रेखा** कहते है। यह वृत हमारे देश के गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम आदि राज्यों में होकर गुजरता है। इसी प्रकार दक्षिणी गोलार्द्ध में 23½° दक्षिणी आक्षंश वृत्त को मकर वृत या **मकर रेखा** कहते है।

- **पृथ्वी अपने अक्ष पर 23½° झुकी हुई है, इस कारण पृथ्वी पर 23½° उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश तक ही सूर्य वर्ष में एक बार सीधा चमकता है। इस अक्षांश से उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव तक सूर्य कभी भी सीधा नहीं चमकता। यही कारण है कि कर्क रेखा एवं मकर रेखा का निर्धारण 23½° पर किया गया है।**
- **भूमध्य रेखा के समानान्तर खीचें हुए वृत्तों या आड़ी रेखाओं को अक्षांश वृत्त या रेखाएँ कहते हैं। इनकी कुल संख्या 180 है।**

अक्षांश रेखाओं की विशेषताएं :

- ये रेखाएं पूर्व से पश्चिम दिशा में विषुवत रेखा के समानान्तर खींची जाती है।
- ये पूर्ण वृत्ताकार होती है।
- दो अक्षांशों के बीच की दूरी समान होती है।
- विषुवत वृत्त से ध्रुवों की ओर बढ़ने पर वृत्त छोटे होते जाते हैं। ध्रुव एक बिंदु के रूप में रह जाता है।
- अक्षांश रेखाओं की लंबाई समान नहीं होती है।
- भूमध्य रेखा के उत्तरी क्षेत्र को उत्तरी गोलार्द्ध व दक्षिणी क्षेत्र को दक्षिणी गोलार्द्ध कहते हैं।

शिक्षण संकेत- ग्लोब और मानचित्र को छोटे रूप में सरलता से दर्शाने के लिए अक्षांश रेखाओं को 10-10 या 15-15 के अन्तराल में प्रदर्शित किया जाता है। कर्क-मकर रेखा 23½° उत्तर तथा दक्षिण में ही क्यों खिंची गई है, बच्चों को बताएँ।

ग्लोब या विश्व मानचित्र की सहायता से पता करें, भारत के मध्य से कौनसी प्रमुख अक्षांश रेखा गुजरती है?

देशान्तर रेखाएं

किसी भी स्थान की सही स्थिति का पता लगाने के लिए हमें अक्षांश वृत्तों के अलावा कुछ खड़ी रेखाओं का भी सहारा लेना पड़ता है। ये रेखाएँ ग्लोब या मानचित्र पर उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव को जोड़ती हैं। उत्तर से दक्षिण खींची खड़ी रेखाओं को देशान्तर रेखा कहते हैं। ग्लोब पर ये रेखाएं उत्तर से दक्षिण की ओर अर्ध वृत्त होती है जबकि मानचित्रों में उत्तर से दक्षिण में सीधी खींची होती है।

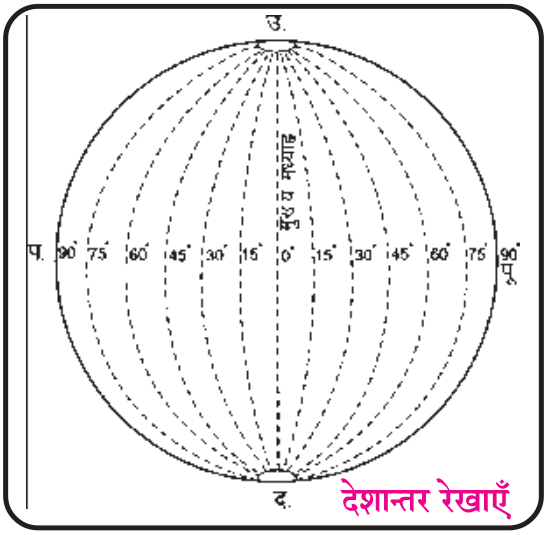

देशान्तर रेखाएँ

मुख्य अक्षांश रेखा (0° भूमध्य रेखा) की तरह ही देशान्तर रेखाओं में भी एक रेखा को प्रधान देशान्तर रेखा माना जाता है। यह रेखा इंग्लैंड में लंदन के पास स्थित ग्रीनविच वेधशाला से गुजरती है। इसे ही 0° प्रधान मध्यान्ह रेखा कहते हैं। अन्य देशान्तर रेखाएँ प्रधान मध्यान्ह रेखा के पूर्व और पश्चिम में खींची गई हैं। प्रधान मध्यान्ह रेखा पृथ्वी को पूर्वी व पश्चिमी गोलार्द्ध में बांटती है। प्रधान मध्यान्ह रेखा के दोनों ओर 1° के अंतराल पर खींची गई 180 देशांतर रेखाएँ हैं। किसी भी प्रकार के भ्रम से बचने के लिए पूर्वी गोलार्द्ध और पश्चिमी गोलार्द्ध की देशांतर रेखाओं के साथ क्रमश: 'पू.' तथा 'प.' शब्द लिखा जाता है। जिसका अर्थ क्रमश: पूर्वी तथा पश्चिमी होता है। क्या अब आप यह बता सकते हैं कि भारत किस गोलार्द्ध में हैं?

ग्लोब या विश्व के मानचित्र को देखें व पता करें कि भारत विषुवत रेखा से किस गोलार्द्ध में स्थित हैं? तथा प्रधान मध्यान्ह रेखा से किस गोलार्द्ध में स्थित है?

देशान्तर रेखाओं की विशेषताएं-

- देशान्तर रेखाएं अर्द्धवृत्त होती हैं।
- इनकी लंबाई समान होती हैं।
- विषुवत वृत्त पर इनके बीच की दूरी सबसे अधिक होती है, लेकिन जैसे-जैसे हम ध्रुवों की ओर जाते हैं तो देशान्तर रेखाओं के बीच की दूरी कम होती जाती हैं।
- ये रेखाएं प्रधान मध्यान्ह रेखा के दोनों ओर 1° के अंतराल पर खींची गई हैं। इनकी कुल संख्या 360 हैं।
- पृथ्वी पर किसी स्थान की ठीक-ठीक स्थिति दर्शाने के लिए अक्षांश और देशांतर रेखाएं, ग्लोब एवं मानचित्र पर खींची गयी है। इनकी सहायता से हम पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति को जान सकते हैं। ये काल्पनिक रेखाएं हैं।

गतिविधि

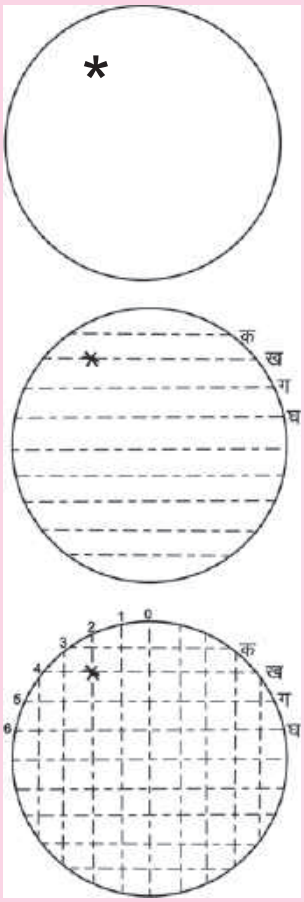

किसी स्थान की स्थिति ज्ञात करना

- एक गेंद लीजिए।
- गेंद में एक तारा बनाये
- बताइए 'तारा' गेंद के किस हिस्से में स्थित है?

  (इसका उत्तर देना कठिन होगा क्योंकि गेंद पर दिशा एवं स्थिति बताना मुश्किल है।)

  अब गेंद में कुछ आड़ी लकीर बनाए सभी रेखाओं को एक-एक नाम दें। जैसा चित्र में दिखाया गया है।
- अब बताइए 'तारा' 'ख' रेखा में कहां स्थित है। (पुनः एक समस्या आ सकती है क्योंकि 'ख' रेखा एक छोर से दूसरे छोर तक फैली है)

  अब गेंद में कुछ खड़ी लकीरें भी खींचें व उन्हें भी एक-एक नाम दें। जैसा चित्र में दिया है।
- अब गेंद को ध्यान से देखें व बताएँ कि 'तारा' गेंद में कहां स्थित है? कठिनाई होने पर शिक्षक से मदद लें।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) ग्लोब/मानचित्र पर अक्षांश व देशान्तर रेखाएं क्यों खींची जाती है?

(ब) अक्षांश रेखाएं क्या है? प्रमुख अक्षांश रेखाओं के नाम लिखिए।

(स) देशान्तर रेखाएं किसे कहते हैं? प्रमुख देशान्तर या मध्यान्ह रेखा का नाम लिखिए।

(द) अक्षांश व देशान्तर रेखाओं में क्या अंतर है लिखिए।

(य) कर्क एवं मकर रेखा 23½° पर क्यों खींची गयी है?

शिक्षण संकेत- ● 'तारा' 2 नं. की खड़ी रेखा 'ख' नामकी आड़ी रेखा जहाँ आपस में मिल रही है, उस पर स्थित है। ● उपरोक्त गतिविधि से बच्चों का ध्यान इस बात पर ले जायें कि धरातल पर किसी स्थान की स्थिति जानने के लिए खड़ी एवं आड़ी रेखाओं का होना आवश्यक होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि पृथ्वी गोल है इसलिए पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति जानने के लिए ग्लोब पर आड़ी और खड़ी रेखाएं खींची गयी हैं। जो काल्पनिक रेखाएँ हैं। लेकिन इसी की सहायता से हमें पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति जान सकते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ किसे कहते हैं? इन रेखाओं की विशेषताएँ लिखिए।

(ब) विषुवत रेखा तथा प्रधान मध्यान्ह रेखा किसे कहते हैं? इन रेखाओं के माध्यम से पृथ्वी को कितने गोलार्द्धों में विभक्त किया गया है?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) सभी अक्षांश रेखाएं ..... के समानान्तर होती हैं।

(ब) पृथ्वी के ऊपरी छोर के बिंदु को ..... ध्रुव और दक्षिणी छोर के अंतिम बिंदु को ..... ध्रुव कहते हैं।

(स) प्रधान मध्यान्ह रेखा को ..... रेखा भी कहते हैं।

(द) भूमध्य रेखा पृथ्वी को ..... और ..... गोलार्द्ध में बांटती है।

(इ) देशान्तर रेखाओं की कुल संख्या ..... है।

4. सही जोड़ी मिलाइए -

	क	ख
(अ)	अक्षांश रेखाएं	उत्तरी गोलार्द्ध
(ब)	देशान्तर रेखाएं	दक्षिणी गोलार्द्ध
(स)	कर्क रेखा	आड़ी रेखाएं
(द)	मकर रेखा	खड़ी रेखाएं

5. सही विकल्प चुनिए -

(अ) सबसे बड़े अक्षांश वृत्त को कहते हैं-

(i) कर्क वृत्त (ii) विषुवत वृत्त (iii) मकर वृत्त (iv) प्रधान मध्यान्ह

(ब) देशान्तर रेखाओं की दूरी ध्रुवों की ओर कैसी होती जाती हैं-

(i) बढ़ जाती (ii) कम होती (iii) समानान्तर होती (iv) उपरोक्त में कुछ नहीं।

प्रोजेक्ट कार्य -

- वृत्त बनाकर उसमें अक्षांश रेखाएं व देशान्तर रेखाएँ बनाओं और ध्रुवों को दर्शाओ।

❖❖❖❖

पाठ 8

पृथ्वी के परिमण्डल

आइए सीखें

- पृथ्वी पर कितने परिमण्डल है?
- विभिन्न परिमण्डलों की विशेषताएँ क्या हैं व उनकी आपसी निर्भरता किस प्रकार है?

पृथ्वी, सौरमण्डल का प्रमुख ग्रह है जिस पर जीवन है। इसीलिए इसे अनोखा ग्रह कहते हैं। पृथ्वी पर भूमि, जल और वायु पाये जाने से यहाँ जीवन का विकास संभव हुआ। पृथ्वी के भूमि वाले भाग को **स्थल मण्डल**, जल वाले भाग को **जलमण्डल** और वायु के आवरण को **वायुमंडल** कहते हैं। पृथ्वी का वह क्षेत्र जहां उपरोक्त तीनों परिमंडल एक-दूसरे से मिलते हैं **जैवमंडल** कहलाता है।

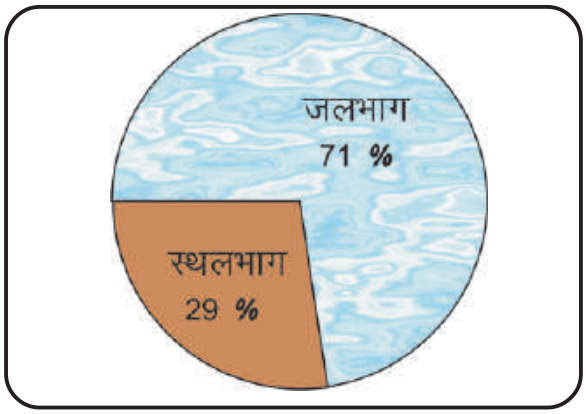

पृथ्वी पर जल एवं स्थल का प्रतिशत

पृथ्वी के 29 प्रतिशत भाग में भूमि (थल) है तथा 71 प्रतिशत भाग में जल पाया जाता है अर्थात इस प्रकार पृथ्वी पर जल भूमि से लगभग तीन गुना से भी अधिक है। पृथ्वी का केवल एक तिहाई भाग स्थल है तथा दो तिहाई हिस्सा जल से ढका है। स्थल विशाल भूखंडों में विभाजित है जिन्हें **महाद्वीप** कहते हैं। इन विशाल महाद्वीपों को खारे जल का विस्तार घेरे हैं जिन्हें **महासागर** कहते हैं।

आइए सभी परिमंडलों के बारे में जाने:-

(1) स्थलमंडल

स्थलमंडल में पृथ्वी की ऊपरी सतह के वे सभी छोटे-बड़े भूखंड सम्मिलित है जो कठोर और नरम शैलों (चट्टानों) से बने हैं। छोटे भूखंड जिनके चारों और जल हो **'द्वीप'** कहलाता है तथा जैसा ऊपर बताया विशाल भूखंडों को महाद्वीप कहते हैं। आप महाद्वीपों के नाम जान चुके हो।

पृथ्वी का सम्पूर्ण धरातल एक समान नहीं है। इसके कुछ भाग समतल है तो कुछ भाग उबड़-खाबड़ एवं ऊँचे-नीचे हैं। ऊँचाई तथा आकार के अनुसार स्थल भाग की इन्हीं आकृतियों को पर्वत, पठार, मैदान के नाम से जाना जाता है। यह आकृतियाँ सभी महाद्वीपों में पायी जाती है। चूँकि समुद्र की ऊपरी सतह सब जगह समान है इसलिए स्थल पर ऊचाईयाँ समुद्र की सतह से नापी जाती है।

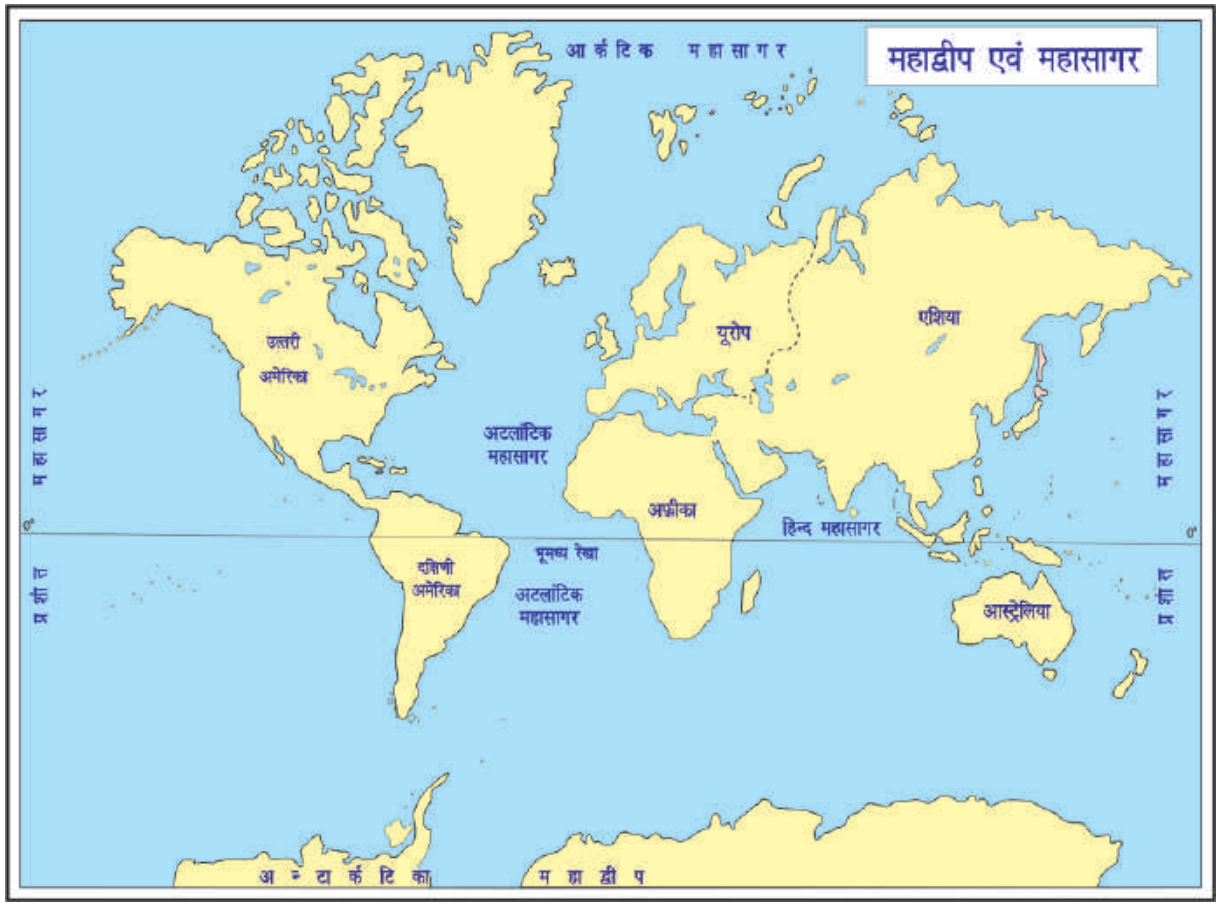

''पृथ्वी का वह समस्त भू-भाग जो कठोर और नरम शैलों से बना है, स्थलमंडल कहलाता है।''

पर्वत - अपने आस पास के क्षेत्र से बहुत ऊँचे भाग होते हैं और इनके ढाल तीव्र होते हैं। पहाड़ों में ऊँची-ऊँची चोटियाँ और गहरी खाइयाँ होती है। पर्वतों के समूह को पर्वत श्रेणियां कहते हैं। ये पर्वत श्रेणियां हजारों किलोमीटर में फैली हैं।

भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी फैली हुई है। यह संसार की सबसे ऊंची पर्वत श्रेणी है। मध्यप्रदेश में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियां है।

पठार - सामान्य रूप से ऊँचे उठे हुए वे भू-भाग हैं जिनकी ऊपरी सतह लगभग समतल अथवा हल्की ऊँची-नीची होती हैं, पठार कहलाते हैं। यह आसपास के क्षेत्रों से एक दम उठे हुए होते हैं। पठार के इन तेज ढलान वाले किनारे को कगार कहते हैं। हमारे देश में दक्कन का पठार प्रसिद्ध है।

मैदान - हमारी पृथ्वी के वे निचले भाग जो समतल और सपाट हैं मैदान कहलाते हैं। अधिकतर मैदान नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी, कंकड़, बालू पत्थर आदि से बने हैं। हमारे देश में गंगा-यमुना से बना

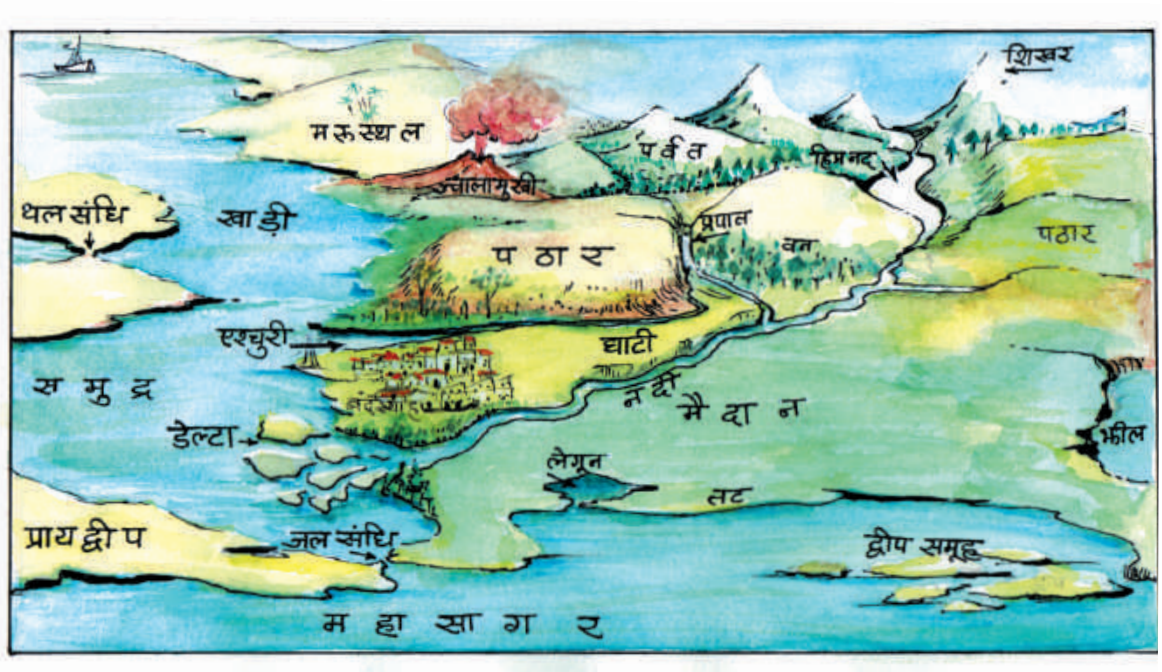

जल एवं स्थल के विभिन्न रूप

उत्तर का विशाल मैदान प्रमुख हैं।

चीन में ह्वांगहो व यांगटीसीक्यांग नदियों से बना मैदान और उत्तरी अमेरिका के मिसीसिपी-मिसौरी नदियों से बने मैदान बड़े उपजाऊ है। यही कारण है कि इन मैदानों में बड़ी संख्या में लोग बसते हैं।

(2) जलमण्डल

पृथ्वी का वह समस्त भाग जो जल से ढका है जलमंडल कहलाता है।

हम सौभाग्यशाली है क्योंकि पृथ्वी पर विशाल जल भंडार है। जैसा कि आप जानते हो कि पृथ्वी के दो तिहाई भाग पर जल है। यह जल, महासागर, सागर, झीलों और नदियों आदि में एकत्र है। ये सब मिलकर जलमण्डल का निर्माण करते हैं। आप महासागरों के नाम जान चुके हैं। प्रशान्त महासागर सबसे बड़ा और गहरा महासागर है। जलमण्डल से हमें वर्षा तथा हिम मिलता है जो हमारे तरह-तरह के उपयोग में आता है। यह मीठा जल है। जबकि सागरों का जल खारा होता है।

(3) वायुमण्डल

आप जानते हो कि हमारे चारों और वायु का आवरण है। यह आवरण धरातल से लगभग 1600 किलोमीटर की ऊँचाई तक फैला है। वायुमंडल में वायु धरातल के निकट अधिक मात्रा में तथा ऊँचाई बढ़ने पर धीरे-धीरे कम होती जाती है। इस कारण पहाड़ों पर सांस लेने में कठिनाई होती है। पर्वतारोही अपने साथ ऑक्सीजन गैस के सिलेण्डर ले जाते हैं। इस प्रकार वायुमंडल पृथ्वी के लिए एक कंबल का कार्य करता है और हमें सूर्य की तेज किरणों से बचाता है। वायुमंडल में अनेक गैसें जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन- डाईआक्साईड आदि पाई जाती है।

पृथ्वी के चारों ओर वायु का आवरण जो विभिन्न गैसों के मिश्रण से बना है वायुमंडल कहलाता है।

वायुमंडल में नाइट्रोजन गैस सबसे अधिक मात्रा में अर्थात 78. 1 प्रतिशत पाई जाती हैं। आक्सीजन गैस सभी जीवधारियो के जीवन के विकास के लिए प्राणवायु के रूप में कार्य करती है। यह वायुमंडल में 21 प्रतिशत पाई जाती है। इसी प्रकार कार्बन डाईआक्साइड पेड़-पौधों की वृद्धि में सहायक है। वायुमंडल में गैसों की मात्रा को नीचे की तालिका में दिया गया है।

वायुमंडल में विभिन्न गैसों का अनुपात

गैस-	प्रतिशत
नाइट्रोजन	78.1
आक्सीजन	20.9
आरगन	0.93
कार्बन-डाईआक्साइड	0.03
जलवाष्प तथा अन्य गैसें	0.02

(4) जैवमंडल

पृथ्वी के तीनों परिमंडल स्थलमंडल, वायुमंडल और जलमंडल मिलकर एक प्रकार का वातावरण तैयार करते हैं जिसे प्राकृतिक वातावरण या पर्यावरण कह सकते हैं। इसी प्राकृतिक पर्यावरण में पृथ्वी के समस्त जीवजन्तु एवं पेड़ पौधे जीवित रहते हैं। जैवमंडल के जीवों को दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं-

(1) प्राणी जगत (2) वनस्पति जगत

जीवों का वह मंडल जो स्थल, जल और वायुमंडल में पाया जाता है, जैवमंडल कहलाता है।

प्राणी जगत में जीवों की लगभग दस लाख जातियां पायी जाती है। इसमें अति सूक्ष्म जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी एवं व्हेल मछली तक सम्मिलित है। प्राणी जगत में जीव जन्तु एक स्थान से दूसरे स्थान को भ्रमण करते हैं। वनस्पति जगत में तीन लाख जातियां पाई जाती हैं, जिनमें अति सूक्ष्म फफूंदी से लेकर विशालकाय पेड़ तक सम्मिलित है। वनस्पति जगत के जीव एक ही स्थान पर विकसित होते हैं।

जैवमंडल अंग्रेजी के बायोस्फीयर शब्द से बना है। बायो का अर्थ जीवन है, इसलिए इसे जैवमंडल या जीवन क्षेत्र कहते हैं। यहाँ भूमि, वायु और जल एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं। पृथ्वी का सम्पूर्ण जीवन इसी क्षेत्र में सीमित है। यह समुद्र तल से केवल कुछ ही किलोमीटर नीचे तथा ऊपर तक होता है। इस परिमंडल में जीव-जंतु, पेड़-पौधे और सूक्ष्म जीवाणु पाए जाते हैं। यानी जैवमंडल में जीवों का आकार सूक्ष्म जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी तक है।

पृथ्वी के सभी परिमंडल एक-दूसरे पर निर्भर है इसलिए प्रत्येक परिमंडल एक-दूसरे को प्रभावित करता है। मानव विभिन्न परिमंडलों को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण सदस्य है। जैसे बढ़ती हुई जनसंख्या को अधिक स्थान चाहिए। वनों को साफ करके स्थान प्राप्त किया जाता है, परन्तु पेड़ों के काटने से प्रकृति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा इससे मृदा अपरदन बढ़ेगा, जिस आक्सीजन को हम पेड़ों से प्राप्त करते हैं उसमें भी कमी आएगी। इस प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण से जैवमंडल का गहरा संबंध है। उनमें आपसी निर्भरता है। इस निर्भरता को निरन्तर बनाए रखने की जो व्यवस्था है उसे **पारिस्थितिक तंत्र** कहते हैं। इस प्राकृतिक सन्तुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि हम भी प्रकृति द्वारा दिए गए पदार्थों का मानव कल्याण में सदुपयोग कर उसके दुरुपयोग को रोकने का प्रयास करें।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

अ. पृथ्वी पर कितने परिमंडल है?

ब. स्थलमंडल का अर्थ बताइए।

स. पर्वत किसे कहते हैं?

द. जैवमण्डल की परिभाषा लिखिए।

य. मैदान और पठार में अंतर बताइए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

अ. स्थलमंडल क्या है व उसके विभिन्न भू स्वरूपों का वर्णन कीजिए।

ब. जैवमंडल क्या है व विभिन्न जीव किस प्रकार से पारिस्थितिक तँत्र में एक-दूसरे पर निर्भर है बताइए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य के लिए एक पारिभाषिक शब्द लिखिए-

अ. गैसों का मिश्रण जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए हैं।

ब. पृथ्वी पर बहुत बड़े जल भंडार को कहते हैं।

स. वह भूखंड जो आसपास के क्षेत्र से बहुत ऊँचा हो।

द. आसपास की नीची भूमि से एकदम सीधा उठा हुआ विस्तृत भू-भाग।

य. स्थल के निचले, विस्तृत एवं समतल भू-भाग।

र. पृथ्वी के तीनों परिमंडल- स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमंडल से मिलकर बना मंडल।

4. सही जोड़ी मिलाइए-

	क	ख
1.	महाद्वीप	प्रशान्त
2.	पठार	वायुमंडल
3.	पर्वत	दक्कन
4.	गैसों का मिश्रण	एशिया
5.	महासागर	हिमालय

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. पृथ्वी के भूमि वाले भाग को ..... कहते हैं।
2. ..... में स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमंडल समाहित है।
3. वायुमंडल में सबसे कम ..... गैस पाई जाती है।
4. प्रकृति द्वारा दिये गये पदार्थों का ..... में सदुपयोग करें।

प्रोजेक्ट कार्य-

- संसार के रेखा मानचित्र में निम्न को दर्शाइए-

(1) आर्कटिक महासागर (2) हिन्द महासागर
(3) आस्ट्रेलिया महाद्वीप (4) उत्तरी अमेरिका महाद्वीप (5) अफ्रीका महाद्वीप

❖❖❖❖

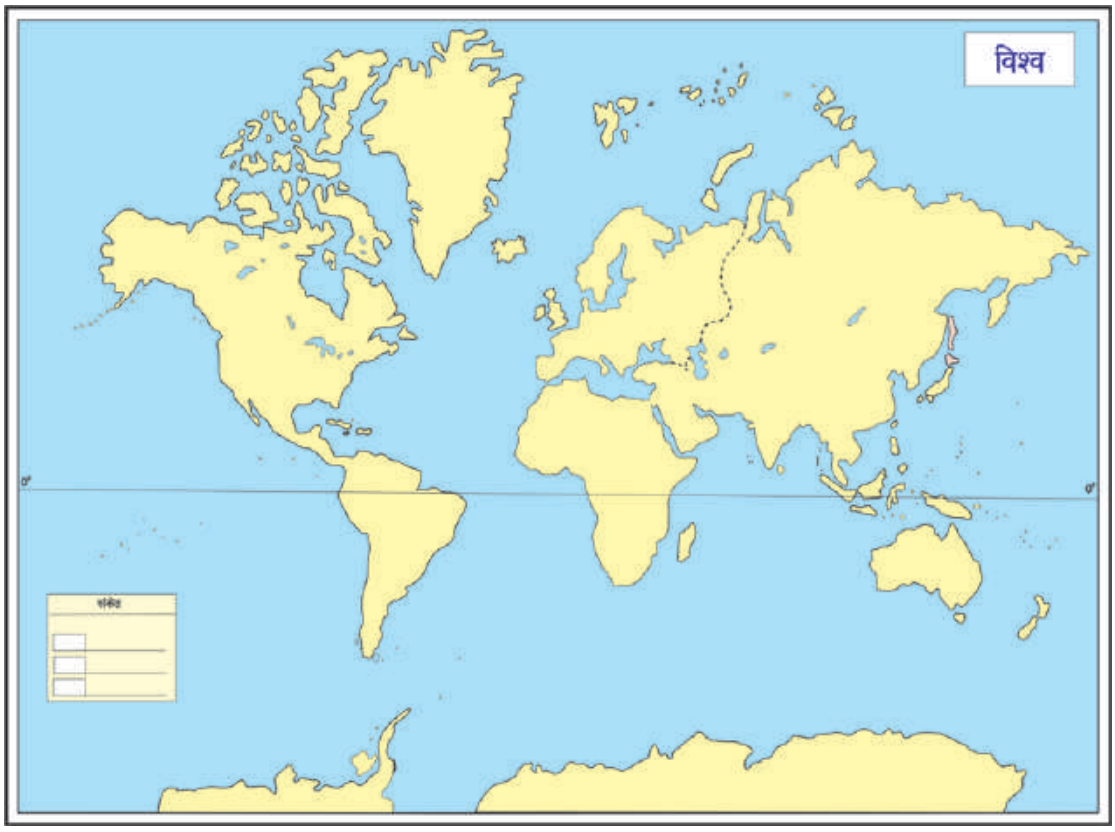

विविध प्रश्नावली-I

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

1. इतिहास से आप क्या समझते हैं?
2. इतिहास जानने के कोई चार स्रोत बताइए।
3. शिलालेख किसे कहते हैं?
4. भोजपत्र किसे कहते हैं?
5. अभिलेख क्या होता है?
6. आदिमानव किसे कहते हैं?
7. आदिमानव जंगली जानवरों से अपना बचाव कैसे करते थे?
8. आदिमानव के युग को पाषाण युग क्यों कहा जाता है?
9. पाषाण युग को कितने भागों में बांटा गया है नाम लिखिये।
10. आग की खोज कैसे हुई होगी? लिखिए।
11. आदिमानव के लिये उपयोगी पशु कौन-कौन से थे?
12. पहिए की खोज मानव के लिए कैसे वरदान साबित हुई?
13. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमता रहता था?
14. किसी व्यक्ति के लिए परिवार का क्या महत्व होता है?
15. समाज की इकाई क्या है?
16. उन्नत समाज की कोई दो विशेषताएँ बताइए?
17. पारस्परिक निर्भरता से आप क्या समझते हैं?
18. दो देशों के बीच पारस्परिक निर्भरता को उदाहरण सहित समझाइए।
19. सौरमंडल में कितने ग्रह हैं? कौनसा ग्रह जीवित ग्रह है?
20. सौरमंडल के मुखिया का नाम लिखिए।
21. पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर कितने दिनों में लगाती है?
22. सूर्य के सबसे पास एवं सबसे दूर के ग्रह का नाम लिखिए।
23. चन्द्रमा किसका उपग्रह है?
24. लाल ग्रह किसे कहते हैं?
25. प्रकाश वर्ष किसे कहते हैं?
26. अक्षांश एवं देशान्तर रेखा किसे कहते हैं?
27. ग्लोब क्या है?
28. मानचित्र किसे कहते हैं?
29. पृथ्वी पर कुल कितने महाद्वीप व कितने महासागर हैं? नाम लिखिए।
30. ग्लोब पर अक्षांश और देशान्तर रेखाएँ क्यों खींची गई हैं?
31. भारत के मध्य से कौन-सी अक्षांश रेखा गुजरती है?
32. भारत किन गोलार्द्धों में स्थित है?
33. सबसे बड़ी अक्षांश रेखा को किस नाम से जानते हैं?

34. प्रधान मध्यान्ह रेखा किसे कहते हैं?
35. 23½° दक्षिणी अक्षांश रेखा को किस नाम से जाना जाता है?
36. अक्षांश और देशांश रेखाओं में क्या अंतर है? कोई तीन लिखिए।
37. पृथ्वी पर कितने परिमंडल है? नाम लिखिए।
38. पृथ्वी पर कितने प्रतिशत जल भाग है?
39. स्थलमंडल किसे कहते हैं?
40. जलमंडल किसे कहते हैं?
41. वायुमंडल में सबसे अधिक कौन सी गैस मिलती है?
42. पर्वत और पठार में अंतर बताइए।
43. द्वीप किसे कहते हैं?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए -

1. इतिहास से आप क्या समझते हैं? इतिहास जानने के कौन-कौन से साधन हैं?
2. आदिमानव ने खेती करना तथा पशुपालन कैसे प्रारंभ किया, समझाइए।
3. समाज क्या है एवं समाज किन-किन बुराइयों पर नियंत्रण लगा सकता है?
4. गाँव व शहर एक-दूसरे पर निर्भर है, इसे समझाते हुए गाँव द्वारा उत्पादित वस्तुओं व शहर द्वारा उत्पादित वस्तुओं के उदाहरण दीजिए।
5. परस्पर निर्भरता क्या है और नागरिक जीवन में परस्पर निर्भरता का क्या महत्व है?
6. सौरमंडल किसे कहते हैं? पृथ्वी सौरमंडल का एक अनोखा ग्रह क्यों कहलाता है?
7. सौरमंडल का सचित्र वर्णन कीजिए।
8. ग्लोब किसे कहते हैं? ग्लोब से हमें क्या-क्या जानकारी मिलती हैं?
9. मानचित्र पढ़ने के लिए किन-किन बातों का जानना आवश्यक है? लिखिए।

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. शिलाओं पर अंकित चित्रों को ..... कहते हैं।
2. पत्थर पर अंकित (खुदी हुई) बातों को ..... कहते हैं।
3. हमारा नागरिक जीवन परस्पर ..... और ..... पर निर्भर करता है।
4. ग्रह एवं उपग्रह ..... से प्रकाशित होते हैं।
5. हमारी पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह ..... है।
6. मनुष्य द्वारा निर्मित छोटे और अस्थाई ग्रह को ..... कहते हैं।
7. पृथ्वी पर फैले विशाल जल भाग को ..... कहते हैं।
8. पृथ्वी का आकार ..... है।
9. ग्लोब पर ..... रंग सबसे अधिक दिखाई देता हैं।
10. पृथ्वी के ऊपरी छोर के बिंदु को ..... ध्रुव और दक्षिणी छोर के अंतिम बिंदु को ..... ध्रुव कहते हैं।
11. देशान्तर रेखाएँ ..... वृत्त होती हैं।
12. पृथ्वी अपने अक्ष पर ..... झुकी है।
13. पृथ्वी के ..... प्रतिशत भाग पर भूमि है।
14. चारों ओर जल से घिरे छोटे भूखंड को ..... कहते हैं।

15. पृथ्वी पर गैसों का आवरण ..... कहलाता है।

IV. सही विकल्प चुनकर लिखिए:

(अ) निम्न में से कौन इतिहास जानने का स्रोत है -
(i) पानी (ii) पेड़ (iii) मिट्टी के बर्तन (iv) पेन

(ब) आदिमानव भोजन कैसे प्राप्त करता था-
(i) खेती करके (ii) कन्दमूल व फल फूल इकट्ठा करके (iii) समुद्र से (iv) इनमें से कोई नहीं

(स) निम्न में से कौनसी बात समाज की विशेषता नहीं है-
(i) खान पान (ii) रक्त संबंध (iii) रहन-सहन (iv) रीति-रिवाज

(द) हमारी मूलभूत आवश्यकता नहीं है-
(i) भोजन (ii) कपड़ा (iii) बिजली (iv) आवास

(य) निम्न में से कौन तारा है -
(i) सूर्य (ii) चन्द्रमा (iii) पृथ्वी (iv) मंगल

(र) सभी आकाशगंगाएँ व सारी ऊर्जा जिस अन्तहीन आकाश में व्याप्त है उसे कहते हैं-
(i) सौरमंडल (ii) सूर्य (iii) ब्रह्माण्ड (iv) आकाशगंगा

(ल) जीवित ग्रह कहा जाता है -
(i) चन्द्रमा (ii) पृथ्वी (iii) बुध (iv) मंगल

(व) लाल रंग का ग्रह है -
(i) पृथ्वी (ii) मंगल (iii) बृहस्पति (iv) बुध

(ब) जीवन रक्षक गैस है-
(i) आक्सीजन (ii) नाइट्रोजन (iii) हीलियम (iv) ओजोन

(भ) जिस रात चन्द्रमा पूरा दिखाई देता है वह रात होती है-
(i) अष्टमी (ii) अमावस्या (iii) पूर्णिमा (iv) एकादशी

(म) पृथ्वी का सबसे निकटतम आकाशीय पिण्ड है-
(i) सूर्य (ii) बुध (iii) चन्द्रमा (iv) शुक्र

(ज) पृथ्वी जैसी आकृति का मॉडल, कहलाता है-
(i) मानचित्र (ii) मापक (iii) ग्लोब (iv) चन्द्रमा

(प) पृथ्वी पर महाद्वीपों की संख्या है-
(i) 4 (ii) 5 (iii) 7 (iv) 6

(फ) अक्षांश रेखाओं की विशेषता है-
(i) अर्धवृत्त (ii) समान लंबाई (iii) पूर्ण वृत्त (iv) खड़ी रेखाएँ।

V. निम्नलिखित में से असमान शब्द को छाँटिए-

(क) (i) पुरा पाषाण (ii) कृष्ण पाषाण (iii) मध्य पाषाण (iv) नव पाषाण

(ख) (i) गाय (ii) भैंस (iii) बाघ (iv) बकरी

(ग) (i) शैलचित्र (ii) वृत्त चित्र (iii) गुहा चित्र (iv) भित्ति चित्र

(घ) (i) परिवार (ii) समुदाय (iii) विवाह (iv) समाज

(ङ) (i) पेट्रोल (ii) कपड़े (iii) डीजल (iv) मिट्टी का तेल

(च) (i) फसल (ii) अनाज (iii) भोजन (iv) उपज

(छ) (i) बुध (ii) शुक्र (iii) मंगल (iv) चन्द्रमा

(ज) (i) आर्य भट्ट (ii) रोहिणी (iii) चन्द्रमा (iv) भास्कर

(झ) (i) एशिया (ii) अफ्रीका (iii) प्रशांत महासागर (iv) उत्तर अमेरिका

(ञ) (i) कर्क रेखा (ii) भूमध्य रेखा (iii) मकर रेखा (iv) ग्रीनविच रेखा

(त) (i) स्थलमण्डल (ii) जैवमण्डल (iii) वायुमण्डल (iv) सौरमण्डल

(थ) (i) पर्वत (ii) सागर (iii) पठार (iv) मैदान

(व) (i) नाइट्रोजन (ii) आक्सीजन (iii) जल वाष्प (iv) कार्बनडाइआक्साइड

VI. सही जोड़ी मिलाइए-

	क	ख
(i)	गैसों का मिश्रण	परिवार
(ii)	आड़ी रेखाएँ	पृथ्वी
(iii)	खड़ी रेखाएँ	शिलालेख
(iv)	गोलाकार	पाषाण काल
(v)	पृथ्वी का नमूना	अक्षांश
(vi)	सबसे बड़ा ग्रह	देशान्तर
(vii)	आवश्यकता के लिए एक-दूसरे पर निर्भरता	बृहस्पति
(viii)	समाज की इकाई	वायुमंडल
(ix)	पत्थरों का युग	ग्लोब
(x)	पत्थरों पर लिखी जानकारी	परस्पर निर्भरता

पाठ 9

हड़प्पा सभ्यता

आइए सीखें

- प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे क्यों विकसित हुई थीं?
- सिन्धुघाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता क्या थी?
- हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण थे?

आदि मानव हमेशा वहीं बसता था, जहाँ उसे पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए भरपूर भोजन और निवास के लिए सुरक्षित स्थान आसानी से उपलब्ध थे। नदियों के किनारे इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से होने के कारण विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई। इसलिए इन सभ्यताओं को **नदी घाटी सभ्यता** कहते हैं।

दिये गए मानचित्र को देखकर पता लगाओ कि कौन-सी सभ्यता किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई। जानकारी को नीचे लिखिए-

---

शिक्षण संकेत : बच्चों को मानचित्र का अध्ययन कराते हुए बताए कि प्राचीन सभ्यताएँ किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई व उनसे तालिका भरवाएँ। आवश्यकतानुसार श्यामपट का प्रयोग करें।

सभ्यता	नदी का नाम
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

इनमें अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित मिस्र की सभ्यता सबसे पुरानी है। यह नील नदी की घाटी में विकसित हुई। दूसरी है मेसोपोटामिया की सभ्यता।

मेसोपोटामिया का अर्थ है दो नदियों के बीच का भू-भाग। ये दो नदियाँ हैं- दजला एवं फरात। इन नदियों के मध्य विकसित हुई सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता कहलाती है। यह सभ्यता 5000 से 500 ई.पू. तक विद्यमान थी। वर्तमान इराक और ईरान का कुछ क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित था। तीसरी है चीन की सभ्यता। इसका उदय ह्वांगहो नदी के तट पर (1750 ई.पू. से 220 ई.) हुआ। चौथी है सिंधु घाटी की सभ्यता जिसका विकास आज से लगभग 4500 वर्ष पूर्व उत्तरी पश्चिम प्रायद्वीप में हुआ जिसका कुछ हिस्सा अब पाकिस्तान में है।

नदी घाटी में मानव सभ्यता के विकास के कारण

लाखों वर्ष तक मानव शिकारी और भोजन संग्राहक का जीवन जीता रहा। धीरे-धीरे उसने पशुपालन करना सीखा। कोई दस हजार वर्ष पूर्व उसने खेती करना प्रारंभ किया। उसने अपने सैकड़ों वर्षों के अनुभव से यह सीख लिया था कि मिट्टी में बीज डालने और सींचने से पौधा उगता है।

नदियों के किनारे की मिट्टी उपजाऊ होती है। यहाँ पानी आसानी से मिल जाता है। नदी से नाव या लट्ठे की सहायता से आवागमन की सुविधा रहती है। जानवरों के लिए घास तथा जल आसानी से मिल जाता है। इन सब कारणों से आदि मानव ने नदी की घाटियों में बसना प्रारंभ किया। तब भी मानव पाषाण उपकरणों का प्रयोग करता था।

लगभग 7000 वर्ष पूर्व ताँबे की खोज ने मानव के जीवन में परिवर्तन कर दिया। ताँबा कठोर पत्थर की तुलना में अधिक प्रभावकारी था। टिन के मिश्रण से निर्मित ताँबा पत्थर से भी अधिक मजबूत था। ताँबे के प्रयोग के कारण मानव पाषाण काल से निकलकर ताम्राश्मकाल* (ताँबे व पाषाण) में प्रवेश कर गया।

ताम्राश्मकाल में नदी घाटी सभ्यता का विकास एक लंबे-चौड़े भाग में हुआ। भारत में इस काल की सबसे पुरानी बस्तियाँ दक्षिण पूर्वी राजस्थान (आहार) मध्यप्रदेश में मालवा में (कायथा और एरण) पश्चिमी महाराष्ट्र में (जोखा, नेवासा व दैमाबाद) में मिली है। नर्मदा नदी के तट पर नवदा टोली स्थान पर भी ताम्र पाषाणिक अवशेष मिले हैं।

---

* ऐसा समय जब ताँबे एवं पत्थर के औजार साथ-साथ प्रयोग किये जाते थे। ताम्राश्मकाल या ताम्र पाषाण काल कहते हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज

सन् 1921 के पूर्व तक भारत की प्राचीनतम सभ्यता वैदिक सभ्यता ही मानी जाती थी। सबसे पहले श्री दयाराम साहनी ने 1921 ई. में हडप्पा में खुदाई आरम्भ कर वहाँ एक नगर के भग्नावशेष प्राप्त किये तत्पश्चात् श्री राखलदास बैनर्जी ने सन् 1922 ई. में सिंध प्रान्त के लरकाना जिले में बौद्ध-स्तूपों की खोज करते हुए कुछ टीलों को खुदवाया, तो वहां भूगर्भ में पक्की नालियाँ और कमरे मिले। इसके बाद तो इस क्षेत्र में 10 वर्षों तक उत्खनन चला तथा अनेक जानकारियाँ प्रकाश में आयीं।

इसी बीच रायबहादुर दयाराम साहनी और माधव स्वरूप वत्स ने हिमालय के तलहटी क्षेत्रों में मानव सभ्यता के प्रमाण खोजे जिसके आधार पर उत्खनन कार्य प्रारंभ हुआ। खुदाई का कार्य हड़प्पा में शुरु हुआ। इस कारण इसे हड़प्पा सभ्यता कहा गया। इसे **'सिन्धु घाटी सभ्यता'** भी कहा जाता है।

धीरे-धीरे इस सभ्यता की खोज विभिन्न स्थलों पर हुई। इसके विस्तार को देखकर पता चलता है कि भौगोलिक दृष्टि से यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता थी। इसका क्षेत्र मिस्र की सभ्यता के क्षेत्र से 20 गुना अधिक था। इस सभ्यता का विकास भारत और पाकिस्तान के उत्तरी और पश्चिमी भाग में सिन्धु नदी की घाटी में हुआ। सिन्धु घाटी के कारण इस सभ्यता को सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से पुकारा गया। इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य तक है।

इस सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल ये हैं- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा चन्हुदड़ो (पाकिस्तान), रोपड़ (पंजाब), रंगपुर (सौराष्ट्र) लोथल, सुतकोटडा (गुजरात) कालीबंगा (राजस्थान) धौलाबीरा (गुजरात) बणावली, राखीगढ़ी (हरियाणा), मांडा (जम्मू कश्मीर) दैमाबाद (महाराष्ट्र), आलमगीरपुर, हुलास (उत्तरप्रदेश) इत्यादि।

नगरीय जीवन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी नगर योजना प्रणाली थी। नगर अधिकतर दो अथवा तीन भागों में बंटे थे। सबसे सुरक्षित स्थान किला या दुर्ग कहलाता था। यहाँ उच्च वर्ग का परिवार रहता होगा। नगर के निचले भाग में मध्यम व निम्न वर्ग का निवास था। इन नगरों में सड़कें पूरी सीधी थीं व एक-दूसरे को लंबवत काटती थीं। नगर अनेक खण्डों में विभक्त होता था जैसा कि आजकल के नगर होते हैं। हड़प्पा सभ्यता के नगरों में कोठार (अनाज भरने के गोदाम) का महत्वपूर्ण स्थान था। हड़प्पा तथा कालीबंगा में भी इनके प्रमाण मिले हैं।

मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार है। यह 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है। इसके दोनों सिरों पर तल तक सीढ़ियाँ बनी हैं। बगल में कपड़े बदलने के कक्ष हैं। स्नानागार का फर्श पक्की ईटों का बना है। पास के एक कमरे में बड़ा सा कुआँ बना है। संभवत: यह स्नानागार किसी धार्मिक अनुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बना होगा।

इसके अलावा भी हर छोटे-बड़े मकान में आंगन (प्रांगण) और स्नानागार होता था। पर्यावरण की दृष्टि से जल निकास प्रणाली अद्‌भुत थी। घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था। यहाँ यह पानी मुख्य नाली से मिलता जो ईटों व पत्थर की पट्टियों से ढँकी होती थी। सड़कों की मुख्य नालियों में सफाई की दृष्टि से नरमोखे (मेनहोल) भी बने थे। उनके द्वारा नालियों की समय-समय पर सफाई की जाती थी। ताम्राश्म युगीन सभ्यता में हड़प्पा की जल निकास प्रणाली अद्वितीय थी। विश्व की किसी अन्य सभ्यता में सफाई को इतना महत्व नहीं दिया जाता था जितना की हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में पर्यावरण शुद्धि की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था।

- **हड़प्पा सभ्यता में भवनों के लिए पक्की ईटों का प्रयोग विशेष बात थीं। समकालीन मिस्त्र की सभ्यता व मेसोपोटामिया की सभ्यता में इसका प्रचलन नहीं था।**
- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने विस्तृत सड़कों और नालियों से युक्त सुनियोजित नगर का निर्माण किया।**

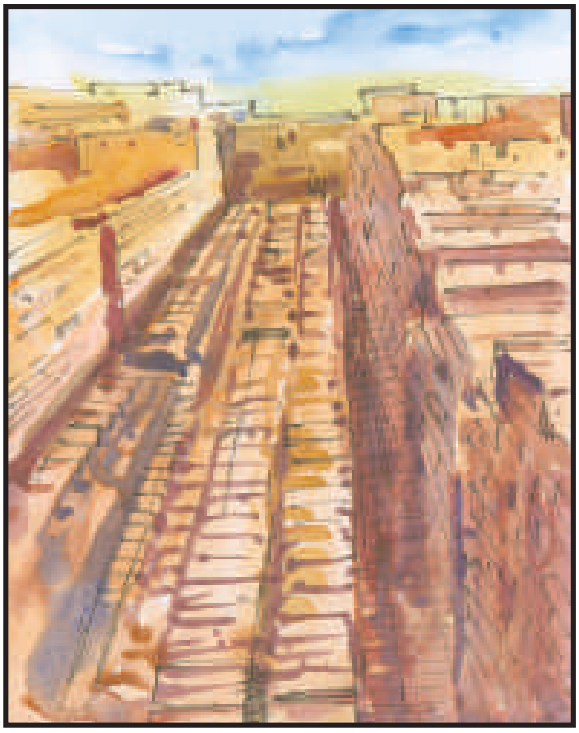

हड़प्पाकालीन नगर की सड़कें एवं ढकी हुई नालियाँ

कृषि व पशुपालन-

हड़प्पा सभ्यता की जीवन दायिनी नदी सिन्धु थी। यह नदी अपने साथ भारी मात्रा में उपजाऊ मिट्टी लाती थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, सरसों, कपास, मटर तथा तिल की फसलें उगाते थे। संभवत: किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों में मिले कोठार (अनाज गोदाम) इसके प्रमाण हैं।

कालीबंगा में पाये गये जुताई के मैदान से प्रतीत होता है कि उनका खेती का तरीका आज की तरह ही था।

हड़प्पा निवासी कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करते थे। ये बैल-गाय, बकरी, भेड़, सूअर, भैंस, कुत्ता, ऊँट तथा हाथी, घोड़ा पालते थे। ये सिंह, गेंडा, हंस, बतख, बन्दर, खरगोश, मोर, हिरण, मुर्गा,

काँसे की मूर्ति

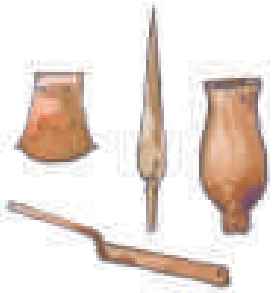

काँसे के बर्तन एवं औजार

मिट्टी के खिलौने

मिट्टी के बर्तन

पत्थर के औजार

तोता, उल्लू आदि जानवरों से परिचित थे। इनमें से कुछ जानवरों की स्वतंत्र आकृतियाँ व कुछ का अंकन मिट्टी की मुहरों पर मिला है।

- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने कपास का उत्पादन सबसे पहले सिन्धु क्षेत्र में किया । मोहनजोदड़ो में बुने हुए सूती कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, और कई वस्तुओं पर कपड़े के छापे भी मिले हैं। कताई के लिए तकलियों का इस्तेमाल होता था।**
- **गुजरात के हड़प्पा सभ्यता के लोग चावल उपजाते थे और हाथी पालते थे। ये दोनों बातें मेसोपोटामिया के निवासियों को ज्ञात न थी।**

शिल्प तथा तकनीकी ज्ञान

हड़प्पा सभ्यता ताम्राश्म काल की है। यह कांस्य युग भी कहलाता है। ताँबे में जिंक/टिन मिलाकर कांसा बनाया जाता था। कांसा ताँबे की तुलना में अधिक मजबूत होता है। खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर ज्ञात होता है कि इस सभ्यता के लोगों ने धातुओं के गलाने, ढालने और सम्मिश्रण की कला में विशेष उन्नति की थी। मिट्टी के बर्तन बनाने, खिलौने बनाने, मुहरें निर्माण करने में यहां के कलाकार सिद्धहस्त थे। प्रतिमाओं को पकाया भी जाता था। इसके अलावा स्वर्णकार चांदी, सोना और रत्नों के आभूषण और विभिन्न रंगों के मनके भी बनाते थे। कांसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

धार्मिक मान्यताएँ

हड़प्पा सभ्यता में किसी भी देवालय के प्रमाण नहीं मिले हैं। पकी हुई मिट्टी की स्त्री प्रतिमाएँ भारी संख्या में मिली हैं। इससे अनुमान होता है कि देवी उपासना प्रचलित थी। एक मुहर पर तीन सींग युक्त ध्यान करते हुए देवता का अंकन है। यह पद्मासन में बैठा है। इसके आसपास एक हाथी, एक बाघ, एक गेंडा, एक भैंसा व दो हिरण का अंकन है। कुछ पुरातत्वविदों ने इस देवता की पहचान पशुपति (शिव) के रूप में की है।

हड़प्पा में पकी मिट्टी व पत्थर पर बनें लिंग और योनि के अनेक प्रतीक मिले हैं। इसके अलावा कमण्डल, यज्ञवेदी, स्वास्तिक आदि के अवशेष हड़प्पा सभ्यता के लोगों के धार्मिक विचारों व क्रिया-कलापों की जानकारी प्रदान करते हैं।

मध्यप्रदेश के कायथा (जिला उज्जैन) की खुदाई से हड़प्पा सभ्यता के समान एक मुहर, सेलखेड़ी के मनके, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

कूबड़ वाले सांड की मृणमूर्ति तथा अंकन कई मुहरों पर मिलता है। उत्खनन में ताबीज बड़ी तादाद में मिले हैं। शायद हड़प्पावासी भूत-प्रेतों में विश्वास कर उनसे रक्षा के लिये ताबीज पहनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में पीपल के वृक्ष की पूजा के प्रमाण मृणमुहरों तथा पात्रों पर मिलते हैं। इस वृक्ष की उपासना आज तक जारी है। भारतीय पीपल को पवित्र वृक्ष मानते हैं। वैज्ञानिक भी इस वृक्ष को पर्यावरण शुद्धि की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हैं। पात्रों पर किये कई चित्रण धार्मिक विचारों की जानकारी प्रदान करते हैं। कुछ पात्रों पर मोर का अंकन मिलता है। आज भी भारत के विभिन्न अंचलों में कुम्हार लोग अपने द्वारा निर्मित पात्रों में मोर का अंकन करते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के लोगों के विभिन्न धार्मिक विश्वास भले ही रहे हों परन्तु वे योग विद्या के प्रारंभिक जनक भी थे। मृणमुहरों पर प्राप्त चित्रांकन से इस बात की पुष्टि होती है कि हड़प्पावासी योगिक क्रियाओं के जानकार थे।

लिपि

हड़प्पन लिपि

हड़प्पावासियों को लेखन कला का भी ज्ञान था। संभवत: उनकी लिपि चित्र लिपि थी। इन्हें चित्र या अक्षर के रूप में लिखा जाता था। लेकिन इस लिपि को आज तक सुनिश्चित रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।

माप-तौल

हड़प्पावासी माप-तौल के तरीकों से परिचित थे। माप हेतु ये 'बाट' और 'दंड' का प्रयोग करते थे। खुदाई से बाट व कांसे का माप का उपकरण (पैमाना) प्राप्त हुआ है।

मुहरें

हड़प्पावासियों की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ उनकी मृणमुद्राएं हैं। अब तक खुदाई से लगभग 5000 मुद्राएं प्राप्त हो चुकी हैं। इन पर जानवरों की आकृतियाँ तथा लघु लेख अंकित है।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

इस सभ्यता के इतने बड़े नगर जमीन में दबकर कैसे नष्ट हो गये, इस संबंध में अब तक इतिहासकार पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है। अब तक प्राप्त प्रमाणों के अनुसार ऐसा अनुमान है कि इतनी विशाल सभ्यता के पतन में निम्नलिखित कारक उत्तरदायी रहे होंगे:-

1. भूकम्प आने के कारण संभवत: सिंधु नदी का मार्ग बदल गया होगा और ये नगर भूस्खलन में जमीन में दब गया होगा।
2. इस क्षेत्र में वर्षा की कमी व बढ़ते हुए रेगिस्तान से इस क्षेत्र में खेती तथा पशुपालन पर बुरा असर पड़ा होगा और इस सभ्यता का पतन हो गया।
3. कुछ लोगों का अनुमान है कि सिंधु नदी में बाढ़ आई होगी और सभ्यता का अन्त हो गया होगा।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) हड़प्पा सभ्यता में किस पेड़ की पूजा के प्रमाण मिले हैं?

(ब) हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख चार स्थलों के नाम लिखिए।

(स) नदी घाटी सभ्यता नदियों के किनारे ही क्यों विकसित हुई?

(द) हड़प्पा सभ्यता के शिल्प व तकनीकी ज्ञान के बारे में लिखिए।

(य) हड़प्पा सभ्यता में कौन-कौन सी फसलें उगायी जाती थी?

(र) सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) हड़प्पावासियों की नगर रचना का वर्णन कीजिए।

(ब) हड़प्पावासियों के धार्मिक विश्वासों के बारे में आप क्या जानते है? लिखिए।

(स) हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों को लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल ..... है। (गोदाम/स्नानागार)

ब. हड़प्पा सभ्यता ..... सभ्यता है। (नगरीय/ग्रामीण)

स. कांसे की नर्तकी हड़प्पा सभ्यता की ..... का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। (मूर्तिकला/वास्तुकला)

द. कूबड़ वाले सांड का अंकन कई ..... पर मिलता है। (भवनों/मुहरों)

य. हड़प्पावासियों की लिपि ..... लिपि थी। (देवनागरी/चित्र)

र. हड़प्पा सभ्यता में ..... व पर्यावरण शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया गया था। (गंदगी/साफ-सफाई)

4. नदी घाटी और उनमें विकसित सभ्यताओं की सही जोड़ी मिलाओ-

	क	ख
अ.	नील नदी घाटी	मोहनजोदड़ो व हड़प्पा सभ्यता
ब.	दजला-फरात नदी घाटी	मिश्र की सभ्यता
स.	सिंधु घाटी	चीन की सभ्यता
द.	ह्वांगहो नदी घाटी	मेसोपोटामिया की सभ्यता

5. सही विकल्प चुनिए-

1. हड़प्पा सभ्यता में कौन सी विशेषता नहीं पाई गयी-

(i) सुनियोजित नगरीय व्यवस्था (ii) धातु गलाने व ढलाने की कला

(iii) पेड़ों व गुफाओं में रहना (iv) पशुपालन व कृषि

2. हड़प्पावासी कौन सी धातु का उपयोग अधिक करते थे-

(i) लोहा (ii) ताँबा (iii) सोना (iv) चाँदी

3. हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारणों में से नहीं था-

(i) आग लगना (ii) आर्यों का आक्रमण (iii) मुगलों का आक्रमण (iv) तेज वर्षा

प्रोजेक्ट कार्य-

- मानचित्र में निम्नलिखित नगरों को दर्शाइए-
हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, रोपड़।

❖❖❖❖

पाठ 10

वैदिक संस्कृति

आइए सीखें

- वैदिक संस्कृति क्या है?
- आर्यों का जीवन कैसा था।
- वैदिककाल में सामाजिक व आर्थिक जीवन कैसा था?

वेद भारत के प्राचीन ग्रंथ हैं। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, अरण्यक आदि को वैदिक साहित्य कहते हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान अथवा पवित्र आध्यात्मिक ज्ञान। विद्वान लोग वैदिक काल और वैदिक साहित्य को दो भागों में बाँटते हैं- प्रारंभिक दौर का प्रतिनिधित्व ऋग्वेद करता है। इस काल को पूर्व वैदिककाल या

ऋग्वैदिक काल भी कहा जाता है और बाद के दौर में शेष तीनों वेद (सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद), ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् आते हैं। इस काल को उत्तर वैदिक काल भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य को समृद्ध होने में लंबा समय लगा। वैदिक साहित्य से हम वैदिक काल के लोगों के निवास के क्षेत्र, उनके खान-पान व रहन-सहन के विषय में जान पाते हैं। इस युग की संस्कृति को ही वैदिक संस्कृति कहते हैं।

इतिहासकारों का मत है कि इस काल में कुछ लोग उत्तर-पूर्वी ईरान, कैस्पियन सागर या मध्य एशिया से छोटे छोटे समूहों में आकर पश्चिमोत्तर भारत में बस गये। ये अपने आप को आर्य कहते थे। कतिपय इतिहासकार इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि इसके पुरातात्विक व साहित्यिक प्रमाण नहीं हैं। उनका मत है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। सभ्यता और संस्कृतियों का विकास सदैव नदियों के किनारे हुआ है। सिन्धु, सतलज, व्यास, सरस्वती नदियों के किनारे आर्यों ने ऋचाओं की रचना की, जिनका संग्रह ऋग्वेद है।

वर्तमान में विलुप्त, सरस्वती नदी का वर्णन वैदिक साहित्य में मिलता है। पुरातत्ववेत्ताओं तथा भूवैज्ञानिकों ने अपनी नवीन खोजों से सिद्ध किया है कि सरस्वती नदी 2000 ई.पू. तक पृथ्वी पर प्रवाहित होती रही होगी। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि हड़प्पा सभ्यता का उद्गम तथा विनाश सरस्वती नदी के किनारे हुआ होगा।

सामाजिक जीवन

आर्य पहले छोटे-छोटे कबीलों में बसे था। कबीले छोटी-छोटी इकाइयों में बँटे थे जिन्हें 'ग्राम' कहते थे। प्रत्येक ग्राम में कई परिवार बसते थे। इस समय संयुक्त परिवार हुआ करते थे एवं परिवार का सबसे वृद्ध व्यक्ति मुखिया हुआ करता था।

समाज मुख्यत: चार वर्णों में बंटा था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह वर्गीकरण लोगों के कर्म (कार्यों) पर आधारित था न कि जन्म पर। गुरुओं और शिक्षकों को ब्राह्मण, शासक और प्रशासकों को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और साहूकारों को वैश्य तथा दस्तकारों और मजदूरों को शूद्र कहा जाता था। लेकिन बाद में व्यवसाय पैतृक होते चले गए और एक व्यवसाय से जुड़े लोगों को एक **जाति** के रूप में माना जाने लगा। हुनर में विशेषज्ञता बढ़ने के साथ-साथ जातियाँ भी बढ़ने लगीं और जाति तथा वर्ण-व्यवस्था कठोर बनती गई। एक वर्ण से दूसरे में जाना कठिन हो गया।

समाज की आधारभूत इकाई परिवार थी। बाल विवाह नहीं होते थे। युवक एवं युवतियाँ अपनी पसंद से विवाह कर सकते थे। सभी सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर पत्नी पति की सहभागिनी होती थी। महिलाओं का सम्मान था और कुछ को तो **ऋषि** का दर्जा भी प्राप्त था। पिता की संपत्ति में उसकी सभी संतानों का हिस्सा होता था। भूमि पर व्यक्तियों तथा समाज का स्वामित्व था। मुख्यत: चारे वाली भूमि, जंगल तथा जलाशयों जैसे तालाब और नदियों पर समाज का स्वामित्व होता था जिसका अभिप्राय था कि गाँव के सभी लोग उनका उपयोग कर सकें।

खान-पान

वैदिक काल में आजकल के सभी अनाजों की खेती की जाती थी। इसी प्रकार आर्यों को सभी पशुओं

की जानकारी भी थी। लोग चावल, गेहूँ के आटे तथा दालों से बने पकवान खाते थे। **दूध, मक्खन** और **घी** का प्रयोग आम था। फल, सब्जियाँ, दालें और मांस भी भोजन में सम्मिलित थे। वे **मधु** तथा नशीला पेय **सुरा** भी पीते थे। धार्मिक उत्सवों पर **सोम** पान किया जाता था। **सोम** और **सुरा** पीने को हतोत्साहित किया जाता था क्योंकि यह व्यक्ति के अशोभनीय व्यवहार का कारण बनते थे।

आर्थिक जीवन

वैदिक काल के लोगों का आर्थिक जीवन कृषि, कला, हस्तशिल्प और व्यापार पर केंद्रित था। बैलों और सांडों का खेती करने एवं गाड़ियाँ खींचने के लिए उपयोग किया जाता था। रथ खींचने के लिए घोड़ों का उपयोग किया जाता था। पशुओं में **गाय** को सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र स्थान दिया जाता था। वैदिक काल में गाय को चोट पहुँचाना अथवा उसकी हत्या करना वर्जित था। गाय को **अघ्न्य** (जिसे न तो मारा जा सकता है और न ही चोट पहुँचाई जा सकती है) कहा जाता था। वेदों में गौहत्या अथवा गाय को चोट पहुँचाने पर परिस्थिति अनुसार **देश निकाला** अथवा **मृत्यु-दंड** देने का प्रावधान है।

प्रारंभिक काल में बर्तन बनाना, कपड़ा बुनना, धातु कर्म, बढ़ई का काम इत्यादि व्यवसाय थे। प्रारंभिक काल में धातुओं में केवल **ताँबा** धातु की ही जानकारी थी। दूर-दूर तक व्यापार होता था। वेदों में समुद्री मार्ग से व्यापार की चर्चा आती है। बाद के काल में हमें अन्य कई व्यवसायों, जैसे गहने बनाना, रंगरेजी, रथ बनाना, तीर-कमान बनाना तथा धातु पिघलाने आदि की जानकारी मिलती है। हस्तशिल्पियों की **श्रेणियाँ** (संघ) भी बनीं और उनके मुखिया को **श्रेष्ठी** कहा जाता था। बाद के काल में लोहे की जानकारी होने के बाद ताँबा **लोहित अयस** और लोहा **श्याम अयस** के नामों से जाना जाने लगा।

प्रारंभिक काल में लोग स्वेच्छा से राजा को उसकी सेवाओं के फलस्वरूप उपहार के रूप में **बलि** (ऐच्छिक उपहार) दिया करते थे जो बाद में एक नियमित कर बन गया जिसे **शुल्क** कहा जाता था। उस समय उपयोग किए जाने वाले सिक्कों को **निष्क** कहा जाता था।

धर्म और दर्शन

ऋग्वेद काल के लोग प्रकृति की शक्ति दर्शाने वाले बहुत से देवताओं की पूजा करते थे जैसे- अग्नि, सूर्य, वायु, आकाश और वृक्ष। इनकी पूजा आज भी होती है। हड़प्पा सभ्यता में हम कई वस्तुओं जैसे **पीपल, सप्तमातृकाओं** और **शिवलिंगों** का चित्रण पाते हैं जिन पर हिंदू आज भी श्रद्धा रखते हैं। अग्नि, वात और सूर्य से समाज की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती थी। **इंद्र, अग्नि** और **वरुण** सबसे अधिक मान्य देवता थे। **यज्ञ** एक जाना-माना धार्मिक कृत्य था। कभी-कभी बड़े विशाल यज्ञों का आयोजन किया जाता था जिसमें बहुत से पुरोहितों की आवश्यकता होती थी।

उत्तर वैदिक काल में कर्मकांड और यज्ञ के साथ साथ **ज्ञान मार्ग** को महत्व दिया गया। **ज्ञान मार्गी** चिंतकों (दार्शनिकों) द्वारा जिन प्रश्नों पर चर्चा की गई है वे हैं- ईश्वर क्या है? ईश्वर कौन है? जीवन क्या है? संसार क्या है? मृत्यु के पश्चात मनुष्य कहाँ जाता है? आत्मा क्या है? इत्यादि। दार्शनिकों के चिंतन को उनके निकट बैठने वाले शिष्यों ने कंठस्थ किया और बाद में उन्हें लिपिबद्ध किया गया। ये ग्रंथ 'उपनिषद' कहलाये। उपनिषद भारतीय दर्शनशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ है। इन्हें वेदों के अंग माना जाता है।

विज्ञान

वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् इस समय के विज्ञान के विषय में पर्याप्त जानकारी देते हैं। **गणित** की सभी शाखाओं को सामान्यत: गणित नाम से ही जाना जाता था जिसमें **अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या** और **ज्योतिष** सम्मिलित थे।

वैदिक काल के लोग **त्रिभुज** के बराबर क्षेत्रफल का वर्ग बनाना जानते थे। वे **वृत्त** के क्षेत्रफलों के वर्गों के योग और अंतर के बराबर का **वर्ग** भी बनाना जानते थे। **शून्य** का ज्ञान था और इसी कारण बड़ी संख्याएँ दर्ज की जा सकीं। इसके साथ ही प्रत्येक अंक के स्थानीय मान और मूल मान की जानकारी भी थी। उन्हें घन, घनमूल, वर्ग और वर्गमूल की जानकारी थी और उनका उपयोग किया जाता था।

वैदिक काल में **खगोल विद्या** अत्यधिक विकसित थी। वे आकाशीय पिंडों की गति के विषय में जानते थे और विभिन्न समय पर उनकी स्थिति की गणना भी करते थे। इससे उन्हें सही पंचांग बनाने तथा सूर्य एवं चंद्रग्रहण का समय बताने में सहायता मिलती थी। वे यह जानते थे कि **पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। चाँद, पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमता है।** उन्होंने पिंडों के घूर्णन का समय ज्ञात करने तथा आकाशीय पिंडों के बीच की दूरियाँ मापने के प्रयास भी किए।

वैदिक सभ्यता काफी उन्नत प्रतीत होती है। लोग **नगरों,** प्राचीर से घिरे नगरों **(पुरों)** तथा गाँवों में रहते थे। वे दूर-दराज तक व्यापार करते थे। विज्ञान पढ़ा जाता था और विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ अत्यधिक विकसित थीं। उन्होंने सही पंचांग बनाए और चंद्र एवं सूर्य ग्रहणों के समय की पूर्व सूचना दी। आज भी हम उनकी विधि से गणना कर ग्रहण का समय ज्ञात कर सकते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) वैदिक साहित्य कौन से हैं?

(ब) वैदिक काल में सिक्कों को क्या कहते थे?

(स) वैदिक काल में विशेष रूप से किन देवताओं की पूजा होती थी?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए-

(अ) आर्यो के काल को वैदिककाल क्यों कहा जाता है?

(ब) वैदिक काल में समाज किन-किन वर्णों में बँटा था?

(स) वैदिक काल के आर्थिक जीवन का वर्णन कीजिए।

(द) 'गणित व खगोल विद्या वैदिक काल में विकसित थी', लिखिए।

3 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान कीजिये।

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(अ) बलि	गाय
(ब) अघ्न्य	सिक्के
(स) निष्क	नशीला पेय
(द) सुरा	कर व शुल्क

4 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(अ) सरस्वती नदी के किनारे ..... की रचना हुई।

(ब) ऋग्वेद के युग में ..... व्यवसाय के आधार पर समाज का वर्गीकरण हुआ।

(स) उत्तर वैदिक काल में हथियार ..... धातु से बनाये गये।

5 सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(अ) वैदिक काल में आर्यों को निम्न में से किसका ज्ञान नहीं था-

(i) शून्य का ज्ञान (ii) खगोल विद्या (iii) ताँबे का (iv) अष्टांग मार्ग

(ब) वैदिक काल की सामाजिक विशेषताओं में कौनसी शामिल नहीं थी-

(i) महिलाओं को सम्मान देना (ii) कर्म के आधार पर वर्ण विभाजन

(iii) युवक-युवतियों का पसंद से विवाह होना (iv) बाल विवाह

❖❖❖❖❖

पाठ 11

जनपदों और महाजनपदों का युग

(600 ई.पू. से 400 ई.पू.)

आइए सीखें

- जनपद एवं महाजनपद से क्या आशय है।
- मगध साम्राज्य की स्थापना कैसे हुई थी।
- मगध साम्राज्य की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ कैसी थीं।
- महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ क्या हैं।

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि आर्य लोग किस प्रकार नदियों के उपजाऊ मैदान में निवास करते थे। वे धीरे-धीरे सिन्धु, झेलम, सतलज, व्यास तथा सरस्वती नदियों की घाटियों, मैदानों से आगे बढ़े। वे गंगा के उपजाऊ प्रदेश में बसने लगे। जंगलों को साफ कर उन्होंने खेती के लिए जमीन तैयार की। वहाँ **जनपद** बसाये। जनपद का मतलब है 'मनुष्य के बसने का एक क्षेत्र।' इन जनपदों के नामकरण उनके स्थापना करने वाले जन या कुल पर थे। महाभारत में अनेक जनपदों का उल्लेख है। भगवान बुद्ध के पूर्व सोलह महा जनपद अंग, मगध, काशी, कौशल, वज्जि, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवंति, चेदी, गंधार, कम्बोज आदि थे। अवंति महाजनपद के दो भाग थे। उत्तरभाग की राजधानी उज्जयिनी और दक्षिण भाग की राजधानी महिष्मती (मान्धाता)। चेदि आधुनिक बुंदेलखंड है इसकी राजधानी शक्तिमती थी।

बड़े एवं शक्तिशाली जनपदों को **महाजनपद** कहा जाता था। इनके अधीनस्थ कुछ छोटे जनपद होते थे।

आज के मध्यप्रदेश के क्षेत्र में अवंति एवं चेदि जनपद थे। उस समय के चार शक्तिशाली महाजनपदों में से एक जनपद 'अवंति' मध्यप्रदेश में था यहां का राजा चण्ड प्रद्योत था। उसकी बेटी वासवदत्ता थी जिसका विवाह काशी के राजा उदयन से हुआ था। आज भी ''उदयन-वासवदत्ता'' की कहानियां प्रचलित हैं।

इसी काल में बहुत से ऐसे राज्य थे जहाँ वंशगत राजा नहीं थे। इन राज्यों को **गणसंघ** कहा जाता था। गणसंघों में जनपदों व महाजनपदों की तरह राजा या सम्राट का पद वंशानुगत नहीं होता था। यहाँ राज्य के राजा को जनता चुनती थी जैसे कि आज हम अपनी सरकार चुनते हैं। इन गणसंघों में कुछ थे- मिथिला के वज्जि, कपिलवस्तु के शाक्य और पावा के मल्ल।

- **जनपदों के नामकरण उनके संस्थापक जन या कुल के नाम पर किये गये थे।**
- **अधिकांश महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में थे और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त से बिहार तक फैले हुए थे।**
- **जनपदों एवं महाजनपदों में राजा का पद वंशानुगत होता था, जबकि गणसंघों में राजा को जनता चुनती थी।**

मानचित्र को ध्यान से देखें और प्राप्त जानकारी से दी गई तालिका को पूरा करें।

क्र.	महाजनपद का नाम
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
11.	
12.	
13.	
14.	
15.	
16.	

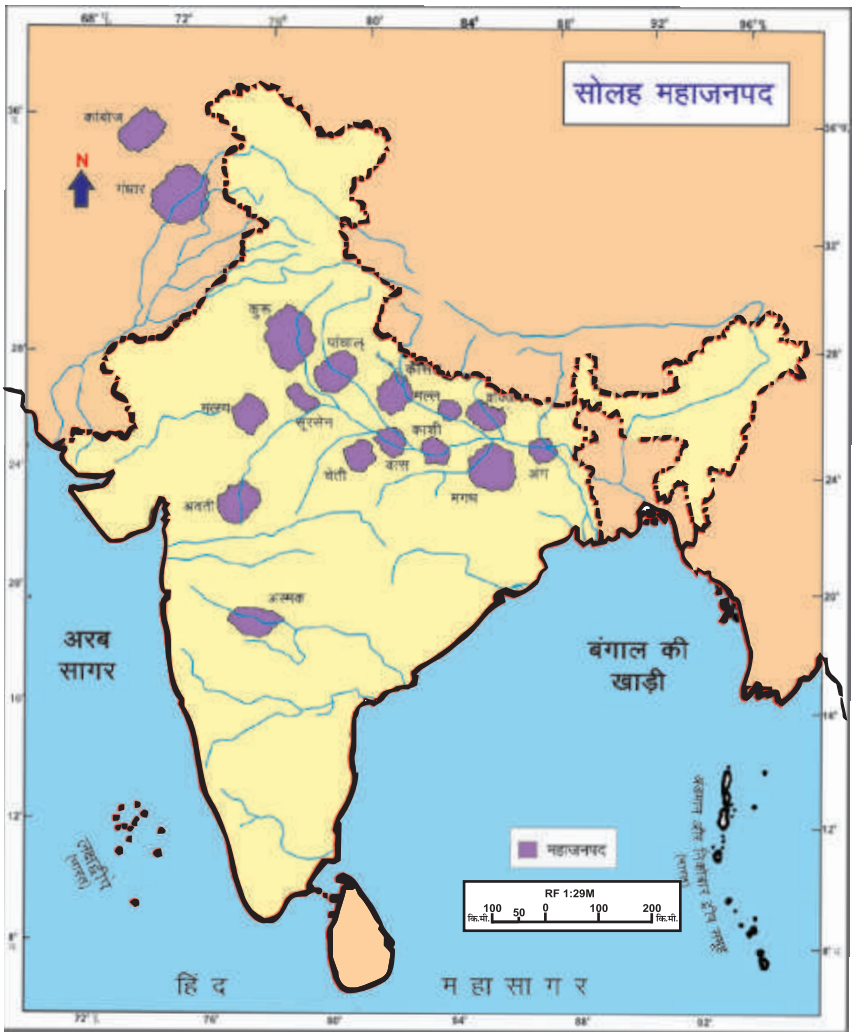

विभिन्न जनपदों, महाजनपदों तथा गणसंघों के लोगों के बीच वैवाहिक संबंध थे। वैवाहिक संबंधों के बाद भी इन जनपदों, महाजनपदों व गणसंघों के बीच साम्राज्य विस्तार को लेकर युद्ध होते रहते थे। धीरे-धीरे सोलह महाजनपदों में से चार शक्तिशाली महाजनपद बने। ये थे- अवन्ति, मगध, कौशल तथा वत्स। अपनी शक्ति बढ़ाने और सीमाओं का विस्तार करने के लिये मगध सदैव युद्धरत रहा। परिणाम स्वरूप वह सभी जनपदों तथा महाजनपदों में सर्वशक्तिमान बन गया।

मगध साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार (लगभग 544 ई.पू. से 430 ई.पू. तक)

सोलह जनपदों में मगध जनपद सबसे शक्तिशाली था। मगध को एक बड़े साम्राज्य के रूप में विकसित करने का पहला चरण हर्यंकवंश के राजा बिंबिसार के नेतृत्व में पूरा हुआ। उसने अंग को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।

इसके अलावा उसने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से अन्य राज्यों से मधुर संबंध बनाये। इसके अंतर्गत कोशल, वैशाली तथा मद्रकुल (पंजाब) तक राजनैतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाया। वह अवन्ति महाजनपद को जीत न सका, तो उसने वहाँ के शासक चण्डप्रद्योत से मित्रता कर ली और मगध को (ईसा पूर्व छठी शताब्दी में) सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य बना दिया। उसकी राजधानी राजगीर थी। उस समय इसे गिरब्रज कहते थे। जीवक इसका राजवैद्य था।

अपने पिता बिम्बिसार का वध करके अजातशत्रु ने मगध का सिंहासन संभाला। अजातशत्रु ने शासन विस्तार में आक्रामक नीति से काम लिया। उसने पिता की रिश्तेदारी का कोई लिहाज न रखा। उसने युद्धों के दौरान, नये युद्ध यंत्रों का इस्तेमाल किया। उसकी सेना के पास पत्थर फेंकने वाला **'महासिलाकटंक'** एक यंत्र था। उसके पास एक ऐसा रथ था, जिसमें गदा जैसा हथियार जुड़ा हुआ था। इससे युद्ध में लोगों को बड़ी संख्या में मारा जा सकता था। इस यंत्र को **'रथमूसल'** कहा जाता था।

अजातशत्रु के बाद उदयन मगध की गद्दी पर बैठा। इसके काल में मगध का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में छोटा नागपुर की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। उसने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र (पटना) को अपनी राजधानी बनाया।

मगध के सम्राटों का सबसे बड़ा शत्रु अवन्ति महाजनपद था। अवन्ति, उज्जैन का प्राचीन नाम है जो वर्तमान में मध्यप्रदेश का एक प्रमुख नगर है। उदयन और अवन्ति राज के बीच भी संघर्ष चला परन्तु अवन्ति महाजनपद की स्वतंत्रता बनी रही। बाद में शिशुनागवंश के राजाओं ने इसे जीत कर अपने साम्राज्य में मिला लिया गया। मगध साम्राज्य के विस्तार एवं उन्नति के निम्न कारण थे-

- इस क्षेत्र की भूमि उपजाऊ थी जिससे फसलों का अधिक उत्पादन होता था।
- मगध क्षेत्र में अत्यधिक लोहे के भण्डारों के कारण मगध की सेना ने उन्नत हथियार और औजारों का उपयोग किया।
- गंगा नदी में नौकाओं से व्यापार होता था अतः बंदरगाहों से व्यापारी काफी दूर-दूर तक आते-जाते थे।
- मगध सम्राटों की दोनों राजधानियां- राजगीर तथा पाटलिपुत्र अत्यधिक सुरक्षित थी।
- मगध की सेना के पास नये युद्ध यन्त्र थे जो अन्य सेनाओं के पास न थे।
- मगध सम्राटों के पास हाथियों की सबसे बड़ी सेना थी। पुराने जमाने में गजसेना को महत्वपूर्ण माना जाता था।

शिशुनाग वंश

शिशुनाग, काशी प्रदेश का शासक था। उसने उदयन के पुत्र नागदासक को सिंहासन से हटाकर अपने वंश की स्थापना की तथा वैशाली को अपनी राजधानी बनाया। उसकी सबसे बड़ी सफलता अवन्ति

(उज्जैन) के शासक को पराजित करने में थी। उज्जैन पर कब्जा करने में मगध को लगभग सौ साल का समय लगा। अब अवंति का क्षेत्र मगध साम्राज्य में मिल गया था।

नन्द वंश (लगभग ईसा पूर्व 363-342)

नन्द वंश का संस्थापक नन्द/नन्दिवर्धन था। पुराणों में इसे उग्रसेन भी कहा गया है। वह बड़ा योग्य, साहसी और प्रसिद्ध महत्वाकांक्षी साम्राज्यवादी सम्राट था। उसने मगध साम्राज्य का खूब विस्तार किया। उसके राजकोष में अपार धन-राशि होने के कारण उसे 'महापद्म' नंद भी कहते थे।

नन्द वंश के शासनकाल में ही सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ। सिकन्दर मकदूनिया (ग्रीस) का राजा था। वह विश्व विजय करना चाहता था। पश्चिमोत्तर सीमा से सिंधु नदी पार करके उसने भारत पर आक्रमण किया (ई.पू. 326) पंजाब के कुछ भाग पर उसने विजय प्राप्त की, किन्तु मगध के सम्राट की शक्ति के विषय में सुनकर उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। व्यास नदी के तट से ही सिकन्दर वापस लौट गया। जिन क्षेत्रों को उसने जीता था, वहाँ के प्रशासन के लिये उसने अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिये।

सिकन्दर के आक्रमण के परिणाम महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इस घटना के कारण भारत और यूनान के बीच सीधा संपर्क स्थापित हो गया। परस्पर व्यापार बढ़ा। सिकन्दर के साथ आये यात्रियों ने महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन किया है। उन्होंने सिकन्दर के अभियान का तिथि सहित वर्णन किया जिससे हमें बाद की घटनाओं को भारतीय कालक्रम को निश्चित आधार पर तैयार करने में सहायता मिलती है। नन्द की विशाल सेना में लगभग 20,000 घुड़सवार सैनिक, 2,00,000 पैदल सैनिक, 2000 रथ और लगभग 4000 हाथी थे। भारी संख्या में हाथी रखने के कारण ही मगध के राजा अधिक शक्तिशाली माने जाते थे। नन्द वंश के अंतिम शासक घनानंद का वध करके चन्द्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की नींव डाली।

राजनैतिक व प्रशासनिक जीवन शैली

पंचमार्क सिक्के

इस काल में राजा का पद बहुत शक्तिशाली हो गया था। वह अपने राज्य का प्रशासन **आमात्य** (मंत्री), **पुरोहित** (धर्मगुरु), **संग्रहत्री** (कोषाध्यक्ष), **बलिसाधक** (कर वसूलने वाले), **शौल्किक** (चुंगी वसूलने वाला), **सेनापति** ग्रामीण आदि के द्वारा चलाता था। उसे परामर्श देने के लिए परिषद होती थी जिसके सदस्य ब्राह्मण रहते थे। योद्धा और पुरोहित कर से मुक्त होते थे। राजा किसानों से उनकी उपज का छठा भाग कर के रूप में प्राप्त करता था। व्यापारियों से माल की बिक्री पर चुंगी वसूली जाती थी। इस काल के सिक्के पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। ये प्राय: ताम्बे तथा चांदी के होते थे। इन्हें आहत या ठप्पे

लगे (पंचमार्क) सिक्के कहते हैं।

कस्बों को **पुर, नगर** तथा बड़े कस्बों को **महानगर** कहते थे। उज्जयिनी, श्रावस्ती, अयोध्या, काशी, कौशाम्बी, चंपा, राजगीर, वैशाली, प्रतिष्ठान, भृगुकच्छ प्रमुख नगर थे। मकान मिट्टी तथा पक्की ईटों के होते थे। नगर के चारों तरफ प्राचीर और विशाल प्रवेश द्वार होते थे।

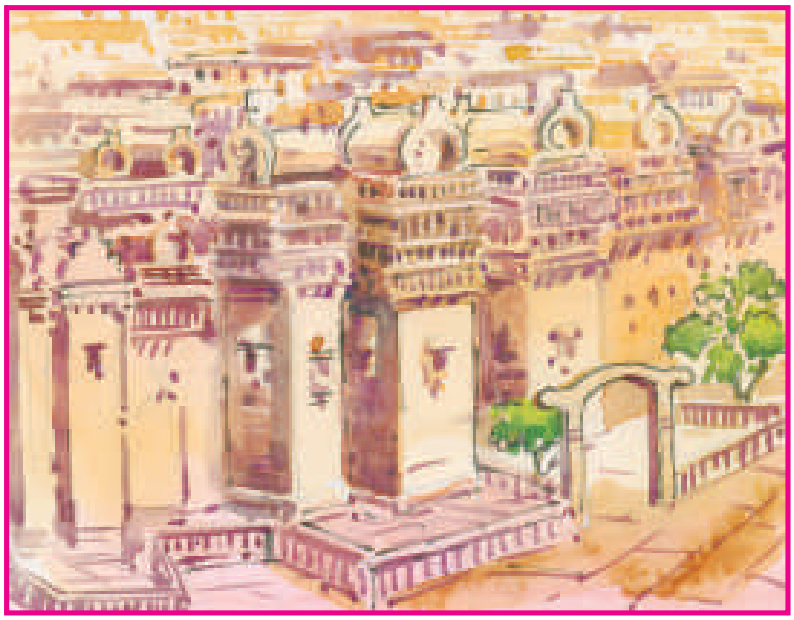

महाजनपदकालीन नगर

सामाजिक एवं धार्मिक जीवन

समाज में मुख्यत: चार वर्ण थे, परन्तु इस काल में अनेक जातियों का उदय होता भी दिखाई पड़ता है। बढ़ई, लुहार, सुनार, तेली, शराब बनाने वाले आदि जातियां बन गयी थीं। जाति जन्म से ही जानी जाती थी। कलाकारों और शिल्पकारों को संगठित किया गया। एक ही पेशे से जुड़े लोगों के संगठन को श्रेणी कहा जाता था।

धार्मिक कर्मकाण्ड और खर्चीले यज्ञों से लोग विमुख हो रहे थे। दो नये धर्मों का उदय हुआ था इनमें से एक बौद्ध धर्म है और दूसरा है जैन धर्म।

वर्धमान महावीर

महावीर का जन्म वैशाली गणराज्य में हुआ था। वर्धमान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे। सत्य की खोज में उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में ही घर छोड़ दिया। लगभग 12 वर्षों की साधना के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद लगभग 30 वर्षों तक अपने उपदेशों का प्रचार करते रहे। अंत में लगभग 527 ई.पू. (पावापुरी) में 72 वर्ष की आयु में वर्धमान महावीर को मोक्ष प्राप्त हुआ।

वर्धमान महावीर

महावीर स्वामी की मुख्य शिक्षा

- हिंसा कभी नहीं करनी चाहिए।
- सत्य का पालन करना चाहिए।
- चोरी नहीं करना चाहिए।
- संग्रह नहीं करना चाहिए।
- ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। नेपाल के तराई क्षेत्र में, लुंबिनी वन नामक स्थान पर इनका जन्म हुआ। बचपन से ही गौतम का मन ध्यान और अध्यात्मिक चिन्तन की ओर था। 29 वर्ष की उम्र में ये घर से ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकल पड़े। लगभग सात वर्षों तक भ्रमण के बाद बोध गया स्थान में, एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। तब से वे बुद्ध अर्थात प्रज्ञावान कहलाने लगे। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने अनेक वर्षों तक अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। 483 ई.पू. वैशाख पूर्णिमा को कुशीनगर में बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ। बुद्ध की शिक्षाएँ इस प्रकार से हैं-

- दुख का कारण तृष्णा है, तृष्णा से मुक्त होकर ही निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
- अष्टांगिक मार्ग* का पालन करने से दु:ख दूर हो सकते हैं।
- मनुष्य को पांच नैतिक नियम अपनाने चाहिए-
  - ❖ किसी प्राणी की हत्या नहीं करना चाहिए।
  - ❖ चोरी नहीं करना।
  - ❖ झूठ नहीं बोलना
  - ❖ मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना
  - ❖ व्याभिचार नहीं करना चाहिए।

आगे चलकर इन दोनों धर्मों ने बहुत उन्नति की। बौद्ध धर्म एशिया के विभिन्न देशों में पहुँच गया। जैन धर्म का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

---

* **अष्टांगिक मार्ग-** शुद्ध विचार, शुद्ध संकल्प, शुद्धवाणी, शुद्ध व्यवहार, शुद्ध जीवन, शुद्ध उपाय, शुद्ध ध्यान, शुद्ध समाधि का पालन करना।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

अ. जनपद किसे कहते हैं?

ब. दो गणसंघों के नाम लिखिए।

स. मगध साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?

द. महाजनपद काल के चार प्रमुख नगरों के नाम लिखिए।

य. अजातशत्रु कौन था?

र. महाजनपद किसे कहते हैं?

ल. आहत सिक्के किसे कहते हैं?

व. गणसंघ तथा जनपद क्या है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

अ. बिम्बिसार कौन था? उसने अपना साम्राज्य विस्तार कैसे किया?

ब. मगध साम्राज्य के विस्तार के प्रमुख कारण लिखिए।

स. गौतम बुद्ध का जीवन परिचय लिखते हुए उनके प्रमुख उपदेश लिखिए।

द. महावीर स्वामी का जीवन परिचय लिखते हुए उनकी प्रमुख शिक्षाओं को लिखिए।

य. महाजनपदयुगीन प्रशासन व जीवन शैली के बारे में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. नन्दवंश के शासन काल में ..... का भारत पर आक्रमण हुआ।

ब. शिशुनाग ..... का शासक था।

स. महावीर का जन्म ..... में हुआ था।

4. कोष्ठक में दिए शब्दों में से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

अ. बिम्बिसार ..... वंश का था। (हिरण्यक/मौर्य)

ब. चण्डप्रद्योत ..... महाजनपद का शासक था। (अवन्ति/अंग)

स. बुद्ध का जन्म ..... नामक स्थान पर हुआ था। (लुंबिनी/वाज्जि)

❖❖❖❖

पाठ 12

मौर्य साम्राज्य

आइए सीखे

- मौर्य साम्राज्य का उदय कैसे हुआ?
- मौर्य काल के राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की विशेषताएँ क्या थी?
- मौर्यकालीन कला, संस्कृति तथा साहित्य की विशेषताएँ क्या थी?

पिछले पाठ में आपने जनपद, महाजनपद और मगध साम्राज्य के उत्कर्ष के बारे में पढ़ा है। आप यह भी जानते हैं कि नन्द राजाओं के समय सिकन्दर ने कई देशों को जीतकर अपना साम्राज्य विस्तृत किया था। तब मगध पर नन्द वंश के शासक महापद्म नन्द का शासन था। नन्द राजा के पास अपार सम्पत्ति थी और वह भारत का शक्तिशाली राज्य माना जाता था। परन्तु नन्द राजा बहुत ही क्रूर शासक था इसलिए वह जनता में लोकप्रिय नहीं था। नन्द राजा से सत्ता छीनने का कार्य चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया।

चन्द्रगुप्त ने चाणक्य (कौटिल्य) के सहयोग से नन्द राजा को गद्दी से हटाने की योजना बनाई। सिकन्दर के वापस लौट जाने के बाद, चन्द्रगुप्त ने पंजाब की असंतुष्ट जातियों को संगठित कर यूनानियों को भारत से खदेड़कर पूरे पंजाब पर अधिकार कर लिया और नन्द राजवंश का तख्ता पलट कर 322 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (बिहार में स्थित वर्तमान पटना)थी।

जब राजा अपने राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लेते है तो उनके राज्यों को साम्राज्य कहा जाता है।

इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिकन्दर द्वारा (सिन्धु व अफगानिस्तान क्षेत्र के) नियुक्त प्रशासक सेल्युकस को हराया और इस क्षेत्र को अपने राज्य में मिला लिया। चन्द्रगुप्त से पराजित होने के बाद सेल्युकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया तथा मेगस्थनीज को अपना राजदूत बनाकर पाटलिपुत्र भेजा। मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में उस समय के समाज का वर्णन किया है।

बिन्दुसार

यह चन्द्रगुप्त का पुत्र था तथा अपने पिता द्वारा गद्दी पर बैठाया गया था। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य अंतिम दिनों में जैन मुनि हो गया था। बिन्दुसार ने मैसूर तक अपने राज्य का विस्तार किया। कलिंग और सुदूर दक्षिण के कुछ राज्यों को छोड़कर लगभग सारा देश उसके साम्राज्य में सम्मिलित था। दक्षिण के राज्यों से बिन्दुसार की मित्रता थी। इस कारण उन पर उसने हमले नहीं किये। परंतु कलिंग (वर्तमान उड़ीसा का एक भाग) के लोग मौर्य साम्राज्य के साथ नहीं रहना चाहते थे। इसलिये मौर्यों ने उन पर आक्रमण किया। यह काम चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक ने किया।

सम्राट अशोक एवं उसका हृदय परिवर्तन

सम्राट अशोक मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक हुआ था। उसे अपने दादा चन्द्रगुप्त और पिता बिन्दुसार से एक विशाल और सुव्यवस्थित साम्राज्य विरासत में मिला था। अशोक ने कलिंग राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाने का निश्चय किया। अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में उसने कलिंग पर विजय प्राप्त की । युद्ध में दोनों ही सेनाओं को भारी नुकसान हुआ। एक लाख सैनिक मारे गये तथा लाखों लोग घायल हुए। भीषण नरसंहार और जनता के कष्ट के दृश्य को देख अशोक का मन विचलित हो गया।

युद्ध में अकारण मारे गये लोगों तथा घायल सैनिकों की पीड़ित स्त्रियों और बच्चों को देखकर भी उसे बड़ी पीड़ा हुई। उसने भविष्य में कभी युद्ध न करने का प्रण किया। सम्राट अशोक ने अपने तीस साल

के शासन में कलिंग युद्ध के बाद कोई युद्ध नहीं लड़ा। उसने लोगों को शांतिपूर्वक रहने की शिक्षा दी। उसका विशाल साम्राज्य सुदूर दक्षिण को छोड़कर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में था। अशोक ने इतने बड़े साम्राज्य पर शांतिपूर्वक और धर्म पर चलते हुये शासन किया। उसने लोगों को अनेक संदेश दिये, जो आज भी चट्टानों, स्तंभों, शिलाओं पर खुदे (देखे जा सकते) हैं।

ये शिलालेख पत्थरों तथा स्तंभों पर खुदवाकर ऐसे स्थानों पर लगवाए गए जहां लोग एकत्रित होकर उन्हें पढ़े और शिक्षा ग्रहण करें। अशोक के शिलालेख ब्राह्मी, खरोष्ठी व अरेमाइक लिपि में मिलते हैं। इनकी भाषा प्राकृत है। ब्राह्मी लिपि भारत में, खरोष्ठी लिपि पाकिस्तान क्षेत्र में तथा अरेमाइक लिपि अफगानिस्तान क्षेत्र में प्रचलित थी। अत: शिलालेखों में आम जनता की भाषा व लिपि का प्रयोग किया गया ताकि वे अपने सम्राट के विचारों को समझे।

अशोक का धर्म- कलिंग युद्ध के परिणामस्वरूप सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया। उसने युद्ध त्याग करके 'धम्म विजय' का मार्ग अपनाया। बाद में अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया था। वह ऊँचे मानवीय आदर्शों में विश्वास करता था, जिससे लोग सदाचारी बने और शांति से रहे। इन्हें उसने 'धम्म' कहा। संस्कृत के धर्म शब्द का प्राकृत रूप 'धम्म' है। धर्म को राजाओं के माध्यम से सभी प्रांतों में शिलालेखों के रूप में खुदवाया। अशोक चाहता था कि सभी धर्मों के लोग शांतिपूर्वक रहें। छोटे, बड़ों की आज्ञा माने। बच्चे, माता-पिता का कहना सुने। मालिक अपने नौकरों से अच्छा व्यवहार करे। वह मनुष्य और पशु दोनों की हत्या का विरोधी था। उसने धार्मिक अनुष्ठानों में पशु-बलि पर रोक लगा दी। अशोक चाहता था कि लोग मांस न खाये इसलिये उसके खुद के रसोई घर में प्रतिदिन पकाएं जाने वाले हिरण और मोर के मांस पर रोक लगा दी।

अशोक का प्रशासन- अशोक अपनी प्रजा की अपने बच्चों की तरह देखभाल करता था। उसने प्रजा की भलाई के अनेक कार्य किए जैसे-

- पुरों व नगरों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए अच्छी सड़कें बनवाई ताकि लोग सरलता से यात्रा कर सकें।
- राहगीरों को तेज धूप से बचाव के लिये सड़कों के दोनों ओर छाया व फलदार वृक्ष लगवाएं।
- पानी के लिये कुएं, बावड़ी, बाँध बनवाये।
- यात्रियों के रुकने के लिए अनेक धर्मशालाएं बनवाई।
- रोगियों के लिए चिकित्सालय खुलवाए एवं नि:शुल्क औषधियों को देने की व्यवस्था करवाई।
- पशुओं एवं पक्षियों के लिये अलग से चिकित्सा केंद्रों का प्रबंध किया इन्हें पिंजरापोल कहा जाता था।

राजधानी पाटलिपुत्र में प्रशासन के प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष रहते थे। सम्राट को सलाह देने के लिए 'मंत्रि-परिषद्' थी। साम्राज्य को चार प्रांतों में बांटा गया था। प्रत्येक प्रान्त का शासन एक राज्यपाल सँभालता था, जो अधिकतर राजकुमार होता था।

प्रत्येक प्रान्त को जिलों में बांटा गया था तथा जिलों में गाँवों को सम्मिलित किया गया था। राजाज्ञा

के पालन व कानून व्यवस्था के लिए कई अधिकारी थे। कुछ अधिकारी कर वसूली का काम करते थे और कुछ न्यायाधीश होते थे। गांवों में अधिकारियों के दल होते थे। जो पशुओं का लेखा-जोखा रखते थे। नगरों की व्यवस्था को नगर परिषदें देखती थी।

इन अधिकारियों के अलावा उसने 'धर्म महामात्य' भी नियुक्त किये थे, जो घूम-घूम कर लोगों की समस्याएं सुनते, स्थानीय कामों की जांच-पड़ताल करते और लोगों को धर्मानुसार आचरण करने और मेल-जोल से रहने की प्रेरणा देते थे।

पड़ोसी देशों से संबंध- सम्राट अशोक ने दूर-दूर तक के राज्यों में अपने धर्मदूत भेजे तथा उनसे मित्रता की। उसने श्रीलंका में धर्म प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संधमित्रा को भेजा। श्रीलंका के राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इसी तरह दूसरे कई देशों के लिए उसने अपने दूत भेजे थे।

मौर्यकालीन समाज - मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इंडिका', में जो कि यूनानी भाषा में लिखी थी, इसमें उस समय के भारतीय समाज का वर्णन है जैसे, अधिकतर लोग खेती करते थे और लोग सुखपूर्वक गाँवों में रहते थे। चरवाहे और गड़रिये भी गाँव में ही रहते थे। बुनकर, बढ़ई, लोहार, कुम्हार और अन्य कारीगर नगरों में रहते थे। ये राजा के उपयोग की वस्तुएं तथा नागरिकों के लिए सामान बनाते थे। व्यापार उन्नति पर था और व्यापारी दूर-दूर तक अपना माल बेचने जाया करते थे। ये लोग समुद्र के पार फारस की खाड़ी होते हुए पश्चिमी देशों को जाते थे। बड़ी संख्या में लोग सेना में भर्ती होते थे। सैनिकों को अच्छा वेतन मिलता था। समाज में ब्राह्मण, जैन और बौद्ध भिक्षुओं का सम्मान किया जाता था। इस काल में चांदी सोने व तांबे के सिक्के चलते थे। पर्दा प्रथा नहीं थी। जीवन सरल सुखद व मितव्ययिता पूर्ण था।

- ❖ मेगस्थनीज यूनानी लेखक था। वह अवोशिया के क्षत्रप (शासक) के साथ रहता था और वहां से वह सेल्यूकस द्वारा अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य की राजसभा में पाटलिपुत्र भेजा गया था।
- ❖ सारी दुनिया ने भारत से अंक तथा दशमलव प्रणाली सीखी। अरबों ने भारत से सीखा तथा यूरोपवासियों को सिखाया।
- ❖ भारत से बौद्ध धर्म चीन पहुँचा। वहां से यह धर्म कोरिया और जापान गया।

मध्यप्रदेश में मौर्यकाल के स्तूप साँची, भरहुत (सतना), सतधारा, तुमैन (जिला गुना), बरहट (जिला रीवा), उज्जैन आदि जगहों पर बने हैं। अशोक का साँची स्तूप, जिस पर चार सिंह बने हैं, अब साँची के संग्रहालय में रखा है। अशोक के स्तंभ लेख साँची व बरहट से मिले हैं तथा शिलालेख दतिया के पास गुजर्रा गाँव तथा भोपाल के पास पानगुराड़िया (नचने की तलाई) स्थान पर है। जबलपुर के निकट रूपनाथ स्थल से अशोक का लघु शिलालेख मिला है। साँची के बौद्ध स्मारक विश्व प्रसिद्ध है। इसे विश्वदाय भाग में सम्मिलित किया गया है। उज्जैन में अशोक 11 वर्ष अवन्ति का गवर्नर रहा, उसके पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संधमित्रा का जन्म उज्जैन में हुआ था। अशोक की एक रानी विदिशा की थी।

मौर्य कला - अशोक ने अपने संदेश चमकीली शिलाओं तथा स्तंभों पर खुदवाएं। स्तंभों के शीर्ष पर हाथी, साँड या सिंह की प्रतिमा बनाई गई थी। सारनाथ के स्तंभ पर चार सिंहों की आकृति बनी हुई

है। ये स्तंभ आज भी देखे जा सकते हैं। सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद अशोक के सारनाथ स्तंभ की चार सिंहों वाली कलाकृति को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया। यह सिंह स्तंभ आज सारनाथ के संग्रहालय में रखा है। इस काल में कई स्तूप, स्तंभ तथा भिक्षुओं के रहने के लिए बिहार व पर्वतों को काटकर गुफाएं बनवायी गयी। मूर्तियों में यक्ष और यक्षणी तथा पशुओं की मूर्तियाँ बनायी गयी थीं।

मौर्य साम्राज्य का पतन- सम्राट अशोक और उसके पूर्वजों द्वारा स्थापित विशाल मौर्य साम्राज्य लगभग सौ वर्षों से कुछ अधिक समय तक चलता रहा और अशोक की मृत्यु होने के पश्चात वह छिन्न-भिन्न होने लगा। इतने विशाल साम्राज्य में दूर-दूर तक सम्पर्क व प्रशासन करने में कठिनाइयाँ होतीथी। अशोक के उत्तराधिकारी उसकी तरह कुशल और योग्य नहीं थे। विशाल साम्राज्य के संचालन के लिए आवश्यक राशि भी कर के रूप में वसूल नहीं कर पा रहे थे। वे राजा जो अशोक के अधीन थे, अब स्वतंत्र होने लगे। इस प्रकार साम्राज्य कमजोर होता चला गया। फूट का परिणाम यह हुआ कि बैक्ट्रीया देश के यूनानी शासक ने पश्चिमोत्तर भाग पर हमला कर दिया। उस क्षेत्र के राजा को किसी अन्य राजा ने सहायता नहीं दी और वह पराजित हुआ। 185 वर्ष ई.पू. में पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ का वध कर मौर्य साम्राज्य का अंत कर दिया और शुंग वंश की स्थापना हुई।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ?

ब. अशोक की किस कलाकृति को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया है?

स. अशोक के शिलालेख कौन सी लिपि में मिलते हैं?

द. धर्म महामात्य क्या काम करते थे?

य. सम्राट को सलाह कौन देता था?

र. साम्राज्य किसे कहते हैं?

ल. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की?

व. अशोक किस धर्म को मानता था?

श. अशोक ने अपने पुत्र-पुत्री को किस देश में धर्म प्रचार के लिए भेजा था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए-

अ. चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य विस्तार के बारे में वर्णन कीजिए।

ब. मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों को लिखिए।

स. सम्राट अशोक ने प्रजा की भलाई के लिए कौन-कौन से कार्य किए?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. मौर्य साम्राज्य की राजधानी ..... थी।

ब. अशोक ..... धर्म का अनुयायी था।

स. चन्द्रगुप्त के गुरु का नाम ..... था।

द. ..... चन्द्रगुप्त के राज्य में यूनानी राजदूत था।

4. सही जोड़ी बनाइए-

क	ख
अ. मेगस्थनीज की पुस्तक	साँची, सतधारा
ब. बौद्ध स्तूप	सारनाथ
स. गुर्जरा शिलालेख	इंडिका
द. चार सिंहों वाला स्तंभ	दतिया

प्रोजेक्ट कार्य

- नोटों, सिक्को, डाक टिकटों पर अशोक चिन्ह को देखिए और लिखिए उसमें आपको क्या-क्या दिखाई देता है।

पाठ 13

समुदाय एवं सामुदायिक विकास

आइए सीखें

- समुदाय का क्या अर्थ है?
- सामुदायिक विकास व जनसहयोग क्या हैं?
- जनसहयोग प्राप्त करने की दिशा में नगर/ग्राम स्तर की विभिन्न समितियों की जानकारी एवं उनके कार्य क्या हैं?
- सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का क्या महत्व है।

समुदाय का अर्थ

कोई भी गाँव, प्रान्त व देश अपने आप में समुदाय है। इस समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं। ये अपनी-अपनी प्रथाओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों के अनुसार तीज-त्यौहार आदि मनाते हैं तथा विवाह आदि संस्कार करते हैं।

कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय की रचना करते हैं, अत: समुदाय को परिवारों का परिवार भी माना जाता है।

समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह हैं, जिसमें कुछ अंशों में 'हम' की भावना पाई जाती है। समुदाय का निवास स्थान व क्षेत्र निश्चित होता है।

समुदाय की विशेषताएँ

एक समुदाय की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं, इनमें से कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है-

- समुदाय व्यक्तियों का समूह होता है।
- कोई भी गाँव, प्रान्त, देश अपने आप में समुदाय है।
- समुदाय अपना विकास स्वत: करता है।
- समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं।
- समुदाय द्वारा किया गया कोई भी कार्य स्थाई प्रकार का होता है।
- समुदाय अपने सदस्यों में अपनेपन और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं।

- समुदाय के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।
- समुदाय एक आत्मनिर्भर समूह होता है।

सामुदायिक विकास व जनसहयोग

मनुष्य परिवारों में रहते हैं और बढ़ते हैं। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य परिवारों में रहते हैं। कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय बनाते हैं। समुदाय में शामिल परिवार अलग-अलग व्यवसाय करते हुए भी एकजुट रहते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से मनुष्य क्रमश: धीरे-धीरे उन्नति कर विभिन्न अवस्थाओं अर्थात शिकारी, कंदमूल व फल संग्रहित करने, पशुपालन आदि स्थितियों से गुजर कर वह स्थाई किसान बना। उसने गाँव और नगर बसाए। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, आवास व वस्त्र) से आगे के विषय में सोचने लगा। मनुष्य के निवास स्थानों में प्राकृतिक विविधता के कारण उसकी जीवन शैली, व्यवसाय, रीति-रिवाज, त्यौहार, पहनने-ओढ़ने का ढंग, खान-पान की आदतों में भी परिवर्तन होता गया। स्थानीय प्रतिकूलताओं के बावजूद भी लोगों ने अपना सामुदायिक जीवन स्वत: विकसित कर लिया।

जन सहयोग

जन सहयोग से हमारा आशय, स्थानीय सामुदायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानीय लोगों द्वारा सहयोग प्रदान करना है।

समुदाय के विकास के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और शहरी समुदाय दोनों के लिए उपयुक्त है। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों से परिचित हैं और स्थानीय जरूरतों को भली-भांति समझते हैं। यह उनके स्वयं के हित में है, कि वे एक साथ मिलजुल कर अपनी समस्याओं का हल निकालें। जैसे क्षेत्र में पेयजल या शिक्षा या अस्पताल जैसी मूल एवं मानवीय व्यवस्थाएँ नहीं हैं तो वे उसके लिए उचित अथवा वैकल्पिक उपाय करें। वे अपनी समस्याओं को स्वयं सुलझा सकें तथा किसी पर आश्रित न रहें। इस प्रकार लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होगा।

जन सहयोग द्वारा लोगों में अपनी दशा सुधारने का उत्साह पैदा होता है। जनसहयोग से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बाँटने में सहायता मिलती है।

ग्राम/नगर स्तरों पर विभिन्न समितियाँ

सामुदायिक विकास में स्थानीय नागरिकों की भूमिका बहुत जरूरी है। सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग प्राप्त करने की दिशा में ग्राम पंचायत व नगर स्तर पर विभिन्न समितियों की स्थापना की गई है। इन समितियों के माध्यम से प्रजातंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण नीचे के स्तर (केंद्र से ग्राम/नगर) तक किया गयाहै।

ग्राम स्वराज व्यवस्था के अंतर्गत 26 जनवरी 2001 से ग्राम स्वराज की स्थापना की गई है।

ग्राम/नगर स्तर पर निम्नलिखित समितियों का गठन केंद्र अथवा राज्य सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुसार किया जाता है-

1. ग्राम/नगर विकास समिति
2. सार्वजनिक सम्पदा समिति
3. कृषि समिति
4. स्वास्थ्य समिति
5. ग्राम/नगर रक्षा समिति
6. अधो संरचना समिति
7. शिक्षा समिति
8. सामाजिक न्याय समिति

उपरोक्त समितियों के माध्यम से स्थानीय निवासियों में जागरूकता पैदा कर सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग की भावना विकसित करने के अवसर प्रदान किये गये हैं।

वर्तमान में जिन क्षेत्रों में जनसहयोग की विशेष आवश्यकता है। उन क्षेत्रों में कार्य करने वाली समितियों का परिचय इस प्रकार है-

(1) ग्राम/वार्ड शिक्षा समिति-

इस समिति का कार्य ग्राम/वार्ड में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में अपना सहयोग देना है। यह समिति विद्यालय के प्रबंधन में भी सहयोग देती है।

(2) ग्राम/वार्ड रक्षा समिति-

यह समिति ग्राम या वार्ड में लोगों की सुरक्षा संबंधी कार्यों में सहयोग करती है। साथ ही यह समिति अपराधों की रोकथाम में पुलिस प्रशासन का सहयोग करती है।

(3) पालक-शिक्षक संघ-

मध्यप्रदेश में जन शिक्षा अधिनियम के अंतर्गत प्रदेश के प्रत्येक शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय में पालक शिक्षक संघ (अब इसे शाला प्रबंधन समिति के नाम से जाना जाता है) का गठन किया गया है। यह संघ विद्यालयों में बच्चों के शत-प्रतिशत प्रवेश, उनकी विद्यालयों में नियमित उपस्थिति, बच्चों के लिये विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन व्यवस्था, बच्चों की शैक्षिक प्रगति, विद्यालयों में शिक्षकों की समुचित व्यवस्था एवं सहायता करने हेतु कार्य करती है।

सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का महत्व-

आदिकाल से ही भारत देश विभिन्न धर्मों, जातियों, जनजातियों की कर्मभूमि रहा है। जाति प्रथा,

ग्राम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार व्यवस्था हमारे भारतीय समाज का प्रमुख आधार रहे है।

सामाजिक समरसता-

समाज में व्यक्तियों का एक-दूसरे के सुख-दु:ख में समान रूप से शामिल होना, व्यवसाय, धर्म (पंथ) अलग-अलग होने के बावजूद एक-दूसरे के समारोहों में शामिल होना तथा मिल-जुलकर रहना सामाजिक समरसता के उदाहरण है।

समुदाय में किसान, बुनकर, दर्जी, बढ़ई, लोहार, दुकानदार, मजदूर आदि होते हैं। समुदाय में आजकल नर्सों, डाक्टरों, अध्यापकों, पुलिस, विद्युतकर्मियों आदि की सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। समुदाय में प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने की कोशिश करता है तथा दूसरे परिवारों की सहायता भी करता है। समुदाय इस प्रकार पारस्परिक आर्थिक निर्भरता को बढ़ावा देता है। यह परिवार के सदस्यों को सामाजिक भलाई के लिए सहयोग देता है। समुदाय अपने सदस्यों में सामाजिक समरसता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देता है।

समुदाय में सदस्य सार्वजनिक सुविधाओं को बांटते हैं। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।

समुदाय का महत्व-

व्यक्ति या समुदाय परस्पर संपर्क में आकर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। संपर्कों के कारण एक दूसरे के रीति-रिवाजों, विश्वासों, परम्पराओं एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझने व उनका आदर करने में मदद मिलती है।

समुदायों के निवास के क्षेत्र बदलने से जीवनयापन के तौर-तरीकों में बदलाव आ जाता है।

वर्तमान में ग्रामीण/शहरी समुदायों में परिवर्तन एवं विकास के चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं। जैसे ग्रामों में संचार एवं विद्युत की सुविधाएँ बढ़ना, पक्के मकान, पक्की सड़कों का विकास, यातायात सुविधाओं का विस्तार आदि। समुदाय के विकास में शिक्षा के प्रसार एवं प्रभाव ने भी असर दिखाया है। इससे समुदाय का महत्व बढ़ा है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. परिवारों का परिवार किसे माना जाता है?

ब. जन सहयोग क्या है?

स. सामाजिक समरसता से आप क्या समझते हैं?

द. ग्राम एवं नगर स्तर पर गठित विभिन्न समितियों के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. समुदाय का क्या अर्थ है? समुदाय की कोई तीन विशेषताएं बताइये।

ब. समुदाय के विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी का क्या महत्व है?

स. पालक शिक्षक संघ के विषय में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

अ. समुदाय ..... का समूह होता है।

ब. जन्म से मृत्यु तक मनुष्य ..... में रहते हैं।

स. ..... से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बांटने में सहायता मिलती है।

द. ग्राम स्वराज की स्थापना ..... से की गई।

य. समुदाय अपने सदस्यों में ..... और ..... की भावना को बढ़ावा देता है।

4. निम्नलिखित में से असमान छांटिए-

अ. (i) शिक्षा समिति (ii) समुदाय (iii) रक्षा समिति (iv) पालक शिक्षक संघ

ब. (i) गाँव (ii) प्रान्त (iii) वन (iv) देश

प्रोजेक्ट कार्य

- जनभागीदारी के कार्य करते हुए शहरों अथवा गांवों के लोगों के कुछ चित्र एकत्रित कीजिए।
- लोगों द्वारा किए गये किसी एक जनभागीदारी के कार्य के बारे में लिखिए।

❖❖❖❖

पाठ 14

जनजातीय समाज

आइये सीखें

- जनजातियाँ क्या हैं?
- जनजातीय समाज में संगठन।
- जनजातियों का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनजीवन।
- संविधान में जनजातियों के लिए क्या व्यवस्थाएँ हैं?

हमारे देश में कई जातियों तथा धर्मों के लोग निवास करते हैं। इनमें से कुछ वनांचलों में रहते हैं। इन लोगों की अपनी जीवन शैली, भाषा, संस्कृति तथा परंपराएँ होती हैं। नगरीय समाज से इनका सम्पर्क सीमित हद तक होता है। सुदूर जंगलों में इनका निवास होने से तथा विशिष्ट जीवन शैली के कारण इन्हें आदिवासी, वनवासी, जनजाति, गिरिजन या वन्य जातियों के नाम से भी जाना जाता है। आदिवासी शब्द से आशय, संबंधित स्थान के मूल निवासी से है।

जनजातियों की प्रमुख विशेषताएँ

1. एक जनजाति एक निश्चित भू-भाग में निवास करती है।
2. इनकी प्राय: अपनी भाषा (बोली) होती है।
3. एक जनजाति के सदस्यों की अपनी संस्कृति रहन-सहन व जीवन शैली होती है। एक जनजाति के सदस्य अपनी संस्कृति के नियमों का पालन करते हैं।
4. एक जनजाति के सदस्य अपनी ही जनजाति में विवाह सम्बन्ध बनाते हैं।

संविधान निर्माताओं ने स्वतंत्र भारत को एक कल्याणकारी राज्य बनाने की कल्पना की थी। अत: समाज के ऐसे वर्ग जो अपेक्षाकृत कम प्रगति कर पाये थे या पिछड़े थे उनके लिये संविधान में विशेष प्रावधान किये गये। आदिवासी या जनजातियाँ भी समाज के अन्य वर्गों की तुलना में पिछड़े रह जाने के कारण उनके लिये भी संविधान में विशेष प्रावधान किये गये हैं। प्रत्येक राज्य में कौन से आदिवासी या जनजाति वर्ग इन विशेष प्रावधानों का लाभ प्राप्त करने के पात्र होंगे यह संविधान में स्पष्ट किया गया है। प्रत्येक राज्य के लिये इन जनजातियों की अनुसूची तैयार कर संविधान में शामिल की गई हैं। अत: इन्हें अनुसूचित जनजातियाँ कहा जाता है।

केवल वे जनजातियाँ अनुसूचित जनजातियाँ कहलाती हैं, जो सरकार द्वारा तैयार की गई संविधान की अनुसूची में सम्मिलित हैं।

जनजातीय समाज में संगठन

समाज चाहे आदिम हो या आधुनिक, प्रत्येक समाज की एक संरचना होती है। समाज का अपना संगठन होता है, जिसके कारण समाज के सदस्य एकजुट रहते हैं।

सामाजिक संगठन का तात्पर्य है- ''सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित रखना।''

जनजातियों में सामाजिक संगठन के अंतर्गत नातेदारी, विवाह, परिवार, वंश समूह, गोत्र आदि का विशेष महत्व है।

जनजातियों में उनके निवास की प्रकृति एवं स्थानीय आधार पर खानाबदोशी (घुमन्तू) समूह, जनजाति आदि भागों में बाँटा जा सकता है। जनजातियों के कुछ सामाजिक संगठन इस प्रकार हैं-

(1) गोत्र संगठन- जनजाति का कोई न कोई गोत्र अवश्य होता है तथा एक गोत्र के सदस्य आपस में भाई-बहन माने जाते हैं। एक गोत्र के सदस्य आपस में विवाह नहीं करते हैं।

(2) खानाबदोशी समूह- इन समूहों के लोग घुमक्कड़ होते हैं तथा एक निश्चित भू-भाग में निरंतर घूमते रहते हैं। इनका जीवन कठोर होता है।

ऐसे प्रत्येक समाज में कई छोटे-छोटे सामाजिक समूह होते हैं, जो मनुष्यों के आपसी संबंधों के फलस्वरूप बनते हैं। ये समूह अलग-अलग होते हुए भी संगठित रहते हैं। ऐसे संगठित सामाजिक स्वरूप को 'सामाजिक संगठन' कहते हैं।

जनजातियों का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनजीवन

आर्थिक जनजीवन

जनजातियों की अर्थव्यवस्था उन्नत समाज की अर्थव्यवस्था से भिन्न होती हैं। इनकी आवश्यकताएं सीमित होती हैं। ये अपनी सीमित आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। ये जनजातियां कृषि, वन उपज संग्रह तथा मजदूरी करके अपना जीवनयापन करती हैं। इनकी काफी बड़ी संख्या वन क्षेत्रों में निवास करती है। सरकारी नीतियों व प्रयासों के कारण इन जनजातियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

उद्योग-धंधों में विस्तार के कारण जनजाति के लोग रोजगार के लिये नगरों व शहरों की ओर आकर्षित हुए हैं तथा उत्खनन, निर्माण कार्य, परिवहन, व्यापार और अन्य सेवाओं में भागीदारी कर रहे हैं। उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य करने से अर्थव्यवस्था को गति मिली है।

वनोपज संग्रह

मध्यप्रदेश में जनजातियों में विशेषकर गोंड एवं भील जनजाति के लोग निवास करते हैं। इनकी जीविकोपार्जन का एक प्रमुख साधन वनोपज संग्रह है। वनोपज संग्रहण में तेंदू, अचार, हर्रा, बहेड़ा, महुआ, सालबीज आदि वनोपज के साथ कंदमूल व शहद का संग्रहण करना गोंडी एवं भीली जनजातियों का प्रमुख आर्थिक क्रियाकलाप है। कुछ जनजाति विशेषकर गोंड एवं बैगा वनौषधि से इलाज करने का भी कार्य करते हैं। वनोपज एकत्र करने के अतिरिक्त बाँस की विभिन्न वस्तुओं का निर्माण, बढ़ईगिरी, लोहे के औजार बनाना, बोझा ढोने, कृषि व कृषि मजदूरी का कार्य भी करते हैं।

सामाजिक जनजीवन

जनजाति के लोग प्रकृति की गोद में सरल जीवन व्यतीत करते हैं। कुछ जातियाँ खानाबदोश हैं। उनकी सरल जीवनशैली में रीति-रिवाजों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

जनजातीय समाज की अपनी परम्पराएँ और मान्यताएँ होती हैं। इन्हीं के अनुसार ये अपने बच्चों के नामकरण व विवाह संस्कार करते हैं। इनके कुछ परिवारों में पिता तथा कुछ परिवारों में (दक्षिण भारत की कुछ जनजातियों में) माता मुखिया होती हैं।

जनजातीय समाजों में पुत्री का जन्म भार स्वरूप नहीं माना जाता। उनमें परम्पराएं, रीति-रिवाज, सामाजिक निषेध आदि बातों का पालन किया जाता है। भील लोग बच्चे के जन्म के छठे दिन छटी मनाते हैं। गोंड़ी जनजाति में बच्चे के जन्म पश्चात रात्रि में महिलाएँ लोक गीत का गायन करती हैं तथा ये मृतक का विधिवत अग्नि संस्कार करते हैं, अग्नि-संस्कार के तीसरे दिन मुण्डन, घर द्वार की साफ-सफाई व स्नान सामूहिक तौर पर किया जाता है.

सांस्कृतिक जनजीवन

जनजातियों की अपनी अलग पहचान व संस्कृति है। संगीत और नृत्य उनकी संस्कृति के अभिन्न

अंग है। कृषि कार्यों, त्योंहारों आदि के अवसरों पर गाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के गीत होते है। संस्कृति से संबंधित नियमों की अवहेलना करने पर कठोर सामाजिक दंड दिया जाता है। जनजाति के मुखिया व बड़े बुजुर्ग अपने सांस्कृतिक नियमों के पालन को सुनिश्चित करते हैं। ये दंडों का निर्धारण भी करते हैं। निवास और व्यवसायों में समयगत परिवर्तन के कारण वर्तमान में इनकी संस्कृति में बदलाव भी होने लगा है।

पिठौरा शैली का चित्र

भील जनजाति में होली के समय मनाया जाने वाला उत्सव 'भगोरिया हाट' का विशेष महत्व होता है। भगोरिया, घेड़िया आदि नृत्य प्रमुख होते हैं। इनके भित्तिचित्रों में पिठौरा-शैली के चित्र बहुत लोकप्रिय हैं।

गुदना

आदिम जनजातियों के लोगों में अपने शरीर पर शुभचिह्न, पशु पक्षियों और गहनों के चित्र, नाम इत्यादि का शरीर पर स्थायी अंकन करवा लेने की प्रथा लोकप्रिय है। इस अंकन को **'गुदना'** कहा जाता है। जनजातियों के लोगों का विश्वास होता है कि गुदना उनके जीवन भर के आभूषण हैं।

संविधान में जनजातीय कल्याण के लिए कुछ व्यवस्थाएँ

जनजातीय विकास के लिए हमारे संविधान निर्माता भी सजग रहे एवं जनजातियों के विकास के लिए संवैधानिक प्रावधान किये हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध धर्म, वंश, जाति, लिंग आदि के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं करेगा।
2. सार्वजनिक स्थलों, दुकानों, सड़कों, कुंआ, तालाबों आदि के प्रयोग से कोई किसी को नहीं रोकेगा।
3. व्यवसायों को स्वतंत्र रूप से करने की व्यवस्था की गई है।
4. शिक्षण संस्थाओं में धर्म, जाति, वंश अथवा भाषा के आधार पर प्रवेश से नहीं रोका जावेगा।
5. लोक सभा, विधान सभाओं, पंचायतों एवं स्थानीय निकायों में इन वर्गों के लिये स्थानों के आरक्षण की व्यवस्था की गई है।
6. संघ एवं राज्य सरकारों की सेवाओं में भी आरक्षण की व्यवस्था की गई है।

संविधान की मूल भावना में यह है कि इन वर्गों के कल्याण एवं विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन समर्पित भाव से किया जावेगा, ताकि ऐसे समाज की स्थापना हो सके, जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपने पूर्ण सामर्थ्य से उसके व्यक्तित्व का विकास हो।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) आदिवासी शब्द का आशय बताइए।

(ब) जनजाति किसे कहते हैं?

(स) मध्यप्रदेश की कोई दो जनजातियों के नाम लिखिए।

(द) सामाजिक संगठन किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) जनजातियों की कोई चार विशेषताएँ बताइये।

(ब) भारतीय संविधान में जनजातियों के विकास के लिए क्या प्रावधान किये गये हैं? लिखिए।

(स) जनजातियों के आर्थिक या सामाजिक जीवन पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

(द) जनजातियों के सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(अ) 'भगोरिया' ..... जनजाति में लोकप्रिय है।

(ब) जनजातीय महिलाएँ ..... को जीवन भर का आभूषण मानती हैं।

(स) लोक सभा, विधान सभाओं एवं स्थानीय निकायों में जनजातियों के लिये ..... दिया गया है।

(द) पिठौरा ..... जनजातियों का भित्ति चित्र है।

प्रोजेक्ट कार्य

- किन्ही चार आदिवासी बाहूल्य जिलों के नाम लिखें एवं वहाँ निवास करने वाली एक-एक जनजाति का नाम लिखें।
- किसी एक जनजाति के सांस्कृतिक जीवन की विशेषताओं का चार्ट बनाइए।

❖❖❖❖

पाठ 15

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक और पहचान

आइए सीखें

- हमारे राष्ट्रीय प्रतीक एवं चिन्हों, पुष्प, पशु, पक्षी की पहचान व उनके महत्व को जानना।
- राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत तथा उनके सम्मान संबंधी निर्देश।
- राष्ट्रध्वज और उसका सम्मान कैसे करें?

सभी नागरिकों में राष्ट्र के प्रति प्रेम होता है। राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान दर्शाकर राष्ट्रीय गौरव व गरिमा को अपनी पहचान बनाकर इसे व्यक्त किया जाता है।

हमारा राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय चिन्ह, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु व राष्ट्रीय पुष्प हमारी राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता के प्रतीक हैं।

राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

राष्ट्रध्वज

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे में समान अनुपात में तीन आड़ी पट्टियाँ हैं। इनमें सबसे ऊपर की पट्टी में गहरा केसरिया रंग, बीच की पट्टी में सफेद तथा नीचे वाली पट्टी में हरा रंग होता है।

ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है। सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग का एक चक्र है। इस चक्र में 24 तीलियां हैं। इसका प्रारूप सारनाथ में स्थित अशोक स्तंभ पर बने चक्र से लिया गया है।

ध्वज में स्थापित तीन रंग (1) केसरिया त्याग, शौर्य व बलिदान का प्रतीक है। यह रंग स्वतंत्रता संघर्ष में अपना जीवन न्यौछावर करने वालों के बलिदान और देश भक्ति की निरंतर याद दिलाता है।

(2) ध्वज की श्वेत पट्टी सत्य व शांति का प्रतीक है। यह रंग हमें सच्चा, शुद्ध व सरल बनने के लिये प्रेरित करता है।

(3) गहरे हरे रंग की पट्टी जीवन, उत्पादकता और खुशहाली को दर्शाती है। हरा रंग विश्वास व दृढ़ता का भी प्रतीक है।

राष्ट्रध्वज में श्वेत पट्टी के मध्य गहरे नीले रंग से अंकित चक्र का ऐतिहासिक महत्व है। सारनाथ में सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया एक स्तंभ है। जिसे इस स्थान पर भगवान बुद्ध द्वारा दिये गये प्रथम उपदेश की स्मृति में बनवाया गया था। अशोक के स्तंभ में यह चक्र धर्म का प्रतीक है। चक्र गति, प्रगति और उत्साह को इंगित करता है। यह हमें धर्म एवं सच्चाई के रास्ते पर चलने और देश को उन्नति और

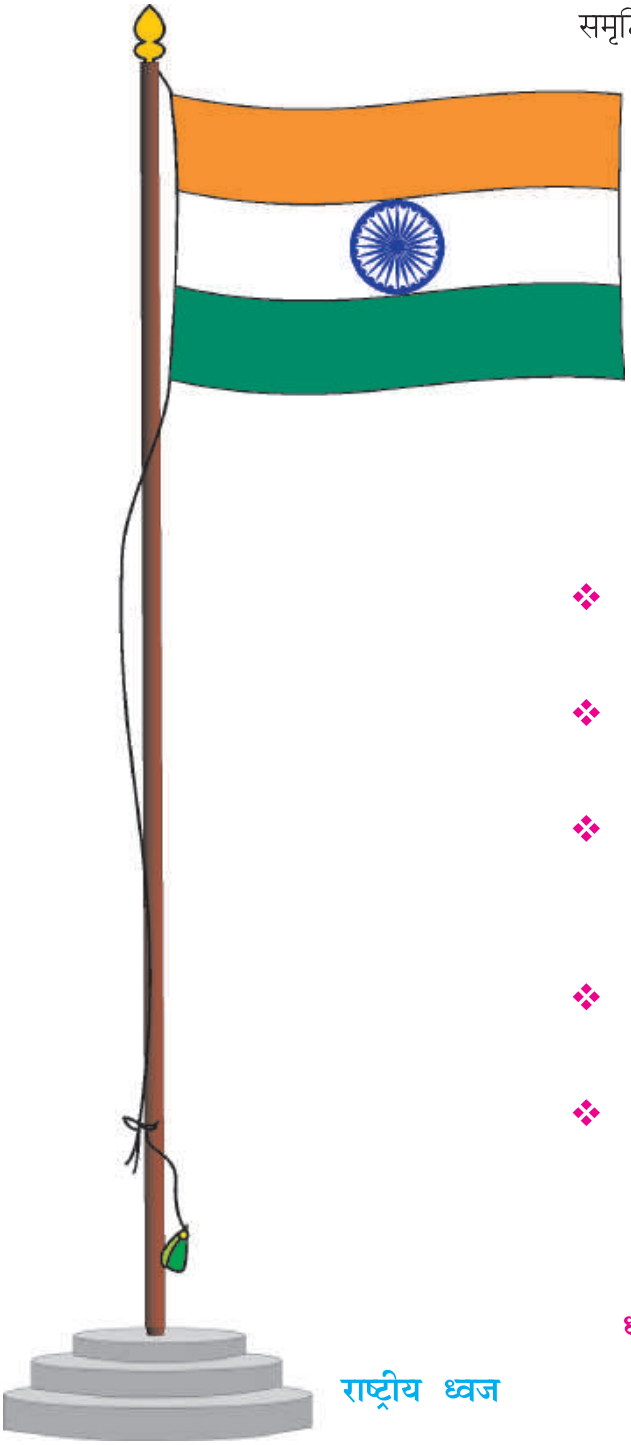

राष्ट्रीय ध्वज

समृद्धि की ओर ले जाने के लिए भी प्रेरित करता है।

जब भी राष्ट्रध्वज फहराया जाए, इसे आदर मिलना चाहिए। भारतीय लोगों द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में राष्ट्रध्वज का प्रदर्शन करना अपनी देशभक्ति और देश प्रेम की भावना को दर्शाता है।

राष्ट्रध्वज का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक के मूल कर्तव्यों में से एक है।

आइए, अब हम राष्ट्रध्वज फहराने के नियमों को जानें-

- जब राष्ट्रध्वज फहराया जाता है, तब हमें इसके सम्मान में सावधान की मुद्रा में खड़े रहना चाहिए।
- ध्वज की केसरिया रंग की पट्टी सदैव ऊपर की ओर रहना चाहिए।
- प्रतिदिन महत्वपूर्ण सरकारी भवनों पर राष्ट्रध्वज फहराना चाहिए तथा सूर्यास्त से पूर्व उतार लेना चाहिए।
- अब हम राष्ट्रीय पर्वों पर अपने घरों पर भी राष्ट्रीय ध्वज फहरा सकते हैं।
- राष्ट्रध्वज का प्रयोग सजावट के लिए नहीं करना चाहिए।

भारत की संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज का प्रारूप 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया है।

राष्ट्रीय चिन्ह

यह चिन्ह सारनाथ के अशोक स्तंभ से लिया गया है। इस चिन्ह में हमें तीन शेर दिखाई देते हैं, वास्तव में ये संख्या में चार हैं। चौथा शेर पीछे की ओर जुड़ा होने के कारण हमें केवल तीन ही दिखते हैं। शेरों के नीचे की चौकी में बाईं ओर एक घोड़ा, दाईं ओर एक बैल और बीच में एक चक्र दिखाई देता है। नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' शब्द लिखा है। इसका अर्थ है केवल सत्य की ही विजय होती है।

चक्र धर्म, शेर साहस, ऐश्वर्य व शक्ति, घोड़ा ऊर्जा और वेग, बैल मेहनत और दृढ़ता का प्रतीक है।

देश के प्रत्येक नागरिक को उपरोक्त गुणों को अपने व्यवहार और चरित्र में दर्शाने का संकल्प करना चाहिए।

राष्ट्रीय चिन्ह भारत सरकार की मोहर (मुद्रा) है। हम इस चिन्ह को नोटों, सिक्कों, सरकारी आदेशों, विज्ञप्तियों आदि पर अंकित देखते हैं।

राष्ट्रीय चिन्ह

राष्ट्रगान

हमारे राष्ट्रगान के रचयिता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर हैं। इस गान में हमारी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा की भावना प्रकट की गई है। राष्ट्रीय पर्वों पर राष्ट्रध्वज फहराने के बाद राष्ट्रगान गाया जाता है। राष्ट्रगान हमारे मन में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करता है।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

राष्ट्रगान हमारी मातृभूमि की प्रशंसा का गीत है। यह हमें सहनशीलता व राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। इसके गायन अथवा धुन बजने के समय हमें -

- सावधान की मुद्रा में खड़े रहना चाहिए।

- गाते समय चलना अथवा बातें नहीं करना चाहिए।
- समूह में गाते समय एक स्वर व जोश से गाना चाहिए।

राष्ट्रगान के गायन की अवधि लगभग 52 सेकेण्ड है।

राष्ट्रीय गीत

इस गीत की रचना बंकिमचन्द चट्टोपाध्याय ने की है। इस गीत ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश के नौजवानों में राष्ट्रभक्ति की भावना प्रज्वलित की थी। अत: इसे भी राष्ट्रगान के समान सम्मान दिया गया है, तथा इसे 'जनगणमन....' के समान मान्यता प्राप्त है।

वन्दे मातरम् **राष्ट्रीय गीत** इस प्रकार है-

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्॥
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्॥
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्॥

राष्ट्रीय पुष्प

कमल, भारत का राष्ट्रीय पुष्प है। कमल कीचड़ में खिलता है, पर यह उससे ऊपर रहता है। यह इस बात का प्रतीक है कि बुराई के बीच रहकर भी अच्छा बना जा सकता है। प्राचीनकाल से कमल को भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना गया है।

राष्ट्रीय पुष्प-कमल

राष्ट्रीय पक्षी-मोर

राष्ट्रीय पक्षी

सुन्दर, आकर्षक मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। इस पक्षी का भारतीय कथाओं, साहित्य और लोक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मोर का नृत्य (विशेषकर वर्षाऋतु में) देखने योग्य होता है। भारतीय वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम 1972 के अंतर्गत इसे पूर्ण संरक्षण प्राप्त है। मोर को मारना दण्डनीय अपराध है।

राष्ट्रीय पशु-बाघ

राष्ट्रीय पशु

शक्ति और शान का प्रतीक बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। बाघ अपनी दृढ़ता, स्फूर्ति और अपार शक्ति के लिए जाना जाता है। देश में बाघों की घटती हुई संख्या को देखते हुए इनके संरक्षण के लिए अप्रैल 1973 में बाघ परियोजना प्रारंभ की गई। इस परियोजना के अंतर्गत अब तक 27 बाघ अभ्यारण्य स्थापित किये गये हैं। बाघों का शिकार या उन्हें मारना दंडनीय अपराध है।

मध्यप्रदेश राज्य के प्रतीक : राज्य चिन्ह या मुद्रा- राज्यपक्षी-दूधराज, राज्य का वृक्ष- बरगद।

- राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय चिन्ह, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत का हमें सम्मान करना चाहिए।
- राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु व राष्ट्रीय पुष्प हमारी राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता के प्रतीक है।
- 'तिरंगा' हमारा राष्ट्रीय ध्वज है।
- 'जन-गण-मन...' हमारा राष्ट्रगान है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. हमारे 'राष्ट्रीय ध्वज' में कौन-कौन से रंग हैं?

ब. 'राष्ट्रीय ध्वज' में अंकित चक्र किस बात का प्रतीक है?

स. 'राष्ट्रगान' की रचना किसने की थी?

द. 'वन्दे मातरम्' की रचना किसने की थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. राष्ट्रध्वज फहराने के कौन-कौन से नियम हैं?

ब. 'राष्ट्रगान' कब गाया जाता है? इसे गाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

स. हमारे राष्ट्रीय पक्षी व पुष्प कौन-कौन से हैं? इनका वर्णन करें ।

3. खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए

अ. राष्ट्रीय प्रतीकों का ..... करना हमारा कर्तव्य है।

ब. राष्ट्रध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात ..... है।

स. राष्ट्रध्वज के ऊपर की ओर की पट्टी का रंग ..... होता है।

द. राष्ट्रीय चिन्ह के नीचे ..... शब्द अंकित है।

य. राष्ट्रगान के गायन की अवधि लगभग ..... सेकेण्ड है।

4. सही जोड़ी बनाइये-

	अ	ब
अ.	राष्ट्रध्वज	वन्देमातरम्.....
ब.	राष्ट्रगान	कमल
स.	राष्ट्रीय गीत	जनगणमन...
द.	राष्ट्रीय चिन्ह	तिरंगा
य.	राष्ट्रीय पशु	अशोक स्तंभ
र.	राष्ट्रीय पक्षी	बाघ
ल.	राष्ट्रीय पुष्प	मोर

प्रोजेक्ट कार्य

- राष्ट्रीय प्रतीकों एवं मध्यप्रदेश राज्य के प्रतीकों चित्रों का संग्रह कीजिए तथा उन्हें अपनी अभ्यास पुस्तिका में चिपकाएं ।

❖❖❖❖

पाठ 16

हमारा देश भारत

आइए सीखें

- एशिया में भारत की स्थिति और विस्तार को।
- भारत के पड़ोसी देश कौन-कौन से हैं?
- भारत के राज्य और केंद्र शासित प्रदेश कौन-कौन से हैं?
- भारत का भौतिक स्वरूप कैसा है और मानचित्र में उनको दर्शाना।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारत एक प्राचीन देश है। प्राचीन काल में इसे 'भारत वर्ष' के नाम से पुकारा जाता था। भारत तीन ओर से समुद्रों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में एक विशाल पर्वतमाला है जिसके द्वारा यह शेष एशिया महाद्वीप से अलग हो जाता है। अत: इसका स्वतंत्र अस्तित्व है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत संसार का सांतवा बड़ा देश है। सन् 2011 में भारत की जनसंख्या एक अरब 21 करोड़ 5 लाख से अधिक है। यहां पर संसार की कुल जनसंख्या का लगभग 16.7 प्रतिशत भाग निवास करता है। जनसंख्या की दृष्टि से संसार में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है।

एशिया में भारत की स्थिति और विस्तार

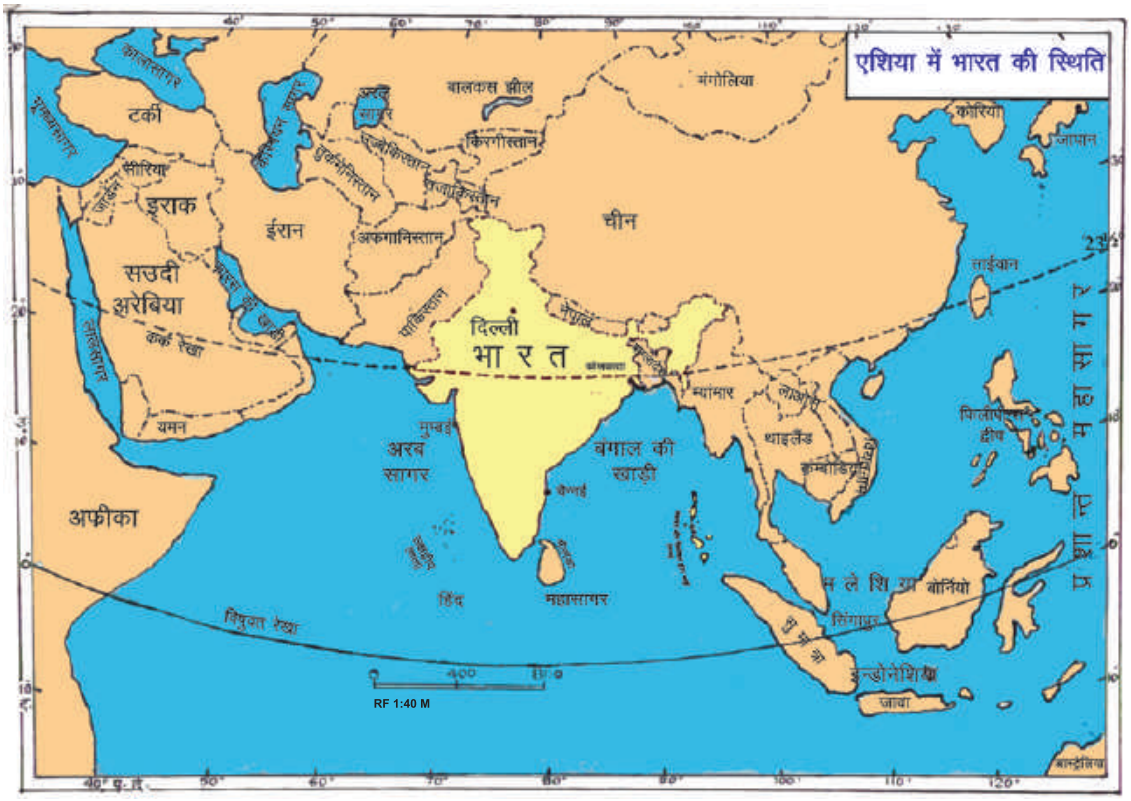

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। एशिया महाद्वीप में हमारे देश के कई पड़ोसी देश है। भारत के उत्तर में नेपाल, चीन और भूटान है। पूर्व दिशा में बांग्लादेश और म्यांमार हैं। पश्चिम दिशा में पाकिस्तान व अफगानिस्तान तथा दक्षिण में श्रीलंका और मालद्वीव (हिन्द महासागर) स्थित है।

भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर फैला हुआ है। तीन ओर से समुद्र से घिरे होने के कारण भारत को प्रायद्वीप कहते हैं।

भारत : राजनैतिक

भारत के राजनैतिक मानचित्र को ध्यान से देखिए । भारत 8°4'., उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक फैला है। इसका देशान्तरीय विस्तार 68° 7' पूर्वी देशान्तर से 97° 25' पूर्वी देशान्तर तक है।

मानचिंत्र में भारत की अक्षांशीय एवं देशान्तरीय स्थिति को दर्शाया गया है।

भारत उत्तर से दक्षिण तक 3,214 किलोमीटर क्षेत्र में तथा पूर्व से पश्चिम 2,933 किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है।

भारत की मुख्य भूमि का उत्तरी छोर जम्मू कश्मीर राज्य में है तथा इसका दक्षिण छोर तमिलनाडु में कन्याकुमारी में है। लेकिन देश का दक्षिण में अंतिम छोर अंडमान निकोबार द्वीप समूह में इंदिरा पाइंट है। भारत के पश्चिम में गुजरात और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश है।

भारत के राज्य और केन्द्र-शासित क्षेत्र

भारत के 29 राज्य व 7 केन्द्र शासित क्षेत्र है। भारत के मानचित्र में इन राज्यों और केंद्रशासित क्षेत्र को ध्यान से देखिए। अपने प्रदेश के साथ पड़ोसी राज्यों के नामों की सूची बनाइए-

मेरे राज्य का नाम : _____

पड़ोसी राज्यों के नाम हैं :

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

मानचित्र में भारत के राज्य और उसकी राजधानियाँ दी गई हैं। मानचित्र को ध्यान से देखिए और भारत के सभी राज्य और राजधानियों की तालिका अपनी कापी में बनाइए।

भारत के केंद्र शासित प्रदेश

क्र.	केंद्र शासित क्षेत्र	राजधानी
1.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	पोर्टब्लेयर
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़
3.	दादर और नगर हवेली	सिलवासा
4.	दमन और दीव	दमन
5.	लक्षद्वीप	कवरत्ती
6.	पांडिचेरी	पांडिचेरी
7.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली

उपरोक्त सभी केंद्र शासित प्रदेश को मानचित्र में ढूंढिएँ।

भारत के उच्चावच और प्राकृतिक भू-भाग

हमारा देश बहुत बड़े भू-भाग में फैला हुआ है। यहाँ की भू-रचना सभी जगह एक समान नहीं है। कहीं उँचे पर्वत, कहीं विशाल मैदान, कहीं पठारी भूमि तो कहीं मरुस्थल फैले हुए हैं। देश में नदियां तथा उसकी सहायक नदियाँ भी हैं।

प्राकृतिक भू-भाग के आधार पर भारत को पाँच प्रमुख प्राकृतिक भागों में बांट सकते हैं, जो निम्नानुसार हैं-

1. उत्तर का पर्वतीय भाग
2. उत्तर का विशाल मैदान
3. दक्षिण का पठार
4. पश्चिमी और पूर्वी घाट
5. तटीय मैदान एवं द्वीप समूह

1. उत्तर का विशाल पर्वतीय भाग

भारत के उत्तर में हिमालय और कराकोरम की अनेक ऊँची पहाड़ियों का समूह है जो लंबी श्रृंखलाओं के रूप में उत्तर पश्चिम से पूर्व दिशा में फैली हुई। हिमालय पर्वत संसार की सबसे ऊँची पर्वतमालाएं हैं। यह उत्तर पश्चिम में जम्मू और कश्मीर से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक 3000 किलोमीटर पूर्वांचल में फैली हुई है। हिमालय पर्वत की तीन समानान्तर पर्वत श्रेणियां हैं-

(1) हिमाद्रि (सर्वोच्च हिमालय)

(2) हिमाचल (लघु हिमालय)

(3) शिवालिक (बाह्य हिमालय)

हिमालय पर्वत श्रेणी की चोटियाँ बर्फ से ढकी रहती है। हमारे देश में हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी गॉडविन ऑस्टिन (K_2) है जिसकी ऊँचाई 8611 मीटर है। जबकि संसार की सबसे ऊंची चोटी माउन्ट एवरेस्ट नेपाल में है जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। लघु हिमालय में देवदार और चीड़ के वन हैं। श्रीनगर, शिमला, नैनीताल और दार्जिलिंग प्रमुख हिल स्टेशन है। इस भाग से सिन्धु, गंगा, यमुना, सतलज एवं ब्रह्मपुत्र आदि प्रमुख नदियां निकलती हैं।

2. उत्तर का विशाल मैदान

हिमालय पर्वत के दक्षिण में एवं दक्षिण के पठार के उत्तर में बहुत बड़ा भू-भाग पश्चिम में पंजाब से लेकर पूर्व में असम तक फैला हुआ है। इस भाग को उत्तर का मैदान कहते हैं। यह देश का बहुत उपजाऊ भू-भाग है। इस मैदान में हिमालय से निकलने वाली सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियां बहती हैं। गर्मी में भी यह नदियां पानी से भरी रहती है। यह उपजाऊ मैदान है इसीलिए यहाँ जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

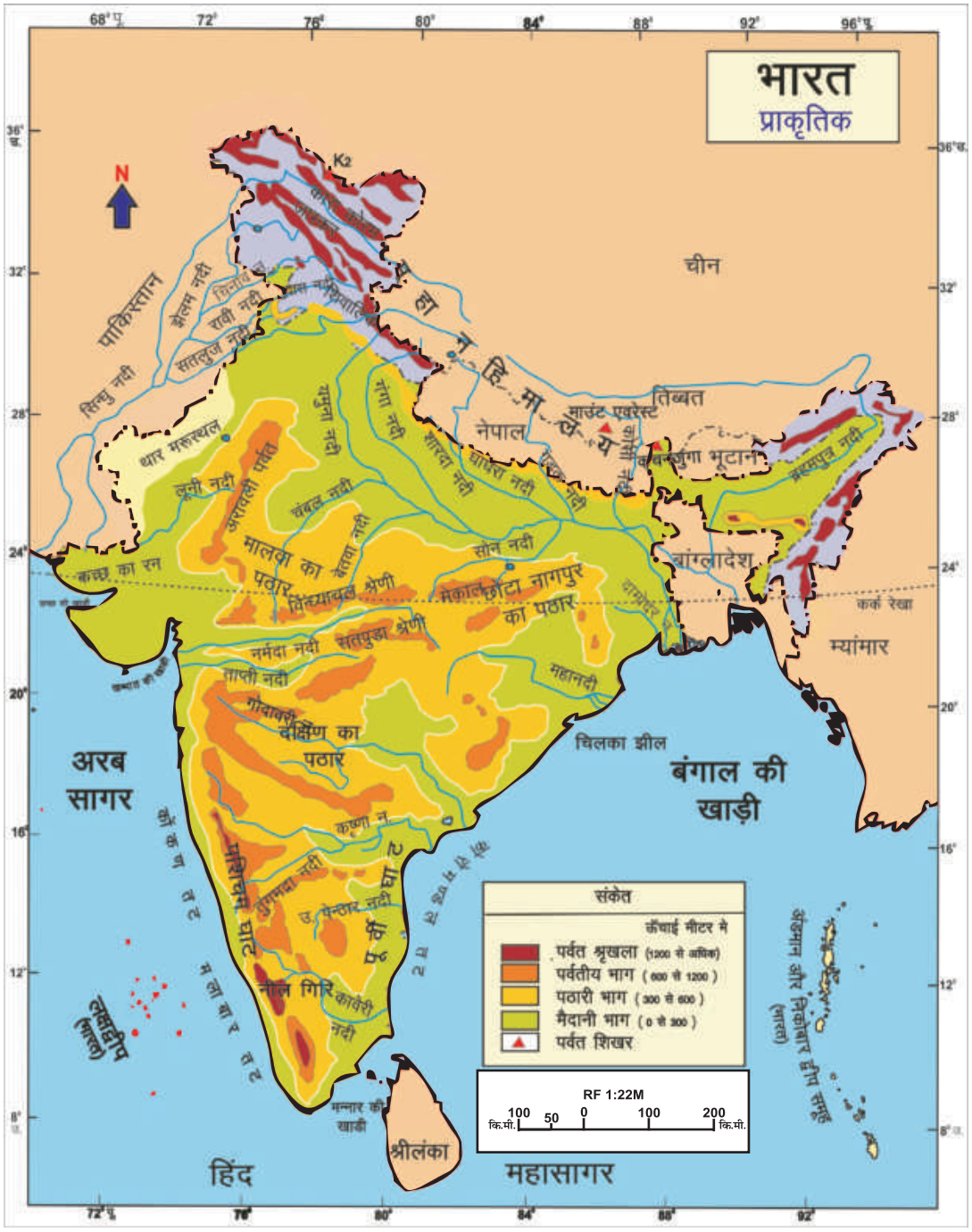

भारत के भौतिक विभाग के मानचित्र को ध्यान से देखिए। उत्तर के मैदान के पश्चिम में भारत का मरुस्थल है। इसे थार का मरुस्थल भी कहते हैं। यहाँ पर पानी की कमी के कारण वनस्पति बहुत कम पायी जाती है। यहां का धरातल गर्म शुष्क और रेतीला है। इस कारण इस भाग में जनसंख्या बहुत कम है।

3. दक्षिण का पठार

दक्षिण का पठार उत्तर के विशाल मैदान के दक्षिण में शुरू होकर भारत के दक्षिण सिरे तक त्रिकोण रूप में फैला हुआ है। उत्तर पश्चिम में अरावली की पहाड़ियां हैं। इसमें मालवा का पठार, छोटा नागपुर का पठार सम्मिलित हैं। इस पठार में नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कावेरी, कृष्णा एवं महानदी बहती हैं। इस पठारी भाग में विन्ध्याचल, सतपुड़ा, अन्नामलाई और नीलगिरि की पहाड़ियां हैं। यहां पर लोहा, कोयला, अभ्रक, मैंगनीज आदि खनिज पदार्थ निकाले जाते हैं।

4. पश्चिमी और पूर्वी घाट

दक्षिण के पठार के पश्चिम में पश्चिमी घाट है जो गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल से कन्याकुमारी तक फैले हैं। महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में इन्हें सह्याद्रि कहते हैं। तमिलनाडु में नीलगिरि तथा केरल और तमिलनाडु के सीमा पर अन्नामलाई तथा कार्डामम पहाड़ियाँ हैं। पठार की पूर्वी सीमा पर पूर्वी घाट है जो कई हिस्सों या पहाड़ियों में विभाजित है।

5. तटीय मैदान एवं द्वीप समूह

अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के किनारे मैदानी संकरी पट्टियां हैं जिन्हें तटीय मैदान कहते हैं। पूर्वी मैदान अधिक चौड़ा और उपजाऊ है। इस मैदान में बहने वाली नदियां- महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी है। इस भाग में जनसंख्या अधिक पायी जाती है। पश्चिमी तटीय मैदान असमतल चट्टानी और संकरा है। इस मैदान की दो प्रमुख नदियां - नर्मदा और ताप्ती है, जो अरब सागर में गिरती है।

भारत में दो द्वीप समूह भी है। ये बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान निकोबार तथा अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप है।

भारत के मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखिए तथा निम्न की सूची बनाइए-

(1) भारत के प्रमुख पर्वतों के नाम-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

(2) भारत की प्रमुख नदियों के नाम-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

(3) भारत के पठारों के नाम

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. भारत एशिया के किस भाग में स्थित है?

ब. भारत के उत्तर में स्थित देशों के नाम लिखिए।

स. भारत के दक्षिण में कौन सा महासागर है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. उत्तर के विशाल मैदान की विशेषताएं बताइए

ब. भारत को कितने प्राकृतिक विभागों में बाँटा जा सकता है? सभी का नाम लिखते हुए इनमें से एक भाग का वर्णन कीजिए।

3. सही उत्तर चुनिए-

अ. निम्नलिखित में से दक्षिण के पठार में कौन सा पर्वत है?

(i) हिमालय (ii) पटकोई

(iii) शिवालिक (iv) विन्ध्याचल

ब. निम्नलिखित में से भारत के दक्षिण में कौन सा देश है।

(i) चीन (ii) बांग्लादेश

(iii) पाकिस्तान (iv) श्रीलंका

स. निम्नलिखित में भारत का राज्य कौन सा है?

(i) दिल्ली (ii) अण्डमान निकोबार

(iii) पांडिचेरी (iv) अरुणाचल

द. हमारे देश में कुल कितने प्रदेश है-

(i) 27 (ii) 29

(iii) 28 (iv) 25

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. भारत में केंद्र शासित प्रदेशों की संख्या..... है।

ब. भारत का दक्षिणतम बिन्दु ..... है।

स. भारत का पूर्वी तटीय मैदान बहुत ..... है।

द. त्रिपुरा की राजधानी ..... है।

य. भारत के पश्चिम में ..... देश है।

5. **सही जोड़ी मिलाइए-**

क	ख
अ. मध्यप्रदेश	हैदराबाद
ब. उत्तरप्रदेश	शिमला
स. हरियाणा	भोपाल
द. हिमाचल प्रदेश	लखनऊ
य. आंध्रप्रदेश	चंडीगढ़

- **नीचे दिये गये भारत के मानचित्र में कुछ संकेत दिये हुए हैं उन संकेतों के पास उनके नाम लिखिए –** (i) हिमालय पर्वत, (ii) विन्ध्याचल पर्वत (iii) नीलगिरि पर्वत (iv) गंगा नदी, (v) नर्मदा नदी, (vi) मुम्बई, (vii) चेन्नई, (viii) भोपाल (ix) कर्क रेखा, (x) अरावली पर्वत, (xi) दिल्ली।

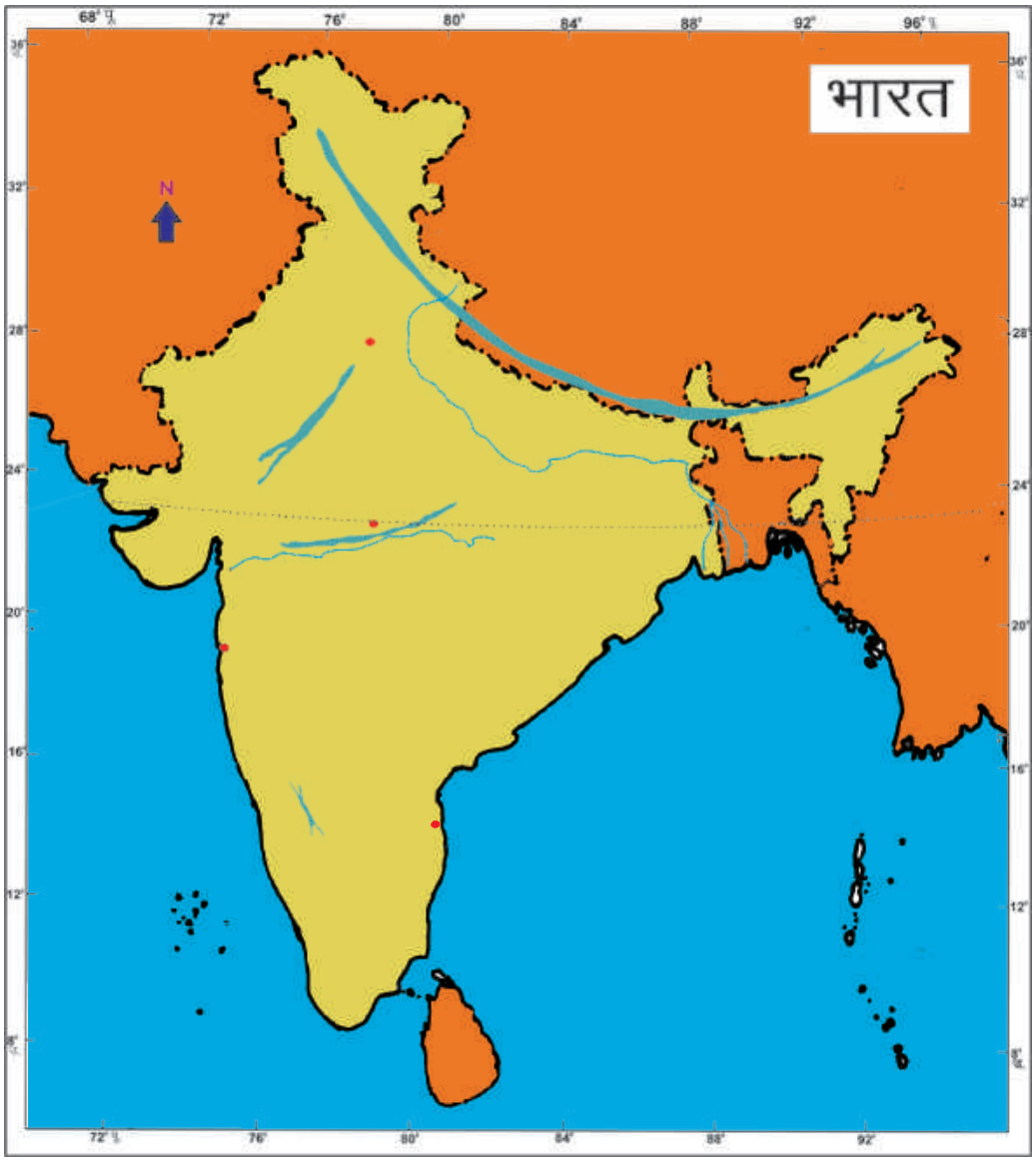

पाठ 17

भारत की जलवायु

आइए सीखें

- भारत की जलवायु मानसूनी क्यों कहलाती हैं?
- मानसून की उत्पत्ति के क्या कारण हैं?
- भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं?
- भारत की प्रमुख ऋतुएं- कौन-कौन सी हैं?
- भारत में वर्षा का वितरण किस प्रकार है?
- भारत की जलवायु की प्रमुख विशेषताएं कौन-कौन सी हैं।

भारत मानसून जलवायु वाला देश है। यहां के लोगों का जीवन और उनके कार्य मानसून से प्रभावित होते हैं। क्या है यह मानसून? मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मौसम'। इसका प्रयोग अरब के नाविकों द्वारा अरब सागर में 6 माह उत्तर-पूर्व से चलने वाली हवाओं के लिए करते थे। जो आज भी प्रचलित है। इस प्रकार 'मानसून' शब्द से आशय है ऐसी पवनें जो एक निश्चित अवधि में एक निश्चित दिशा में चलती हैं। मानसूनी पवनों के कारण ही भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है।

मानसून पवनों की उत्पत्ति को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बातों को समझना आवश्यक है-

- ताप का प्रमुख स्रोत सूर्य है। ताप के कारण ही वायु गर्म और ठंडी होती है। वायु में भार होता है जिसे वायुदाब कहते हैं।
- गर्म वायु हल्की और ठंडी वायु भारी होती है।
- हल्की वायु से निम्न दाब तथा भारी वायु से अधिक दाब निर्मित होता है।
- पवन हमेशा अधिक दाब से निम्न दाब की ओर चलती है।
- जब वायुदाब में परिवर्तन होता है तो **वायु** चलने की दिशा में भी परिवर्तन होता है।
- ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर चलने वाली हवा को वायु तथा धरातल के समानान्तर चलने वाली हवा को **पवन** कहते हैं।

मानसून की उत्पत्ति

हमारा देश उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। जब सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में चमकता है तो हमारे देश में ग्रीष्म

ऋतु होती है और तापमान में वृद्धि होने लगती है। सम्पूर्ण उत्तर भारत और पाकिस्तान पर अधिक तापमान होता है। अधिक ताप के कारण उत्तरी भारत में निम्न वायु दाब उत्पन्न होता है। इसी समय दक्षिण में स्थित हिन्द महासागर में तापमान कम होने के कारण अधिक दाब रहता है। अधिक वायु दाब से निम्न दाब की ओर पवन चलने लगती है। चूंकि ये पवनें समुद्र (हिन्द महासागर) से स्थल भाग (भारतीय उप महाद्वीप) की ओर चलती है। इसलिए ये वाष्प भरी होती है। इन वाष्प भरी आर्द्र वायु से ही पूरे देश में वर्षा होती है। ये ग्रीष्मकालीन मानसून पवनें होती हैं।

जब सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में चमकता है तो उत्तरी भारत तथा पाकिस्तान ठंडा हो जाता है। भारत में जाड़े की ऋतु होती है और हिन्द महासागर गर्म होने लगता है। हिन्द महासागर के गर्म होने से वहाँ निम्न वायु दाब स्थापित हो जाता है। इसी समय उत्तरी भारत शीत ऋतु के प्रभाव में रहता है और वहां अधिक वायु दाब होता है। इसी के साथ पवन की दिशा में भी परिवर्तन हो जाता है। पवनें स्थल (भारतीय उप महाद्वीप) से समुद्र (हिन्द महासागर) की ओर चलने लगती है। स्थल से चलने के कारण ये शुष्क और ठंडी होती है। इसे शीतकालीन मानसूनी पवनें भी कहतें हैं।

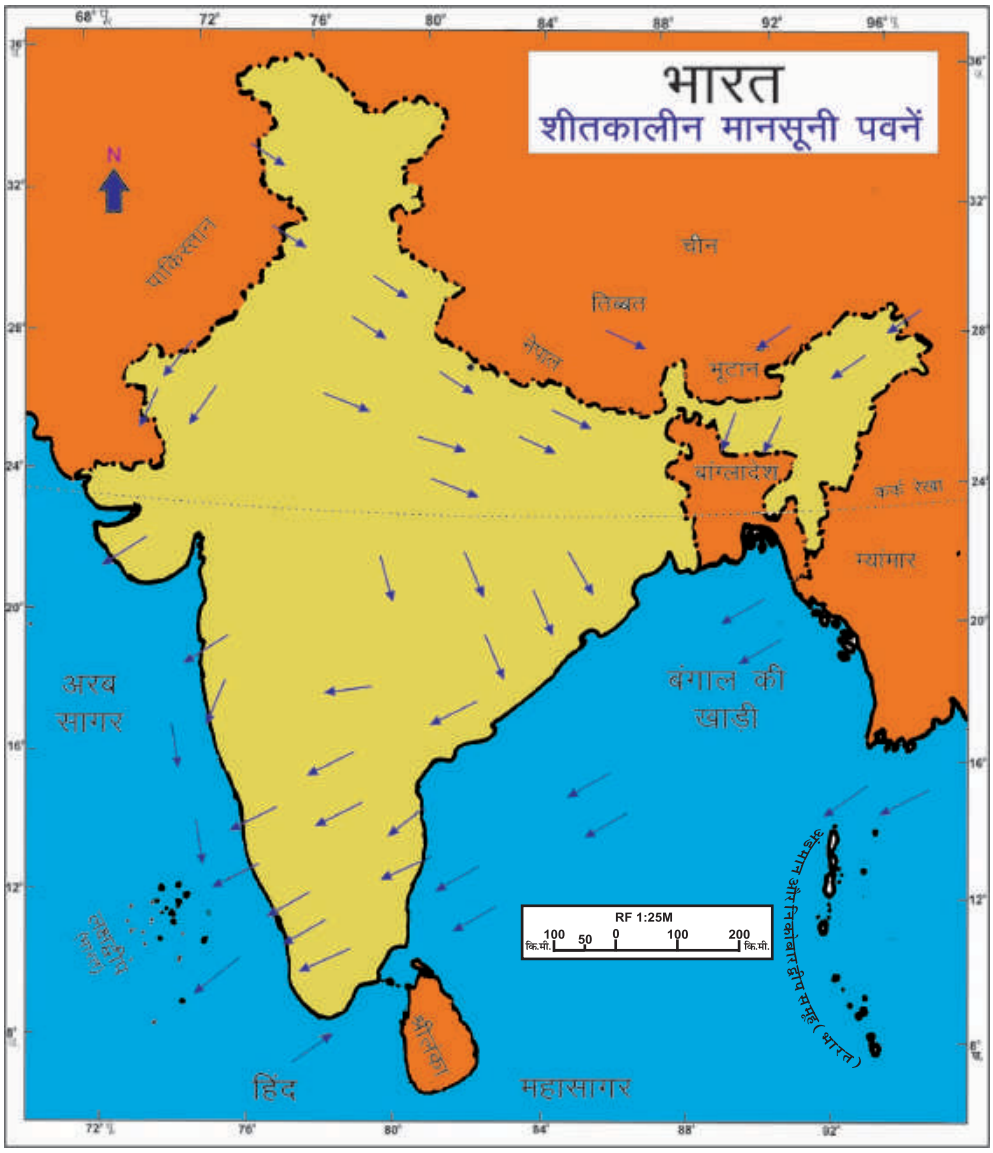

इस प्रकार ऋतु परिवर्तन के अनुसार पवनों की दिशा में परिवर्तन होना मानसून की उत्पत्ति कहलाती है। **भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक-** भारत की जलवायु को निम्नलिखित कारक प्रमुख रूप से प्रभावित करते हैं- (1) भारत की भौगोलिक स्थिति (2) धरातलीय स्वरूप (3)

प्रचलित पवनें।

(i) **भारत की भौगोलिक स्थिति-** भारत 8°.4' से 37°.6' उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है। कर्क रेखा इसे लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करती है। भारत के दक्षिण में हिन्द महासागर फैला है। उत्तर में ऊँची-ऊँची हिमालयीन पर्वतमालाएँ हैं। तीन ओर से समुद्र द्वारा घिरा होने से पर्याप्त मात्रा में पवनों को आर्द्रता मिलती है।

(ii) **धरातलीय स्वरूप-** उत्तर में हिमालय पर्वत दीवार की तरह पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है। जो उत्तरी ध्रुव से आने वाली ठंडी हवाओं को उत्तर में ही रोककर भारत को ठंड से बचाता है वहीं दूसरी ओर आर्द्रता से लदी मानसूनी पवनों को रोककर भारत में वर्षा कराता है।

(iii) **प्रचलित मौसमी पवनें-** यदि भारत में मौसम के अनुसार प्रचलित पवनों की दिशा नहीं बदलती तो यह एक शुष्क भू-भाग या मरुस्थल होता उत्तर में एशिया महाद्वीप में वायुदाब परिवर्तन होने से प्रचलित पवनों की दिशा में भी परिवर्तन होता रहता है।

भारत की ऋतुएं

भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ऋतुओं का विभाजन इस प्रकार किया गया है-

1. शीत ऋतु
2. ग्रीष्म ऋतु
3. वर्षाऋतु
4. शरद ऋतु

शीत ऋतु- (15 दिसम्बर से 15 मार्च)- इस समय सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में रहता है जिसके कारण उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित भारत में शीत ऋतु होती है। उत्तरी भारत में तापमान निम्न और वायुदाब उच्च रहता है। पवनें उच्च दाब से निम्न दाब अर्थात स्थल से समुद्र की ओर चलने लगती है। स्थल से चलने के कारण ये ठंडी और शुष्क होती है। इनकी दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर होती है। तापमान तेजी से नीचे गिरने लगता है। इस ऋतु की तीन विशेषताएं हैं-

1. सम्पूर्ण उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में आ जाता है।
2. उत्तर-पश्चिमी भारत में पश्चिमी चक्रवातों से थोड़ी वर्षा हो जाती है।
3. बंगाल की खाड़ी के ऊपर से लौटती हुई मानसून पवनों द्वारा तमिलनाडु के तट पर वर्षा होती है।

जब सामान्य तापमान 5° सेल्सियस से भी कम हो जाता है उस समय चलने वाली ठंडी हवा को शीत लहर कहते हैं।

ग्रीष्म ऋतु- (15 मार्च से 15 जून) इस अवधि में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में तेज चमकने लगता है। तापमान में क्रमश: वृद्धि होने लगती है। सम्पूर्ण उत्तरी भारत गर्म हो जाता है। उत्तर-पश्चिमी भागों में तापमान 48° सेल्सियस तक पहुंच जाता है। दोपहर में गर्म और शुष्क हवाएँ चारों ओर चलने लगती है। दोपहर में चलने वाली इन हवाओं को 'लू' कहते हैं।

वर्षा ऋतु- (15 जून से 15 सितम्बर) - यह समय आगे बढ़ते हुए मानसून का होता है। इस समय भारत में हवाओं की दिशा दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होती है। जून के प्रारंभ में दक्षिण-पश्चिम मानसून केरल के तट पर पहुंच जाता है। इसी के साथ वर्षाऋतु प्रारंभ होती है। आर्द्रता युक्त मानसूनी गर्म पवनें मध्य जुलाई तक भारत के अधिकांश भागों में फैल जाती है। जिससे मौसमी दशाएँ पूर्णत: बदल जाती है। इन पवनों से संपूर्ण भारत में वर्षा होने लगती है।

शरद ऋतु- (15 सितम्बर से 15 दिसम्बर)- इस समय उत्तरी भारत के तापमान में गिरावट आने लगती है। अत: अधिक वायु दाब क्षेत्र बनता है। हवा की दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर होती है। स्थल से सागर की ओर चलने के कारण इन हवाओं से वर्षा नहीं होती। लौटती हुई मानसूनी पवनें बंगाल की खाड़ी से आर्द्रता ग्रहण कर तमिलनाडु के पूर्वी तट पर वर्षा करती है।

वर्षा का वितरण

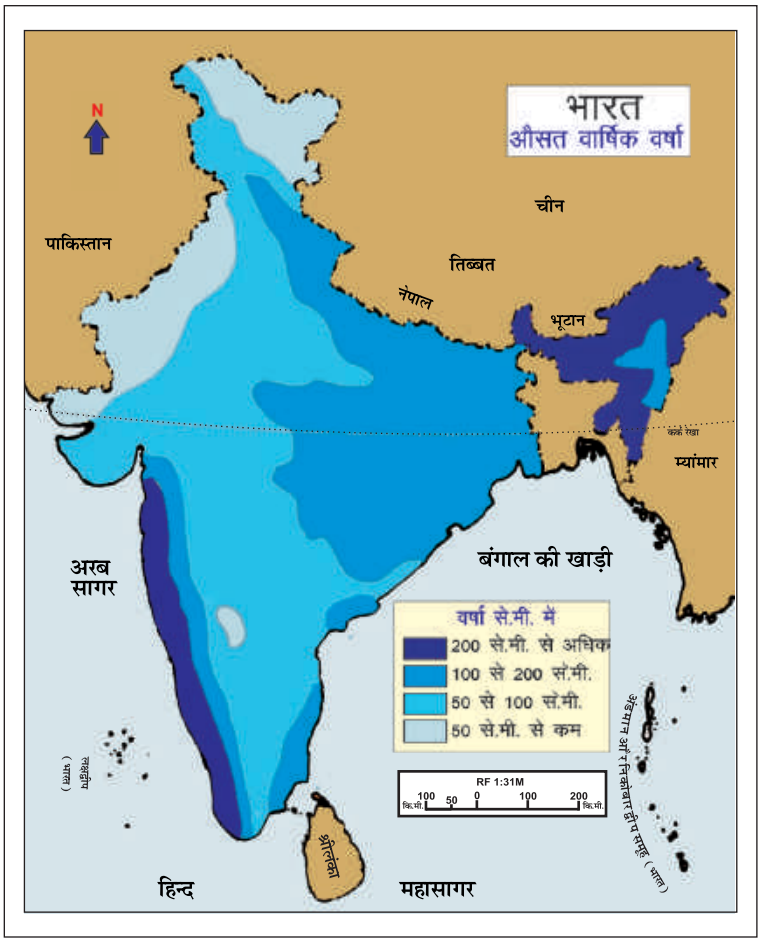

उपर्युक्त मानचित्र को ध्यान से देखें। मानचित्र में वर्षा का वितरण दिखाया गया है। भारत में वर्षा का वितरण असमान है। भारत के पश्चिमी घाट तथा उत्तरपूर्वी भागों में वर्षा का वार्षिक औसत 300 से.मी. से भी अधिक रहता है। मध्यवर्ती एवं उत्तर-पूर्वी भागों में 100 से 300 से.मी. तक तथा मध्यवर्ती और दक्षिणी भारत के बड़े क्षेत्र में 40 से 100 से.मी. वर्षा होती है। पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि, दक्षिण के पठार का मध्यवर्ती भाग और कश्मीर में कारगिल क्षेत्र में बहुत कम (40 से.मी. से भी कम) वर्षा होती है। भारतीय मरुस्थल और कारगिल क्षेत्र में तो 10 से.मी. से भी कम वर्षा होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में वर्षा का वितरण बहुत ही असमान है।

सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान चेरापूंजी और मॉसिमराम है। ये दोनों स्थान मेघालय राज्य में हैं।

भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएं-

- भारत की जलवायु पूर्णत: मानसूनी है।
- अधिकांश वर्षा मात्र चार माह जून से सितम्बर में हो जाती है।
- उत्तरी भारत में तापान्तर अधिक तथा दक्षिणी भागों में कम पाया जाता है। (अधिक और निम्न ताप के बीच का अंतर)
- भारत में बाढ़ और सूखा के समाचार एक साथ आते हैं।
- वर्षा का वितरण बहुत ही असमान है कहीं बहुत ज्यादा तो कहीं बहुत कम होती है।
- जलवायु भारतीय जन जीवन को प्रभावित करती है।
- देश के भीतरी भागों में महाद्वीपीय और तटीय भागों में सम जलवायु दशाएं पाई जाती हैं।
- मानसून के पूर्व तथा उसके बाद चक्रवात आते हैं। जाड़े की ऋतु में भी चक्रवात आते हैं। ये चक्रवात वर्षा लाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. मानसून किसे कहते हैं?

ब. लौटता मानसून क्या है?

स. तापान्तर किसे कहते हैं?

द. भारत की जलवायु कौन सी है?

य. भारत में कौन-कौन सी चार ऋतुएं होती हैं?

र. भारत में शीतऋतु की सामान्य दशाओं का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं? लिखिए।

ब. भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

स. भारत में मानसून की उत्पत्ति किस प्रकार होती है? लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. शीत ऋतु में पश्चिमोत्तर भारत में वर्षा ..... द्वारा होती है।

ब. जब तापमान ऊँचा होता है तो वायुदाब ..... होता है।

स. ग्रीष्म ऋतु में उत्तर- पश्चिमी भारत में दोपहर बाद चलने वाली गर्म पवन को ..... कहते हैं।

द. जब तापमान 5 सेल्सियस से भी कम होता है उस समय चलने वाली ठंडी हवा को ..... कहते हैं।

- **भारत के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये-** कर्क रेखा, चेरापूंजी एवं मॉसिमराम, ग्रीष्मकालीन पवनें, अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्र, अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, भारतीय मरुस्थल

विविध प्रश्नावली-II

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

1. ताम्राश्मकाल किसे कहते हैं?
2. सिंधु घाटी सभ्यता किसे कहते हैं?
3. हड़प्पा सभ्यता की नगरीय विशेषताएँ लिखिए।
4. हड़प्पा सभ्यता की जीवनदायिनी नदी का नाम लिखिए।
5. हड़प्पा सभ्यता की शिल्प व तकनीकी ज्ञान की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
6. जनपद और महाजनपद में अन्तर लिखिए।
7. 600 ई. पूर्व में मध्यप्रदेश में कौन-कौन से जनपद थे?
8. वैदिककालीन लोगों के खानपान के बारे में लिखिए।
9. वैदिककाल के प्रारंभ में औजार किस धातु से बनाये जाते थे? उत्तर वैदिक काल में इनमें क्या अन्तर आया था।
10. श्रेणी किसे कहा जाता था?
11. चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित होने के बाद सैल्यूकस ने क्या किया?
12. मध्यप्रदेश के किस स्थान पर चार सिंहों वाला अशोक का स्तम्भ मिला है?
13. सम्राट अशोक उज्जैन में कितने वर्ष रहा?
14. ग्राम शिक्षा समिति के कार्य लिखिए।
15. अनुसूचित जनजाति से आशय लिखिए।
16. राष्ट्रध्वज के लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात बताइए।
17. भारत के राष्ट्रीय पशु का नाम लिखिए।
18. भारत में अधिकांश वर्षा कौन से महीनों में होती है?
19. शीतकाल में भारत के कौन से राज्य में वर्षा होती है?
20. भारत के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कौन-कौन से देश है?
21. भारत की उत्तर दिशा में कौन सा पर्वत है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

1. मगध साम्राज्य का विस्तार किन-किन कारणों से हुआ लिखिए।
2. हड़प्पा सभ्यता से आशय बताते हुए इस सभ्यता के पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए।
3. वैदिककाल के सामाजिक व आर्थिक जीवन का वर्णन कीजिए।
4. मगध साम्राज्य के आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालिए।
5. सामुदायिक विकास और जनसहयोग के आपसी संबंध पर प्रकाश डालिए।
6. भारत को प्राकृतिक विभागों में बाँटिए तथा किसी एक प्राकृतिक विभाग का विस्तार से वर्णन कीजिए।
7. भारत की जलवायु की विशेषताएँ बताइए ।

III. बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. हड़प्पा सभ्यता के लोगों को किस धातु का ज्ञान नहीं था-
   (अ) सोना (ब) चाँदी (स) ताँबा (द) लोहा
2. मध्यप्रदेश के किस स्थल की खुदाई से हड़प्पा सभ्यता की मुहर (सील) मिली है?
   (अ) महेश्वर (ब) नागदा (स) कुतवार (द) कायथा
3. अवन्ति महाजनपद का शासक था -
   (अ) बिंबिसार (ब) अजातशत्रु (स) उदयन (द) प्रद्योत

4. पंचमार्क (ठप्पे लगे सिक्के) का प्रचलन था -
(अ) हड़प्पा काल में (ब) जनपद व महाजनपद काल में
(स) वैदिक काल में (द) पाषाण काल में

5. जन, गण, मन ..... है -
(अ) राष्ट्रीय गीत (ब) राष्ट्रीय गान (स) प्रादेशिक गीत (द) राष्ट्रीय प्रतीक

6. भील किस वर्ग में आते हैं-
(अ) अनुसूचित जाति (ब) अनुसूचित जनजाति (स) अन्य पिछड़ा वर्ग (द) सामान्य

7. भारत एशिया के किस भाग में स्थित है -
(अ) पूर्व (ब) पश्चिम (स) उत्तर (द) दक्षिण

8. भारत के दक्षिण में स्थित है-
(अ) नेपाल (ब) पाकिस्तान (स) बांग्लादेश (द) श्रीलंका

9. सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान किस राज्य में स्थित है-
(अ) असम (ब) मेघालय (स) अरुणाचल प्रदेश (द) त्रिपुरा

IV. खाली स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. सिन्धु घाटी की सभ्यता को ..... सभ्यता भी कहते हैं।
2. हड़प्पा सभ्यता के ताम्राश्म काल को ..... युग भी कहते हैं।
3. अजातशत्रु के बाद मगध की गद्दी पर ..... बैठा।
4. उज्जैन का प्राचीन नाम ..... है।
5. नन्द वंश का संस्थापक ..... था।
6. शिशुनाग ..... प्रदेश का शासक था।
7. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर ..... थे।
8. गौतम बुद्ध के बचपन का नाम ..... था।
9. ..... युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ।
10. 'इंडिका' पुस्तक के लेखक ..... हैं।
11. शुंग वंश की स्थापना ..... ने की।
12. क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का स्थान ..... है।
13. अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी ..... है।
14. भारत की जलवायु ..... है।

V. असमान को अलग कीजिए-

1. दजलाफरात, सिन्धु, नील, कालीबंग
2. लोथल, कालीबंगा, धौलाबीरा, भोपाल
3. ऋषि, श्रेष्ठी, मुखिया, पुलिस
4. ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, सुनार
5. भारत, अवन्ति, मगध, कौशल
6. काशी, वत्स, अंग, अजातशत्रु
7. भील, भगोरिया, सहरिया, पिठौरा
8. मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, अगरतला, पंजाब
9. हिमाद्रि, हिमाचल, अरावली, शिवालिक

पाठ 18

शुंग सातवाहन एवं कुषाण काल

(200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत की स्थिति कैसी थी।
- उत्तर भारत के राजवंशों के बारे में।
- दक्षिण भारत के राजवंशों के बारे में।

पाठ 12 में मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी दी गई थी। आपने पहले यह भी जाना कि दक्षिण में कई राज्य थे। मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद के समय की जानकारी इस पाठ में दी गई है। लगभग 200 ई.पू. से 300 ई. तक का समय भारत के इतिहास में अत्यधिक उथल-पुथल का समय माना जाता है।

उस समय के भारत में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। जैसे शुंग, कण्व, सातवाहन, नाग, कुषाण, चोल पाण्डय और चेर इत्यादि प्रमुख थे।

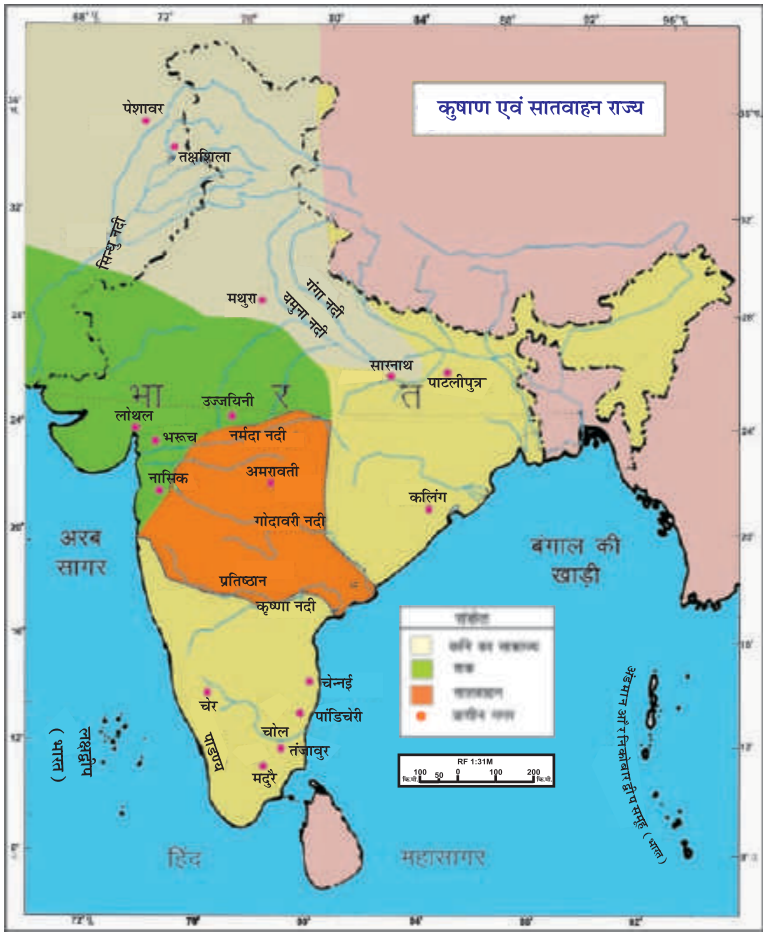

शुंग वंश - मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या करने के बाद पुष्यमित्र शुंग ने इस वंश की स्थापना 185 ई. पूर्व की।

मध्यप्रदेश के बेसनगर (विदिशा के पास एक स्थान) को शुंग राजाओं ने अपनी दूसरी राजधानी बनाया। यहीं पर यवन राजा एन्तीकस के राजदूत हैलियोडोरस का स्तंभ लेख है जिसमें उसके द्वारा भागवत धर्म स्वीकार करने की बात है। इसे स्थानीय लोग आज ''खाम्बबाबा'' कहते हैं।

खुदाई में यहाँ दूसरी शताब्दी ई.पू. के प्राचीनतम विष्णु मंदिर के प्रमाण मिले हैं। विदिशा में लुहांगी पहाड़ी पर शुंगकालीन स्तम्भ के अवशेष हैं। शुंग वंश में दस राजा हुए। पुष्यमित्र, अग्निमित्र, वासुदेव, भागभद्र आदि। इस वंश ने लगभग 112 वर्षों तक राज्य किया। उत्तर भारत के क्षेत्र में शुंग, कण्व, शक, नाग, कुषाण, हिन्द यूनानी वंशों का शासन रहा था। जबकि दक्षिण भारत में सातवाहन, चोल, चेर, पाण्डय राजाओं का शासन था।

कण्व वंश - शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या करके उसके मंत्री वासुदेव कण्व ने इस वंश की स्थापना की। इस वंश में भूमिमित्र, नारायण तथा सुदर्शन राजा हुये।

शक - शक लोग उत्तर पश्चिमी दिशा से आए थे। शक शासकों में पहला शासक मोआ या मावेज था। किन्तु इस वंश में सबसे प्रसिद्ध राजा रुद्रदमन हुआ था। जिसने उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया था। उसके शासन काल में प्रजा अत्यधिक सुखी थी। उसने कृषि के विकास के लिए नहरें एवं बांध बनवाकर अच्छी सिंचाई व्यवस्था करने के साथ ही प्रजा के कर माफ कर दिये थे। उसने सातवाहन राजाओं को मध्यभारत से भगाकर आंध्रप्रदेश में बसने के लिए विवश कर दिया था। इस वंश के शासकों ने गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल तक शासन किया था।

सातवाहन - दक्षिण भारत में सबसे प्रमुख सात वाहन राजा थे। प्रारंभ में नर्मदा नदी के उत्तर तक इनका राज्य फैला हुआ था। लेकिन शकों ने इन्हें पराजित कर आंध्रप्रदेश की ओर धकेल दिया था। इसलिये इन्हें आंध्रभृत्य (सातवाहन) नाम से भी जाना जाता है। इस वंश का संस्थापक सिमुक था। इस वंश में सबसे प्रतापी राजा सातकर्णी और गौतमी पुत्र सातकर्णी हुए। जिनके शासनकाल में सातवाहन राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। सातवाहनों के पड़ोसी राजा 'शकों' से युद्ध होते रहे। जिनमें विजय कभी सातवाहनों की तो कभी शको की होती रही। अंत में गौतमी पुत्र सातकर्णी के बेटे वशिष्ठ ने शक राजा की कन्या से

साँची स्तूप का तोरण द्वार

विवाह कर शांति की स्थापना की। सातवाहन राजाओं के समय जंगल साफ करके गाँव बसाये गए, गोदावरी और कृष्णा नदियों की घाटियों में आवागमन के लिए नई सड़कें बनायी गईं। सातवाहनों के समय व्यापारिक वृद्धि हुई। इस समय ईरान, इराक, अरब और मिस्त्र से व्यापार होता था। सातवाहन राज्य सुव्यवस्थित, कुशल प्रशासन युक्त तथा समृद्धिशाली था। साँची स्तूप के तोरणद्वार सातवाहनों के समय ही बने थे। वहाँ इनका अभिलेख भी है।

कुषाण- इनका मूल स्थान चीन था जहाँ से ई.सन् के आरंभ में इन लोगों ने भारत की ओर प्रस्थान किया और धीरे-धीरे गंगा मैदान के पश्चिमी भाग तक अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इसी वंश में कनिष्क प्रथम सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा हुआ। जिसके शासन काल में राज्य में धर्म, साहित्य और कला का खूब विकास हुआ। कनिष्क के समय ही कुण्डलवन कश्मीर में चौथी बौद्ध महासभा हुई। इसमें बौद्ध धर्म की महायान शाखा को मान्यता मिली। इससे बुद्ध की मूर्ति बनायी जाने लगी जबकि पहले बुद्ध की मूर्ति नहीं बनाई जाती थी। शक संवत की शुरुआत भी कनिष्क ने की थी।

नागवंश- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में विदिशा, पवाया (पदमावतीनगर) कुतवार (कुंतलपुरी) तथा मथुरा क्षेत्र में एक नये राजवंश का उदय हुआ। जो नागवंश के नाम से प्रसिद्ध था। कुषाण वंश के अंतिम नरेशों की कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर इस वंश के राजाओं ने अपना साम्राज्य विस्तार किया तथा विदेशियों को भारत से खदेड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चोल- चेन्नई के दक्षिण में स्थित वर्तमान तंजौर और तिरुचिरापल्ली के आस-पास के क्षेत्र पर चोल शासकों ने अपना अधिकार स्थापित किया था। इसलिए इस क्षेत्र को चोल मंडल के नाम से जाना जाता था। प्रारंभिक चोलों के बारे में ज्यादा जानकारी अभी ज्ञात नहीं है। दूसरी शताब्दी ई. में चोल वंश का प्रसिद्ध शासक कारिकाल था। उसने लंका पर आक्रमण किया और वहाँ से हजारों श्रमिक अपने साथ लाया, जिन्होंने कावेरी नदी पर बांध बनाया। पुरानी राजधानी उरैयूर के स्थान पर उसने नई राजधानी कावेरी पद्दिनाम बनाई।

चेर- चोल राज्य के पश्चिम में उसका पड़ोसी राज्य चेर था, जो आज के केरल मालाबार के तटीय क्षेत्र में स्थापित था। अशोक के अभिलेखों में भी चेर, चोल,पाण्डय का उल्लेख मिलता है। चेर राजा नेडुचेरलादान को वीर शासक माना जाता है उसने न केवल कई राज्यों को जीता और रोम के जहाजी बेड़े को भी पकड़ लिया था।

पाण्डय- चोल राज्य के दक्षिण में पाण्डय राज्य था। इस राज्य की सीमा चेर राज्य से भी मिलती थी। यह राज्य आज के मदुरै और तिनेवली जिलों के आसपास के क्षेत्र में फैला था। अशोक के अभिलेख में इसका नाम आया था। एक पाण्डय राजा ने पहली शताब्दी ई.पू. में रोम के सम्राट अगस्टस के पास अपना राजदूत भेजा था। इनके शासन काल में विद्या और व्यापार ने अत्यधिक उन्नति की थी।

हिन्द यूनानी- सिकन्दर के उत्तराधिकारियों का ध्यान भारत के उत्तर पश्चिम सीमा क्षेत्र की ओर गया।

जहाँ का व्यापार ईरान और पश्चिमी एशिया के साथ चलता था। उन्होंने गंधार क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित किया। इन शासकों में मिनाण्डर सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ। उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। तब उसका नाम मिलिन्द रखा गया था। यहां अनेक यूनानी शासकों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पड़ा। एक यवन (यूनानी) राजदूत हैलियोडोरस ने वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया और उसने बेसनगर (विदिशा) में एक गरुड़ स्तंभ बनवाया इसी पर एक अभिलेख खुदा हुआ है जिसमें लिखा है कि उसने यह स्तंभ लगवाया है।

जनजीवन- इस समय का जनजीवन आज से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। अधिकतर लोग किसान थे। उनके परिवार में लोग एक साथ मिल-जुलकर रहते थे। इस समय तक लोग वर्ण व्यवस्था को (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) अत्यधिक महत्व देने लगे थे। नृत्य, संगीत और काव्य पाठ से अधिकतर लोग अपना मनोरंजन करते थे। राजा ही राज्य का संचालन करता था। व्यापारियों की तरह ही लोग सामान या माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे तो उनको कर देना पड़ता था। उत्तर भारत के किसान दक्षिण भारत के किसानों से अधिक सम्पन्न थे। उत्तर भारत का क्षेत्र सिन्धु और गंगा का मैदानी भाग होने के कारण अधिक उपजाऊ था। इसी तरह दक्षिणी भारत एक पहाड़ी क्षेत्र था। इसलिए यहाँ कम उपजाऊ भूमि थी तथा यहाँ खेती करना कठिन था। वहाँ लोग पशु पालते थे। कुछ ऐसे नगर समुद्र के किनारे थे, जहाँ से व्यापार करना सहज था।

रोमन व्यापार- इस समय रोम के जहाज व्यापार करने के लिए मालाबार और तमिलनाडु के पूर्वी तट पर आते थे, जो भारत से मसाले, कपड़े, कीमती पत्थर और बंदर व मोर जैसे पशु-पक्षी अपने साथ ले जाते थे और बदले में भारतीयों को बहुत सा धन एवं सोना प्राप्त होता था। इसलिए दक्षिण के लिये कहा जाता था कि दक्षिण भारत के राज्यों को रोम के सोने ने धनवान बना दिया था।

समाज एवं धर्म- इस काल में उत्तर भारत और दक्षिण भारत में धर्म की स्थिति अलग-अलग थी। उत्तर भारत में बौद्ध धर्म बहुत लोकप्रिय था। जनता को बौद्ध धर्म की शिक्षा देने के लिये उनके मध्य भिक्षुओं को भेजा जाता था। इस समय अश्वघोष और नागार्जुन के ग्रंथों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ राजाओं के द्वारा जैन धर्म को भी राजाश्रय प्रदान किया गया था।

समाज में वैदिक धर्म भी पूर्ववत ही प्रचलित था, लेकिन इस काल में पहले के देवी-देवताओं को बदल दिया गया था, जो इस काल की प्रमुख विशेषता मानी जाती है। अब शिव, विष्णु तथा अन्य देवी-देवताओं की उपासना अधिक होने लगी थी तथा लोग यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों के बजाय ईश्वर की भक्ति को अधिक महत्व देने लगे थे।

दक्षिण भारत में यद्यपि बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के अनुयायी थे अपितु यहाँ पुराने वैदिक देवी-देवताओं की पूजा एवं धार्मिक अनुष्ठानों को अधिक महत्व दिया जाता था। तमिल लोगों का सबसे प्रसिद्ध देवता मुरुगन था, जिसे पर्वतवासी देवता भी कहा जाता था। इसी तरह समुद्र तट के निवासी समुद्र देवता की आराधना करते थे।

ईसा की पहली सदी में पश्चिम एशिया में एक नये धर्म का उदय हुआ और यहीं से यह धर्म भारत पहुंचा था। इसके जनक ईसा मसीह थे। ईसा के जन्म को आधार मानकर तिथि की गणना की जाती है। ईसा के जन्म के पहले की घटनाओं को ईसा पूर्व में और उसके बाद की घटनाओं को ईसवीं सन् लिखा जाने लगा।

संगम-साहित्य - वैदिक साहित्य का विकास पूर्ववत ही होता रहा किन्तु दक्षिण भारतीय इतिहास में यह अवधि संगम साहित्य के नाम से विशेष लोकप्रिय हुई। दरअसल कभी पहले दक्षिण भारत में तीन कवि परिषदों का आयोजन किया गया, जिसमें तीसरी कवि परिषद् मदुरै (पाण्डय राज्य) में आयोजित की गयी। उसमें कवि, भाट, चारण एकत्र हुए और अपनी रचनाएँ लिखी थी। जिन्हें आठ पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया, जो आज भी उपलब्ध है। इसे ही संगम साहित्य कहा जाता है। इन पुस्तकों में दक्षिण भारत में कबीलों के सरदारों और साधारण लोगों के जीवन का वर्णन मिलता है।

विचारों का आदान-प्रदान- इस काल की प्रमुख विशेषता थी- विचारों का अदान-प्रदान। इस काल में भारतीय, विदेशियों के संपर्क में आये, जिससे भारतीय जीवन के विभिन्न पक्षों में धर्म कला एवं विज्ञान से संबंधित न केवल नवीन विचारों का प्रवेश हुआ वरन कई परिवर्तन भी हुए। भारत, ईरान और पश्चिम एशिया के संपर्क में आया साथ ही भारतीय वस्तुएं विदेशों में पहुँचने लगीं, जिससे भारत के तक्षशिला, उज्जैन और मथुरा जैसे नगरों का महत्व अधिक बढ़ गया था।

चैत्य हाल (कार्ले)

कला- इस काल में कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। विशेषकर बौद्ध धर्म के क्षेत्र में सातवाहन राजाओं के शासनकाल में नगरों में रहने वाले व्यापारी और कारीगरों के धनवान होने के कारण उन्होंने बौद्ध विहारों को खुलकर दान दिया जिसका उपयोग चैत्य मण्डपों एवं स्तूपों की सजावट में किया गया तथा नवीन स्तूप बनवाए गए। इन स्तूपों में बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे जाते थे, इसलिए इन्हें पवित्र माना जाता था। भोपाल के पास साँची स्थित है। यहाँ स्तूप की वेदिका (रैलिंग) और तोरणद्वार इसी काल में बनाये गये थे, जो अत्यंत सुंदर है। इसी काल में अमरावती स्तूप बनाया गया, साथ ही तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान में) और सारनाथ (वाराणसी के निकट) में बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए विहार बनाये गए। इसी तरह पुणे (महाराष्ट्र) के पास स्थित कार्ले बेदसा एवं भाजा के गुफा विहार इसी काल में बनाए गए थे। इसी अवधि में भारत में विदेशी मूर्ति कला का प्रवेश हुआ। परिणामस्वरूप यहाँ रोमन देवी-देवताओं जैसी मूर्तियाँ भी बनने लगी। इस क्षेत्र में गांधार प्रदेश के भारतीय कलाकारों ने विशेष रुचि लेकर बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक दृश्य पटल यूनानी शैली में बनाए। यह कला शैली 'गांधार कला' के नाम से लोकप्रिय हुई और पंजाब से कश्मीर तक फैल गई। गांधार के कलाकारों के

अतिरिक्त मथुरा के कलाकारों ने बुद्ध की अनेक मूर्तियां बनाई गयी। किन्तु उन्होंने यूनानी शैली की नकल नहीं की इसलिए उनकी शिल्पकला को मथुरा शैली के नाम से संबोधित किया गया।

इस प्रकार आपने देखा कि ई.पू. 200 से 300 ईस्वी तक के भारत के इतिहास में अनेक राजाओं ने शासन किया जो अलग-अलग वंश के थे। इस अवधि में साहित्य एवं कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई थी।

गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. शुंग वंश की स्थापना किसने की थी?

ब. सातवाहन राज्य का संस्थापक कौन था?

स. कनिष्क के शासनकाल में चौथी बौद्ध सभा संगीति कहाँ हुई।

द. नाग-वंश का उदय कहाँ हुआ।

य. उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश कौन से थे?

र. दक्षिण भारत के राजवंश कौन-कौन से थे।

ल. संगम साहित्य में किसका वर्णन मिलता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. भारत के इतिहास में 200 ई.पू. से 300 ई. तक का काल कैसा माना जाता है?

ब. 200 ई.पू. से 300 ई. तक की कला के बारे में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. शक वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा ..... था।

ब. मौर्य वंश का अंतिम शासक ..... था।

स. कनिष्क ने ..... में बौद्ध महासभा करवाई थी।

द. सातवाहन वंश का संस्थापक ..... था।

4. जोड़ी बनाइए

अ.	ब.
अ. सातकर्णी	शक
ब. रुद्रदमन	शुंग
स. अग्निमित्र	कुषाण
द. कनिष्क	सातवाहन

पाठ 19

गुप्तकाल एवं उत्तर गुप्तकाल

(300 ई. से 800 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 300 ई.से. 800 ई. तक के भारत के प्रमुख राजवंश कौन-कौन थे?
- 300 ई. से 800 ई. तक राजनैतिक धार्मिक एवं सामाजिक दशा कैसी थी?

सातवाहन एवं कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात कई राजवंशों का अभ्युदय हुआ। इनमें वाकाटक और मौखरी वंश के अतिरिक्त गुप्तवंश महत्वपूर्ण था। मौर्यों के पतन के पश्चात् नष्ट हो चुकी भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित किया। इस काल में भारत में आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अपार उन्नति हुई। इस कारण गुप्तकाल को **भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग** कहा जाता है। इस वंश में कई शक्तिशाली राजा हुए, जिसमें चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त एवं स्कन्दगुप्त प्रसिद्ध हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम- गुप्तवंश की स्थापना श्री गुप्त ने की थी। चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक हुआ था। इसने साकेत (अयोध्या) तथा प्रयाग (इलाहाबाद) को जीतकर अपने साम्राज्य को बढ़ाया। इसने लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया और अपने राज्य की सीमाओं में वृद्धि करके चन्द्रगुप्त स्वतंत्र राज्य का स्वामी बन गया था। तब उसे **'महाराजाधिराज'**, अर्थात् राजाओं का राजा कहा जाने लगा था। चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त हुआ।

समुद्रगुप्त- चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त राज गद्दी पर बैठा। समुद्रगुप्त एक महान विजेता था। उसने उत्तर भारत के 9 शक्तिशाली राजाओं को जीता और उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसके बाद विन्ध्य पर्वत क्षेत्र के 8 गणराज्यों को जीत लिया। फिर समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के 12 राज्यों पर विजय प्राप्त की बाद में उन राजाओं के राज्य उन्हें वापस लौटा दिए। सीमावर्ती राजाओं ने भी डर कर मित्रता कर ली। इस तरह उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

समुद्रगुप्त को भारत के महान राजाओं में गिना जाता है। उसने अच्छी शासन व्यवस्था स्थापित की थी। अपनी प्रजा के प्रति वह बहुत दयावान था। निर्धन, असहाय तथा पीड़ित लोगों की वह सदा सहायता करता था। वह एक बुद्धिमान और कलाप्रिय शासक था। वह स्वयं एक अच्छा कवि था एवं कवियों तथा विद्वानों को आश्रय देता था। गुप्तवंश की वृहत जानकारी इलाहाबाद के किले के स्तम्भ लेख से मिलती है। इसी स्तम्भ पर सम्राट अशोक के विषय में भी लेख अंकित है। गुप्तवंश के सम्राट समुद्रगुप्त की विजयों का इस पर वर्णन है। इसे प्रयागप्रशस्ति कहा जाता है। इस पर खुदे हुए लेख की रचना समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने की थी।

चन्द्रगुप्त द्वितीय- समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। शकों को परास्त करना इसकी बड़ी सफलता थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ही 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की तथा उज्जैन नगर को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया। इसकी सभा में नवरत्न थे। उसने अपना विवाह नाग राजा की कन्या कुबेर नागा से किया तथा अपनी पुत्री का विवाह वाकाटक वंश के राजकुमार रूद्रसेन से किया। इसने आक्रमण, विवाह-संबंधों के द्वारा अपने साम्राज्य को मजबूत किया। अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह चन्द्रगुप्त भी महान विजेता था।

उसने मालवा, गुजरात, सौपारा, पंजाब की सात नदियों के पार का क्षेत्र, अरब सागर तट, बंगाल, असम, हिमालय की तलहटी, दक्षिण में नर्मदा नदी तक साम्राज्य को फैलाया और दृढ़ किया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध **चीनी यात्री फाह्यान** भारत आया था। उसके यात्रा

विवरणों से तथा सिक्के, अभिलेख, ताम्रपत्र आदि से हमें गुप्तकाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था - गुप्तकाल में प्रशासन को सुविधापूर्वक चलाने हेतु साम्राज्य को कई प्रांतों में बांटा गया था। प्रान्तों को जिलों में बांटा गया था। शासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी। इस तरह शासन सुव्यवस्थित था। प्रान्तों का शासन उपरिक महाराज* द्वारा चलाया जाता था। जिलों याने 'विषयों' का प्रशासन विषयपति** चलाते थे। ग्राम प्रशासन की देखभाल ग्रामीणों की मदद से गाँव का मुखिया करता था।

सामाजिक व्यवस्था - गुप्त राजाओं के समय प्रजा सुखी और संपन्न थी। सम्राट न्यायप्रिय होने के कारण प्रजा ईमानदार, कानून को मानने वाली, सहिष्णु तथा प्रगतिशील थी। अधिकांश लोग शाकाहारी थे। समाज जातियों में बँटा हुआ था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्णों की स्थापना हो चुकी थी। इस समय अंतर्जातीय विवाह भी होते थे। अधिकतर जातियाँ आपस में मेल जोल के साथ रहती थीं, परन्तु एक वर्ग ऐसा भी था जिन्हें अछूत समझा जाता था।

व्यापार और व्यवसाय - गुप्तकाल में व्यापार काफी उन्नत था। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के व्यापार होते थे। इस काल में जल तथा थल दोनों मार्गों से व्यवसाय एवं व्यापार होता था। इस समय उज्जैन, मथुरा, कौशाम्बी, विदिशा, बनारस, गया, ताम्रलिप्त, मदुरै आदि प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे। दक्षिण-पूर्व एशिया के सुवर्णभूमि, वर्मा, कम्पूचिया आदि देशों के साथ भारत का व्यापार होता था।

व्यापारिक उन्नति के कारण समाज की स्थिति उन्नत अवस्था में थी। चारों तरफ शांतिपूर्ण वातावरण था। इसी कारण गुप्तकाल को **'स्वर्ण युग'** के नाम से भी जाना जाता है।

कला एवं साहित्य का विकास- गुप्तकाल में विविध प्रकार की कलाओं का विकास हुआ। मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्यकला आदि का विकास हुआ। गुप्तकाल में बड़े पैमाने पर मूर्तियों, मंदिरों, गुफाओं का निर्माण हुआ। जैसे - विदिशा के पास उदयगिरि की गुफाएं, भीतरगांव का मंदिर कानपुर में तथा ललितपुर के पास देवगढ़ के मंदिर तिगवा (कटनी)। इसके साथ-साथ देवी-देवताओं, जैन तीर्थकरों, बुद्ध तथा बोधिसत्वों की अनेकों प्रतिमाएँ भी बनायी गयीं। इसका अर्थ है कि राजा हिन्दू धर्म के साथ ही दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। महरौली (दिल्ली) में स्थित लौह स्तंभ गुप्तकाल की तकनीकी एवं स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है।

सिक्के पर वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त का चित्र इस बात का प्रमाण है कि उस काल में संगीत एवं नृत्य को अधिक प्रोत्साहन दिया गया। सोने तथा चांदी की मुद्राओं का प्रचलन भी गुप्तकाल में हुआ।

सारनाथ की बुद्ध मूर्ति और मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति गुप्तकाल की मूर्तिकला के प्रमुख

***उपरिक महाराज** - प्रांत का प्रमुख व्यक्ति

****विषयपति** - जिले का मुखिया

उदाहरण है।

चित्रकला- गुप्तकाल में चित्रकला का विकास चरम सीमा प्राप्त कर चुका था। अजन्ता की गुफाएँ तथा मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाओं का चित्रांकन भी इसी समय हुआ था। अजंता एवं बाघ में पहाड़ियों को काटकर कुछ बुद्ध विहार बनाए गए। गुफाओं की भित्ति पर बौद्ध के जीवन की घटनाओं को भित्तिचित्र के रूप में चित्रित किया गया।

साहित्य एवं विज्ञान- गुप्तकालीन साहित्य के विकास में कालिदास का महान योगदान है। कालिदास संस्कृत के महान विद्वान थे। उन्होंने 'मेघदूत', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'रघुवंश' आदि ग्रन्थों की रचना की। आचार्य व्यास, गुप्तकाल के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। कामन्दक ने ''नीतिसार'' नामक अनुपम नीति ग्रंथ लिखा। वराहमिहिर सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न के रूप में सुशोभित थे। जो खगोल एवं गणितज्ञ थे।

गुप्तकाल में गणित, पदार्थ विज्ञान, धातुविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान की भी अधिक उन्नति हुई। इस काल में गणितज्ञों ने दशमलव पद्धति का प्रयोग किया। आर्यभट्ट ने ज्योतिष और खगोलशास्त्र में प्रमुख योगदान दिया।

धार्मिक जीवन- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी (विष्णु के उपासक) थे। गुप्तकाल में, शिव, शक्तिदेवी, विष्णु आदि देवताओं की उपासना की गई। इस युग में अश्वमेघ यज्ञ जैसे धार्मिक यज्ञ किये गये। इस काल में महाभारत और रामायण का पुन: लेखन किया गया। संस्कृत भाषा का वर्तमान स्वरूप गुप्तकाल में ही बना। गुप्त सम्राट हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि के देवस्थानों को बिना भेदभाव के उदारता से दान देते थे।

गुप्त साम्राज्य का पतन - कालान्तर में विशाल गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी अपने पूर्वजों की तरह योग्य साबित नहीं हुए। साथ ही हूणों के बार-बार आक्रमण करने से गुप्तकाल का पतन प्रारंभ हो गया। परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य वाले क्षेत्र में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ जैसे, मगध के परवर्ती गुप्त नरेश, कन्नौज के मौखरी वंश, पूर्वी भारत (बंगाल) में गौड़ वंश, वल्लभी का मैत्रक राज्य, मालवा का यशोधर्मन, थानेश्वर का पुष्यभूति राज्य, दक्षिण भारत में चालुक्य तथा पल्लव राजवंश प्रमुख थे।

पुष्यभूति वंश का उदय- हरियाणा-दिल्ली के क्षेत्र में पुष्यभूति वंश या वर्धन वंश के राजाओं ने राज्य किया इनमें हर्षवर्द्धन सबसे प्रतापी राजा हुआ था।

हर्षवर्द्धन- हर्ष के पिता का नाम प्रभाकरवर्द्धन था। हर्ष ने हूणों को हराने में अपने बड़े भाई राज्यवर्द्धन की सहायता की। बंगाल के राजा शशांक ने धोखा देकर राज्यवर्द्धन का वध कर दिया। अत: हर्षवर्द्धन को राज्य की जिम्मेदारी उठाना पड़ी। वह 606ई. से सिंहासन पर बैठा। उसने बंगाल के शासक शंशाक से अपने भाई की हत्या का बदला लिया। हर्ष अपने पराक्रम, साहस, चतुराई से भारत को एक सूत्र में बाँधने में सफल हुआ। थानेश्वर उसकी राजधानी थी।

हर्ष के राजकवि बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में सम्राट हर्ष के जीवन तथा कार्यों के बारे में लिखा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था। उसने अपने यात्रा विवरण में भारत के कई राज्यों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में लिखा है।

साम्राज्य विस्तार - हर्ष ने कन्नौज को राज्य की राजधानी बनाया, जिससे थानेश्वर और कन्नौज राज्य एक हो गये। हर्ष ने पंजाब, पूर्वी राजस्थान, असम और गंगाघाटी के प्रदेशों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। 620 ई. में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष की विजय अभियान को नर्मदा नदी के किनारे पर रोक दिया। हर्ष के साम्राज्य में मगध, उड़ीसा, पूर्वी बंगाल, गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा तथा सिन्धु प्रदेश सम्मिलित थे। हर्ष ने जिन राजाओं को हराया था वे सभी हर्ष को कर देते थे और युद्ध के समय उसकी

मदद के लिए अपने सैनिक भेजते थे। इस काम के बदले में वे अपने क्षेत्र के राजा बने रहे।

शिक्षण संकेत : हर्षकालीन साम्राज्य विस्तार के संबंध में मानचित्र पर चर्चा कराएँ।

धर्म- हर्ष सूर्य तथा शिव का उपासक था। उसने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। वह दूसरे धर्मों का भी पूरा सम्मान करता था तथा उन्हें आश्रय देता था। हर्ष उदार शासक था। वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों का आदर करता था।

हर्ष ने कन्नौज में सभी धर्मों का महासम्मेलन करवाया था। हर्ष प्रयाग में हर पांचवे वर्ष धार्मिक सभा का आयोजन कराता था। इस सम्मेलन में ब्राह्मण, धर्माचार्य, बौद्ध, जैन, तपस्वी, यात्री तथा हर्ष के अधीनस्थ सभी राजा आदि भाग लेते थे। हर्षवर्द्धन निर्धनों, अनाथों, अपंगों को दान देता था।

ह्वेनसाँग - चीनी यात्री ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण इस काल के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक इतिहास जानने का प्रमाणिक साधन है। ह्वेनसाँग मध्य एशिया को पारकर चीन से भारत पहुँचा। उस समय उसकी उम्र मात्र 26 साल थी। अनेक वर्षों तक भारत भ्रमण करके वापस चीन लौट गया। ह्वेनसाँग के अनुसार बौद्ध धर्म पूर्वी भारत में लोकप्रिय था।

ह्वेनसाँग

नालंदा विश्वविद्यालय- नालंदा (बिहार राज्य) का राजगृह के निकट का एक पुरातात्विक स्थल उस समय देश का प्रमुख विश्वविद्यालय था। भारत और एशिया के अन्य देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन करने आते थे। नालंदा बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने भी नालंदा की यात्रा की थी।

सामाजिक जीवन- ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण के अनुसार हर्ष के शासन में प्रजा संपन्न तथा सुखी थी। अमीर, गरीब सभी लोग धार्मिक सहिष्णुता तथा सौहार्दपूर्वक रहते थे। कुछ लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। लोग गर्ममिजाजी (जिन्हें जल्दी गुस्सा आता है) तथा ईमानदार थे। राज्य में मृत्युदंड नहीं दिया जाता था।

हर्ष का शासन प्रबन्ध - साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी तथा न्यायाधीश राजा होता था। मंत्रिपरिषद् में प्रधानमंत्री, राजपुरोहित, सेनापति, अर्थमंत्री विभागों के प्रमुख मंत्री थे। शासन की सुविधा के लिए साम्राज्य **भुक्तियों** (प्रान्तों), **विषयों** (जिलों) तथा **ग्रामों** में बंटा था। भुक्ति का शासक **उपरिक** (महाराज) कहलाता था। विषय का प्रधान कर्मचारी **विषयपति** तथा ग्राम का प्रधान **ग्रामिक** कहलाता था।

हर्ष प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। वह दिन के पहले भाग में प्रशासन संबंधी कार्यों तथा दिन के दूसरे भाग में धार्मिक कार्यों में व्यतीत करता था। ह्वेनसांग के अनुसार- हर्षवर्द्धन ने छठवें धार्मिक समारोह में पाँच वर्ष में एकत्रित धन, दान में दे दिया। सन् 647 में हर्षवर्द्धन की मृत्यु हो गयी। उसका कोई पुत्र नहीं था। अतः योग्य उत्तराधिकारी के अभाव में उसका साम्राज्य नष्ट हो गया।

चालुक्य - दक्षिण भारत में सातवाहन शासकों के पतन के बाद कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय के साथ लगभग इसी समय नवीन चालुक्य वंश का भी उदय हुआ। चालुक्यों की राजधानी वातापी थी। इनके प्रमुख शासक जयसिंह रणराज पुलकेशिन प्रथम, कीर्तिवर्मन, पुलकेशिन द्वितीय थे।

इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय था। इसने नर्मदा तट पर हर्षवर्द्धन को पराजित किया। चालुक्य नरेश कला के प्रेमी थे। उनके शासनकाल में कला तथा धर्म की उन्नति हुई। वातापी का मंगलेश का मंदिर, मेंगुती का शिवमंदिर, एहोल का विष्णु मंदिर इस काल की स्थापत्य कला के सुंदर उदाहरण है। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के राजा खुसरो द्वितीय के पास दूतमण्डली भेजी थी।

पल्लव- सातवाहन राज्य के पतन के बाद पल्लव भी अपने अधीन इलाकों के शासक हो गये। इन्होंने अपनी राजधानी काँची (काँचीपुरम) बनायी। महेन्द्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन द्वितीय, पल्लव वंश के प्रसिद्ध शासक हुए। नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया। मामल्लपुरम (महाबलीपुरम) के पांच रथ मंदिरों का निर्माण पल्लव नरेशों ने कराया था।

राष्ट्रकूट- दक्षिण भारत में पल्लव, चालुक्यों से राष्ट्रकूट राजाओं के युद्ध होते रहते थे राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों को हराकर उनके क्षेत्र को जीत लिया।

तमिल संत- इस काल में नई धार्मिक विचारधारा का जन्म हुआ, जो भक्ति धारा कहलायी। इसमें कारीगर और किसान तथा अनेक जातियों के लोग शामिल थे, जो घूमते हुए विष्णु और शिव की स्तुति में गीत गाते थे। इनमें अलवार, विष्णु के उपासक और नयन्नार, शिव के उपासक थे। ये गीत जनसाधारण की तमिल भाषा में लिखे और गाए गये।

स्थापत्यकला - दक्षिण भारत के राजाओं को मंदिर निर्माण कराने का बड़ा शौक था। महाबलीपुरम् के रथ मंदिरों को पल्लव शासकों ने चट्टानों को काटकर बनवाया। कुछ मंदिर प्रस्तर खंडों से बनाये गये जैसे कांचीपुरम् का मंदिर। मंदिरों का उपयोग सामाजिक और धार्मिक केंद्र के रूप में होता था। मंदिरों के हितों के लिए प्रबंध समिति होती थी।

पारसी धर्म - पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के पास दूतों को भेजा। सौ वर्ष बाद जरथुस्त्रियों ने ईरान को छोड़कर भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आकार रहने लगे। यही लोग आगे चलकर पारसी कहलाये। इनकी पवित्र पुस्तक का नाम 'जिन्द-ए-अविस्ता' है। पारसी समुदाय के लोगों ने भारतीय व्यापार एवं व्यवसाय में प्रमुख भूमिका निभायी।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए-

(अ) गुप्तवंश के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए?

(ब) समुद्रगुप्त ने किन-किन राज्यों को जीता?

(स) गुप्तकाल में साम्राज्य को किन-किन भागों में बांटा गया था?

(द) हर्षवर्धन की विजयों का वर्णन कीजिए।

(य) गुप्तकाल के प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।

(र) चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा जीते गए राज्यों के नाम लिखिए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए-

(अ) गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। समझाइए।

(ब) 300 ई. से 800 ई. तक के राजनैतिक एवं सामाजिक दशा पर प्रकाश डालिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) चन्द्रगुप्त द्वितीय के पिता ..... थे।

(ब) ..... चीनी यात्री था।

(स) मेघदूत के रचियता ..... थे।

(द) मैहरौली में ..... स्थित हैं।

4. जोड़ी बनाइए-

क	ख
कालिदास	ज्योतिषी और खगोलशास्त्री
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	चित्रकला
अजन्ता	कालिदास
आर्यभट्ट	नीतिसार
कामन्दक	कवि

5. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(अ) मेघदूत के रचियता थे-

(i) चरक, (ii) वाल्मीकि, (iii)कालिदास, (iv)वात्सायन।

(ब) सूर्य सिद्धान्त का संबंध है।

(i) साहित्य, (ii) गणित, (iii) ज्योतिष, (iv) खगोलशास्त्र।

(स) चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उपाधि धारण की।

(i) रत्न, (ii) देवव्रत, (iii) विक्रमादित्य।

(द) विषयपति, प्रशासक होता था।

(i) ग्राम का, (ii) जिले का, (iii) प्रान्त का।

प्रोजेक्ट कार्य

- गुप्तकाल के साहित्यकारों, गणितज्ञ, ज्योतिषों एवं खगोलशास्त्रियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल की साहित्यिक कृतियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल के प्रमुख राजाओं की सूची बनाइए।

पाठ 20

एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध

आइए सीखें

- हमारे देश का विश्व से सम्पर्क कितना प्राचीन है?
- भारत से दुनिया ने क्या-क्या सीखा?
- भारत और यूरोप के बीच अरब देश किस तरह सम्पर्क सूत्र का कार्य करते थे?
- रेशम के व्यापार में भारत की क्या भूमिका थी?
- श्रीलंका तथा चीन से हमारे संबंध कितने प्राचीन हैं?
- भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार।
- विश्व के प्रमुख धर्मों का भारत से संबंध व प्रभाव।

प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता व संस्कृति दूर-दूर तक फैल गई थी। साम्राज्य विस्तार के पूर्व ही भारतीय व्यापारी विश्व के अनेक देशों से अपने व्यापारिक संबंध बना चुके थे। इस पाठ में आपको पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के संबंधों की जानकारी प्राप्त होगी।

भारत का पश्चिम देशों से संबंध

हड़प्पा सभ्यता के उत्खनन क्षेत्रों से प्राप्त अनेक वस्तुओं से यह जानकारी मिलती है कि ईसा से कोई 3000 वर्ष पहले भारत तथा मिस्र एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता के बीच व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध थे। ईसा से 600 वर्ष पूर्व पहले से ही भारत के फारस, यूनान तथा रोम से संबंध थे। सिकन्दर के भारत आक्रमण के पश्चात यूनान के साथ संबंध बने। चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज था। रोमन इतिहासकार प्लिनी भारतीय वस्तुओं जैसे रेशम, कपास, आभूषण, गरम मसाले आदि के बढ़ते आयात से चिन्तित था। इस प्रकार की वस्तुओं के कारण रोम का बहुत सा धन भारत पहुँचता था। संगम साहित्य में भारत के बाहर से आए हुए लोगों को यवन कहा गया है। रोम निवासियों की एक बस्ती तमिलनाडु के अरिकमेंडु स्थान पर बसी हुई थी।

भारत का अरब देशों से संबंध

अरब देशों और भारत के संबंध अति प्राचीन रहे हैं। अरबों ने भारत से भारतीय अंक पद्धति तथा दशमलव प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया। वे भारतीय अंकों को हिन्दसा कहते थे। अरबों से इस ज्ञान को यूरोपवासियों ने प्राप्त किया। इसीलिए यूरोप में इन अंकों को अरबी अंक कहा जाता था। इस्लाम धर्म के उदय के बाद अरबों ने भारत व यूरोप के बीच जाने वाले स्थल मार्ग पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार वे भारत तथा यूरोप के बीच एक कड़ी बन गये। विज्ञान, गणित, ज्योतिष, औषधि विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अध्ययन पहले अरबवासी भारत में करते थे।

भारत का मध्य एशिया से संबंध

पहाड़ी प्रदेश होने के कारण मध्य एशिया के खोतान, कूची, कैराशहर तथा काशगर सहज सम्पर्क में नहीं थे। परन्तु मध्य एशिया के इन नगरों के बीच सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध प्राचीनकाल से थे। महाभारत में धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का उल्लेख मिलता है। गंधार प्रदेश इसी क्षेत्र में विद्यमान था। इसी क्षेत्र को वर्तमान में अफगानिस्तान कहते हैं। गंधार प्रदेश बौद्ध धर्म तथा कला का बहुत बड़ा केंद्र था। बुद्ध की प्राचीनतम प्रतिमाएँ इसी क्षेत्र में बनी। सम्राट अशोक ने अपने धर्म प्रचारकों को मध्य एशिया में भेजा था। उसके दो अभिलेख इस क्षेत्र में मिले हैं।

रूस के दक्षिण भाग में प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। सुर्खान नदी के तट पर हलचयन तथा उज्बेकिस्तान के दक्षिण में दल्वेर्जिन तोपें उत्खनन में कुषाण काल में कला के विकास तथा उस पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के बारे में रोचक जानकारियाँ मिली हैं।

भारत का चीन से संबंध

भारत के बौद्ध धर्म का चीन में प्रवेश ह्वान वंश (202 ई.पू. से 600 ई.) के शासन काल में हुआ। भारत और चीन के रास्ते में स्थित खोतान में बौद्ध धर्म का खूब प्रसार हुआ। यहीं से यह धर्म चीन में फैला। चीनियों ने दूसरी शताब्दी ई.पू. से भारत में शिक्षा एवं बौद्ध धर्म का ज्ञान प्राप्त करने हेतु आना प्रारंभ किया। चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद सर्व प्रथम कश्यप मातंग ने किया। जो चीन देश को ई. सन् 56 में गया था। चीन से बौद्ध धर्म सन् 372 ई. में कोरिया में और सन् 538 ई. में जापान में प्रचारित हुआ। अमोघवज्र भारतीय बौद्ध विद्वान था जो आठवीं सदी में चीन गया था। भारत की यात्रा अनेक चीनी विद्वानों ने की। इनमें सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में आने वाला चीनी यात्री फाह्यान (405-411 ई.) छः वर्षों तक भारत में रहा। दूसरा प्रख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग था। ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया।

चीन को रेशम उत्पादन की भूमि कहा गया है। यहाँ के रेशमी वस्त्र चिनशुक कहलाते थे। चीन से रेशम का निर्यात रोम तक किया जाता था।

चीन के कारवाँ अपने इस उत्पादन को लेकर जिस मार्ग से गुजरते थे उसे **रेशम मार्ग** कहा जाता था। इसी मार्ग से भारतीय व्यापारी व्यापार करते थे। चीन के बाद भारत का रेशम उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान था।

दक्षिण-पूर्व एशिया के ब्रह्मदेश (म्यांमार), सुवर्णद्वीप (जावा, सुमात्रा तथा बाली), चंपा (वियतनाम) कंबोज (कंबोडिया) आदि भारतीयों से संबंधित थे। आज यद्यपि इनमें से अनेक देश धार्मिक दृष्टि से पूर्णतः बदल गए हैं, परन्तु ये देश कला एवं संस्कृति की दृष्टि से आज भी भारत से जुड़े हैं।

(1) जावा - यह भारत के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। चीनी अभिलेखों के अनुसार यहाँ 800 वर्ष पूर्व भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा होती थी। यहाँ निर्मित बोरोबुदूर बौद्ध मंदिर संसार का एक सुन्दर स्तूप माना जाता है।

(2) सुमात्रा- यहाँ तीसरी शताब्दी ईसवी में श्री विजय वंश के द्वारा भारतीय उपनिवेश बसाया गया था। पाँच सौ वर्षों बाद कलिंग प्रदेश से गए शैलेन्द्र वंश के राजा ने इस वंश के शासक को पराजित कर अपने शासन की स्थापना की। ये शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। अन्त में राजेन्द्र चोल ने इसे जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।

यह इण्डोनेशिया का वही द्वीप है, जहाँ 26 दिसम्बर 2004 को भूकम्प आया, जिससे हिन्द महासागर में 'सुनामी' नामक भयंकर लहरें उत्पन्न हुई। इन लहरों से अत्यधिक जान-माल की हानि हुई।

(3) बोर्नियो- पूर्वी द्वीप समूह में यह सबसे बड़ा द्वीप है। पहली शताब्दी में यहाँ भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। पांचवीं शताब्दी में यहाँ के शासक मूलवर्मन का उल्लेख मिलता है। मूलवर्मन हिन्दू

धर्म का अनुयायी था।

(4)कम्बोडिया - वर्तमान में यह द्वीप कम्पूचिया या कम्बोज के नाम से जाना जाता है। यहाँ ईसा की प्रथम शताब्दी में दक्षिण भारत के एक ब्राह्मण कौण्डिन्य ने अपने राज्य की नींव डाली। यह कौण्डिन्य वंश कहलाया। इस वंश के राजाओं ने अंगकोरबाट में एक विशाल मंदिर की स्थापना की। यह मंदिर कला की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट है। इस मंदिर की दीवारों पर रामायण तथा महाभारत के दृश्य अंकित है। यह मंदिर विश्व के प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है।

अंगकोरबाट का मंदिर

(5) चम्पा - वर्तमान में यह अनाम कहलाता है। लगभग दूसरी शताब्दी में यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना हुई और लगभग 13 सौ वर्षों तक यहाँ भारतीय राज्य रहा।

(6) थाईलैण्ड (श्याम) - श्याम तीसरी से ग्यारहवीं शताब्दी तक हिन्दू शासकों द्वारा शासित रहा। यहां का महान शासक इन्द्रादित्य था। बाद में यह थाई जाति के प्रभुत्व में आ गया। ये लोग बौद्ध धर्म को मानने वाले थे। वर्तमान में यह क्षेत्र थाईलैंड कहलाता है।

(7) म्यांमार (बर्मा) - बर्मा का प्राचीन नाम सुवर्णभूमि था। सम्राट अशोक ने यहाँ बौद्ध धर्म के प्रचारक भेजे थे। आज भी यह बौद्ध धर्म प्रधान देश है। वर्तमान में यह देश म्यांमार के नाम से जाना जाता है।

(8) सिंहल अथवा सिलोन - लंका (वर्तमान में श्रीलंका) से हमारे देश का संबंध पौराणिक काल से है। अयोध्या के राजा राम ने लंका पर विजय प्राप्त की थी। बाद में काठियावाड़ के राजकुमार विजय ने यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना की। सम्राट अशोक का पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु यहाँ आए और लंका के राजा तिस्स ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। तब से आज तक लंका बौद्ध धर्म को मानने वाला देश है।

(9) बाली - भारतीय सभ्यता का प्रचार-प्रसार बाली में लगभग सातवी शताब्दी में हुआ। दसवीं शताब्दी में वहाँ के शासक उग्रसेन केसरी का उल्लेख मिलता है। आज भी बाली में भारतीय सभ्यता के चिन्ह मौजूद है।

पाठ में दिए मानचित्र तथा अब तक पढ़े अंशों के माध्यम से नीचे की तालिका को पूरा करो -

क्र.	देश का नाम (वर्तमान)	प्राचीन नाम	दिशा
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			

भारत का विभिन्न देशों से गहरा संबंध रहा यह तुम जान चुके हो। विश्व के महान प्राचीन धर्मों पर भारत का प्रभाव पड़ा है। हमारे देश का सौभाग्य है कि यहाँ हर धर्म के अनुयायी मिलजुलकर निवास करते हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों को भारत में स्थान मिला है। जबकि सनातन (हिन्दू), बौद्ध, जैन व सिक्ख धर्म का उद्‌भव एवं विकास भारत में सबसे पहले हुआ।

यहूदी धर्म

यहूदी हिब्रु लोगों का धर्म था। इस धर्म का संस्थापक अब्राहम था। अब्राहम के पौत्र जैकब को इजराइल के नाम से पुकारा जाता था। इसी के नाम पर इजराइल देश की स्थापना की गयी है। यहूदियों के मंदिर को 'सिनेगांग' कहा जाता है। यहूदियों का विश्वास है कि ईश्वर एक है और केवल उसी की उपासना दिन में दो बार करना चाहिए।

ईसाई धर्म

जेरूसलम के समीप बैथलेहम में ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह का जन्म एक बढ़ई परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम मेरी था। 30 वर्ष की अवस्था तक ईसा ने बढ़ई के रुप में नाजेरथ में निवास किया। बाद में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर एक है और प्रेम, मातृत्व तथा करुणा सबसे महत्वपूर्ण है। कुछ लोग ईसा की शिक्षाओं से सहमत नहीं थे। इन लोगों ने ईसा को सलीब पर चढ़ाया। तथापि ईसा मसीह के विचारों का प्रभाव बढ़ता गया और इसने एक धर्म का रूप ले लिया। ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिन्ह सलीब (क्रास) है। ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक का नाम 'बाईबल' है। इस धर्म के अनुयायी उन सब पैगंबरों

को मानते हैं जिन्हें यहूदी धर्म के लोग मानते हैं।

इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म का उदय अरब में हुआ। इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद का जन्म लगभग 570 ई. में मक्का में हुआ। उस समय राजनीतिक दृष्टि से अरब लोग कई कबीलों में बंटे हुए थे। ये अनेक प्रकार के देवी-देवताओं को मानते थे। चालीस वर्ष की उम्र में हजरत मुहम्मद को ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई। आपका संदेश यह था कि ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और वह उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मक्का निवासियों ने मुहम्मद के इस उपदेश का विरोध किया। इस कारण 622 ई. में मुहम्मद साहब मदीना चले गये। इसी दिन से हिजरी सन् की शुरूआत हुई। मदीना में हजरत मुहम्मद को भारी समर्थन मिला। अपने इन्हीं समर्थकों की मदद से सन् 630 में मक्का पर अधिकार कर लिया।

जिन व्यक्तियों ने हजरत मुहम्मद का संदेश, ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और मुहम्मद उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मान लिया वे मुस्लिम कहलाए और उनका धर्म इस्लाम कहलाया। इस्लाम धर्म के अनुयायी को पांच बातें मानना जरूरी है (1) कलमा पढ़ना, (2) दिन में पांच बार नमाज पढ़ना, (3) साल में एक माह (रमजान) के रोजे रखना, (4) ज़कात (दान देना), (5) यदि सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार हज करना। कुछ पैगम्बरों के नाम कुरान में दिए गये हैं।

63 वर्ष की अवस्था में हजरत मुहम्मद की मृत्यु 632 ई. में हुई। मुहम्मद साहब के जीवन काल में इस्लाम धर्म को मानने वालों की संख्या में बहुत वृद्धि हो चुकी थी। हजरत मुहम्मद का अपना कोई पुत्र नहीं था। पैगम्बर के उत्तराधिकारी को खलीफा कहते हैं। खलीफाओं के नेतृत्व में इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ।

भारत में इस्लाम का आगमन - अरबों ने सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण कर सिन्ध को जीत लिया। यहाँ से इस्लाम का प्रचार-प्रसार भारत के अन्य क्षेत्रों में हुआ। दक्षिण भारत में केरल के तट पर अरब व्यापारी आकर बसने लगे। इन्होंने भी व्यापार के साथ-साथ इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया।

पारसी धर्म

पारसियों का मूल देश ईरान है। प्राचीन काल में ईरान फारस या पारस कहलाता था। पारसी इसी देश के मूल निवासी थे। पारसी, आर्य हैं और इनके धर्म की स्थापना **जरथुस्त्र** ने की थी। इनके प्रमुख देवता आहुर और मजदा हैं। जरथुस्त्र के धार्मिक उपदेशों का संग्रह **'जिन्द-ए-अविस्ता'** में मिलता है। भाषाशास्त्रियों के अनुसार यह ग्रंथ भारतीय आर्यों के ऋग्वेद का समकालीन है।

भारत तथा फारस का संबंध प्राचीन काल से ही था। पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के पास अपनी दूत मण्डली भेजी थी। अरब में इस्लाम के उदय के बाद ईरान पर मुसलमानों के आक्रमण होने लगे। सन् 936 ई. में मुसलमानों के भय से पारसी, ईरान छोड़कर भारत पहुँचे। यहाँ गुजरात के राजा यादव राणा ने उनका स्वागत किया। पारसियों का विश्वास है कि जरथ्रुस्त्र को ही ईश्वर ने अग्नि प्रदान की थी। ईरान छोड़ने के पूर्व ये अग्नि पूजक थे और इस अग्नि को अपने साथ ले आए थे। यह अग्नि आज भी बम्बई के उत्तर में स्थित उदवाद की अगियारी में जल रही है। पारसी लोग मृतक शरीर को पशुपक्षियों के खाने के लिये छोड़ देते हैं।

हिन्दुओं की तरह पारसी कमर में यज्ञोपवीत (सदर-ए-करती) धारण करते हैं। यह प्रथा बताती है कि उन्होंने पवित्र मार्ग पर चलने का वचन ले रखा है।

पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व तालिका को पूरा करें -

क्र.	धर्म का नाम	धर्म संस्थापक तथा पूजा स्थल का नाम	पवित्र पुस्तक
1.	_____	_____	_____
2.	_____	_____	_____
3.	_____	_____	_____
4.	_____	_____	_____
5.	_____	_____	_____

इस प्रकार हम देखते हैं कि लगभग आठवीं शताब्दी तक भारत का दुनिया के विभिन्न देशों- चीन, ईरान, श्रीलंका, अरब, रोम, जापान आदि से व्यापारिक एवं धार्मिक संबंध था। कई द्वीपों पर भारतीय उपनिवेश स्थापित थे। भारतीय शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म विभिन्न उपनिवेशों के राजधर्म थे। विभिन्न धर्मप्रचारक भारत से विभिन्न देशों की यात्रा करते थे। ईसाइयों के आगमन के साथ ईसाई तथा अरब आक्रमणों के साथ इस्लाम भी भारत में फैल रहा था। इसी प्रकार कुछ पारसी धर्मावलम्बी पूर्ण रूप से अपने देश को त्याग कर भारत में शरण ले चुके थे।

इन नवीन धर्मों के आगमन से भारतीय समाज, शासन एवं संस्कृति में कई बदलाव आ गये। पूर्व के आक्रमणकर्ता यवन, शक, क्षत्रप तथा कुषाण तो इस देश की माटी में घुल मिल गये। आठवीं शताब्दी

में आए इस्लाम धर्म का अलग अस्तित्व बना रहा। अलगाव के बावजूद इस्लाम धर्म की सरलता ने भारतीयों को प्रभावित किया। सूफी संतों के प्रभाव से इस्लाम तथा हिन्दू धर्म के बीच की दूरियाँ घटी। इससे इस्लाम और भारतीय धर्मों के बीच एकता का भाव उत्पन्न हुआ। आज भारत एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र हैं यहाँ सभी धर्मों के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) रोमन इतिहासकार प्लिनी क्यों चिन्तित था?

(ब) कम्बोडिया का प्राचीन नाम क्या था?

(स) रेशम मार्ग से आप क्या समझते हैं?

(द) श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किसने किया था? यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना किसने की?

(य) गांधार प्रदेश कहाँ स्थित था और यह क्यों प्रसिद्ध रहा?

(र) अरबों ने भारत से क्या-क्या सीखा?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) इस्लाम धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(ब) पारसी धर्म की मुख्य बातें लिखिए।

(स) ईसाई धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

3 रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए-

अ. गान्धार क्षेत्र में ..... की प्राचीनतम प्रतिमाएँ बनी। (जैन/बुद्ध)

ब. सम्राट अशोक ने पुत्र ..... को श्रीलंका बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु भेजा था। (सुरेन्द्र/महेन्द्र)

स. अंगकोरवाट में ..... मंदिर है। (विष्णु/शिव)

द. यहूदियों के मंदिर को ..... कहा जाता है। (चर्च/सिनेगॉग)

य. हजरत मुहम्मद का जन्म ..... में हुआ। (मक्का/मदीना)

र. पारसियों का मूल देश ..... है। (इराक/ईरान)

4 सही जोड़ियां बनाइए-

क	ख
अ. बर्मा	अनाम
ब. प्लिनी	बुद्ध मंदिर
स. बोरोबुदुर	म्यॉमार
द. सिंहल	रोमन इतिहासकार
य. चंपा	श्रीलंका

प्रोजेक्ट कार्य

- विश्व के मानचित्र में उन देशों को अंकित कीजिए जिनके साथ भारत के संबंध थे।

❖❖❖❖

पाठ 21

हमारा स्थानीय स्वशासन

आइए सीखें

- स्थानीय स्वशासन का अर्थ व महत्व।
- त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम, जनपद व जिला पंचायतें- इनका गठन और कार्य।

सामुदायिक विकास में स्थानीय नागरिकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। स्थानीय आवश्यकताएँ एवं उनकी पूर्ति वहाँ की परिस्थितियों में कैसे पूरी की जा सकती हैं? इसे स्थानीय नागरिक बेहतर ढंग से जानते हैं तथा यह उनके स्वयं के हित में भी है कि वे एक साथ मिलकर स्थानीय समस्याओं का स्थानीय हल निकालें। सरकार उनकी क्या सहायता कर सकती है? इसे वे राज्य अथवा केंद्र सरकार को उचित माध्यम से अवगत करा सकते हैं।

जब किसी क्षेत्र के लोग किसी समिति या संस्था के माध्यम से स्वयं मिलकर दिन-प्रतिदिन की अपनी समस्याएँ सुलझाते हैं, उचित वैधानिक उपाय करते हैं तो उसे स्थानीय स्वशासन कहते हैं।

स्थानीय स्वशासन का महत्व

हमारे देश में स्थानीय स्वशासित संस्थाओं का निर्माण गाँवों, नगरों और शहरों के विकास के लिए अलग-अलग प्रकार से किया गया है। इसका कारण स्थान-स्थान पर समस्याओं का स्वरूप अलग-अलग होना है। स्थानीय स्वशासन का महत्व इस प्रकार है-

1. स्थानीय स्वशासी संस्थाएँ लोगों को अपनी समस्याएँ सुलझाने का अवसर प्रदान करती हैं।
2. स्थानीय स्वशासी संस्थाएँ लोगों में आत्मनिर्भरता का विकास करती है।
3. सहकारिता के आधार पर लोगों में अपनी दशा सुधारने का उत्साह पैदा करती हैं।
4. स्थानीय लोगों में नेतृत्व बढ़ाने की क्षमता का विकास करती हैं।
5. स्थानीय लोगों में अपने छोटे से क्षेत्रों में कार्य करके अनुभव प्राप्त करने की समझ विकसित करती है।

त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था

(1) ग्राम स्तर पर - ग्राम पंचायत, (2) विकास खंड स्तर पर - जनपद पंचायत तथा (3) जिला स्तर पर - जिला पंचायतें गठित की गई हैं। इन्हीं तीन स्तरों में स्थापित व्यवस्था को त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था नवीन कल्पना नहीं है। प्राचीन

समय में भी भारत में पंचायतों का अस्तित्व रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान सरकार के असहयोग के कारण धीरे-धीरे पंचायतों की अवनति होती गई व पंचायतें समाप्त सी हो गई। महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान पुरानी पंचायती व्यवस्था के पुनरुद्धार की जोरदार वकालत की।

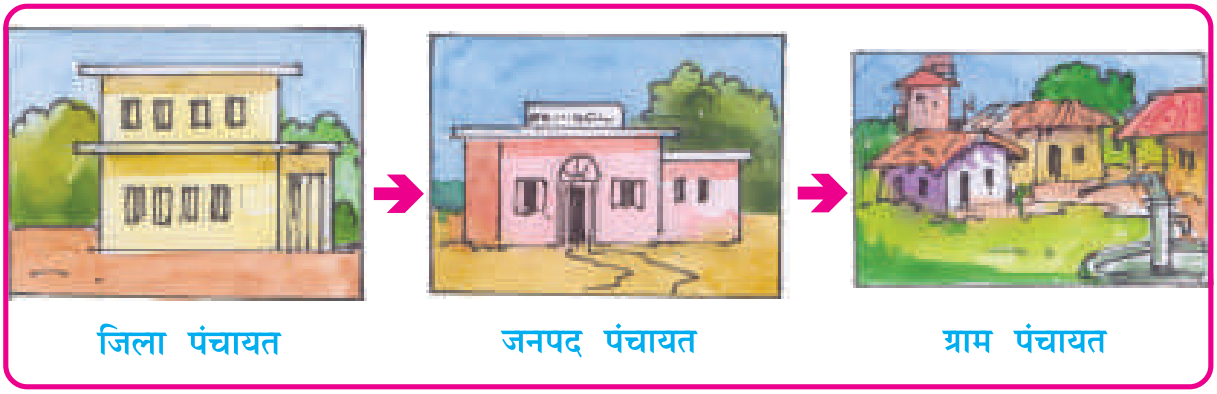

त्रिस्तरीय पंचायती राज

संविधान के 73वें संशोधन के अनुसार पंचायती राज व्यवस्था एक कानून के रूप में 24 अप्रैल 1994 से सम्पूर्ण देश में लागू है।

मध्यप्रदेश राज्य में त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था 1994 से सम्पूर्ण प्रदेश में लागू की गई। इसके अंतर्गत स्थापित तीनों पंचायतों की जानकारी इस प्रकार है-

1. ग्राम पंचायत

ग्राम पंचायत का गठन कम से कम 1000 की आबादी पर किया जाता है। जिन गाँवों की आबादी इतनी संख्या में नहीं होती वहाँ आसपास के गाँव जोड़ दिये जाते हैं। ग्राम पंचायतों में ग्रामों को कई छोटे-छोटे क्षेत्रों में बाँट दिया जाता है, उन्हें वार्ड कहते हैं। प्रत्येक वार्ड के लोग अपना प्रतिनिधि चुनते हैं, जिन्हें पंच कहते हैं।

मतदान

मतदाता- 18 वर्ष या इससे अधिक आयु के प्रत्येक स्त्री व पुरुष को, जिनका नाम उस क्षेत्र की मतदाता सूची में दर्ज होता है उन्हें मतदाता कहते हैं।

चुनावों के समय मतदाता अपना मत देकर प्रतिनिधि चुनते हैं, इस अधिकार को मताधिकार कहा जाता है।

एक ग्राम पंचायत में कम से कम 10 और अधिक से अधिक 20 वार्ड होते हैं तथा इतनी ही संख्या में पंच होते हैं। प्रत्येक वार्ड में यथासंभव मतदाताओं की संख्या लगभग समान रखी जाती हैं। ग्राम पंचायत में कुछ सीटें अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए आरक्षित की जाती हैं। 50 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित है। यह व्यवस्था आरक्षण कहलाती है।

सरपंच

ग्राम पंचायत के प्रधान या मुखिया को सरपंच कहा जाता है। सरपंच का चुनाव, क्षेत्र के सभी मतदाताओं द्वारा सीधे किया जाता है।

सरपंच ग्राम पंचायत का प्रधान होता है। यह बैठक की अध्यक्षता करता है। पंचायतों के अंतर्गत एक पंचायत सचिव अथवा पंचायतकर्मी की नियुक्ति शासन द्वारा की जाती है। पंचायत सचिव सभी प्रकार का लेखा-जोखा रखता है।

प्रत्येक ग्राम पंचायत एक उप सरपंच का चुनाव भी करती है। उनका चुनाव पंचायत के निर्वाचित पंचों में से किया जाता है। सरपंच की अनुपस्थिति में उप सरपंच उसके कार्य करता है।

ग्राम पंचायत का कार्यकाल पांच वर्ष निर्धारित है। सरपंच द्वारा दायित्वों का निर्वहन यदि भली प्रकार नहीं किया जा रहा हो तो अविश्वास प्रस्ताव पारित कर उसे पद से पृथक किया जा सकता है।

ग्राम पंचायत के कार्य

ग्राम पंचायत गाँव के सामान्य प्रशासन की देखभाल भी करती है। इसका मुख्य कार्य नागरिक सुविधाएं जैसे- पानी, स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा, विद्युत/प्रकाश व्यवस्था और ग्राम के मार्गों आदि का रख-रखाव करना है। ग्राम पंचायत के अन्य कार्यों के अंतर्गत ग्राम में सम्पत्ति की खरीद-बिक्री का लिखित प्रमाण, जन्म-मृत्यु का विवरण, हाट-मेलों का आयोजन, वृक्षारोपण जैसे कार्य भी शामिल हैं।

ग्राम पंचायत की आय के साधन

ग्राम पंचायत लोगों से सफाई, बिजली, निजी मकानों, हाट-मेलों आदि पर कर लगाकर आय जुटाती है। इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायतों को राज्य सरकार से अनुदान भी प्राप्त होता है। ग्राम पंचायत का वार्षिक आय व व्यय का लेखा ग्राम सभा की बैठक में प्रस्तुत किया जाता है।

ग्राम सभा- प्रत्येक गाँव में एक ग्राम सभा होती है। यह सभा ग्राम पंचायत के सदस्यों का चुनाव करती है। ग्राम सभा गाँव की सामान्य सभा है। ग्राम सभा की बैठक प्रति तीन माह में होती है। ग्राम सभा

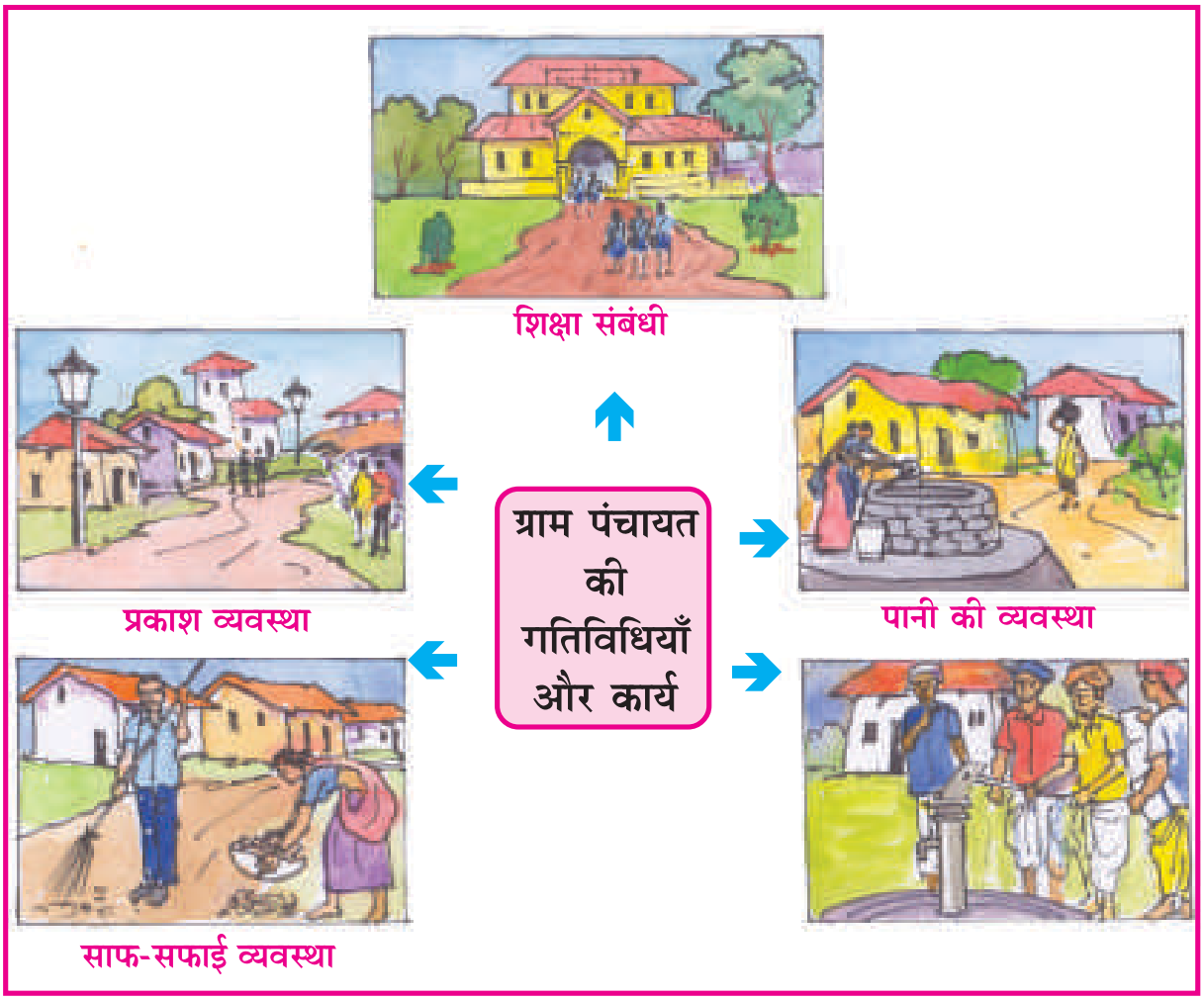

में गाँव के लोग अपनी समस्याओं पर चर्चा करते हैं।

ग्राम पंचायत क्षेत्र में रहने वाले सभी मतदाता ग्राम सभा के सदस्य होते हैं। ग्राम सभा नीतिगत निर्णय लेती हैं तथा ग्राम पंचायत द्वारा किये गए कार्यों की समीक्षा करती है।

2 जनपद पंचायत

जनपद पंचायतों का गठन विकासखंड स्तर पर किया जाता है। एक जनपद पंचायत क्षेत्र में उस विकास खंड की समस्त ग्राम पंचायतें शामिल की जाती हैं।

गठन- ग्राम पंचायत के सदस्यों की भांति जनपद पंचायत के सदस्यों का चुनाव उस क्षेत्र के मतदाताओं के द्वारा होता है। 5 वर्ष के लिए चुने हुए सदस्यों के अलावा उस खंड के निर्वाचित विधानसभा सदस्य भी उस जनपद पंचायत के सदस्य होते हैं। जनपद पंचायत के कार्यों की देख-रेख के लिए जनपद पंचायत के सदस्य अपना अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष अपने बीच से ही चुनते हैं। जनपद पंचायत में चुने हुए

सदस्यों की संख्या 10 से लेकर 25 तक होती है। जनपद पंचायत क्षेत्र में शामिल ग्राम पंचायतों के सरपंचों को $\frac{1}{5}$ संख्या में एक वर्ष के लिए सदस्य बनाया जाता है। जनपद पंचायतों में भी ग्राम पंचायत की भांति अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछड़ा वर्ग तथा महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था है।

जनपद पंचायत के कार्य

जनपद पंचायत का महत्वपूर्ण कार्य ग्राम पंचायतों को राज्य सरकार से धन दिलवाना है। जनपद पंचायत ही ग्राम पंचायतों के कार्यों की देख-रेख करती है।

ग्रामों के समग्र विकास के लिए पंचायतों को विशेषज्ञों की सेवा उपलब्ध कराना- जैसे कृषि, शिक्षा, अधोसंरचना, चिकित्सा आदि। महिला, युवा, बाल कल्याण तथा नि:शक्त एवं निराश्रितों के कल्याण हेतु कार्य, परिवार नियोजन, खेलकूद और ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम आदि की व्यवस्था, सहायता तथा संचालन करना जनपद पंचायत के कार्यों में शामिल है।

प्राकृतिक आपदाओं में आपात सहायता की व्यवस्था करना, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रचार-प्रसार करना इनका कार्य है। वर्तमान में जनपद पंचायतें शिक्षाकर्मी, संविदा शिक्षक, गुरुजी, पंचायत कर्मी, जन स्वास्थ्य रक्षक के पदों पर नियुक्ति भी करती है।

आय के साधन - जनपद पंचायत को अपने क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न साधनों से आय प्राप्त होती है।

1. कर लगाकर- जनपद पंचायत मकान, जमीन, बिजली, पानी, मेलों और बाजारों पर कर लगाकर धन एकत्रित करती है।
2. राज्य सरकार से विभिन्न प्रकार की सहायता तथा अनुदान प्राप्त करती है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी

जनपद पंचायत स्तर पर यह सर्वोच्च अधिकारी होता है। इसका मुख्य कार्य जनपद पंचायत के निर्णयों को लागू करवाना होता है।

3. जिला पंचायत

त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत सर्वोच्च इकाई है। जिला पंचायत चूंकि जिले स्तर पर होती है, अत: एक जिले की सभी जनपद पंचायतें इसके अंतर्गत आती हैं।

गठन

जिला पंचायत के सदस्य जिले के मतदाताओं द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं। जिला पंचायत

में सदस्यों की संख्या 10 से 35 तक होती है।

जिले की विधान सभाओं, लोक सभा और राज्य सभा के सदस्य भी जिला पंचायत के सदस्य होते हैं। विधानसभा व लोकसभा के वे सदस्य जिनका निर्वाचन क्षेत्र पूर्णत: या अंशत: ग्रामीण क्षेत्र में आता है और राज्य सभा के वे सदस्य जिनका नाम जिले की ग्राम पंचायत की मतदाता सूची में है, वे ही इसके सदस्य होते हैं।

इसके अतिरिक्त जिले की जनपद पंचायतों के समस्त अध्यक्ष भी नियमानुसार जिला पंचायत के सदस्य होते हैं। सदस्यों के आरक्षण की व्यवस्था भी की गई है।

जिला पंचायत के कार्य

जिला पंचायत का मुख्य कार्य ग्राम पंचायतों एवं जनपद पंचायतों के कार्यों की देख-रेख करना होता है। ग्राम पंचायत और जनपद पंचायतों को उनके कार्यों के लिए धन उपलब्ध कराना जिला पंचायत का कार्य है। जिला पंचायत जिले में स्थापित सभी सरकारी विभागों से समन्वय करती है। जिला पंचायत राज्य सरकार के निर्देश पर कुछ शासकीय पदों पर नियुक्तियाँ भी करती हैं।

जिला पंचायत की आय के साधन

जिला पंचायत की आय का प्रमुख साधन राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान होता है। इसके अतिरिक्त जिला पंचायत मकानों, दुकानों, मेलों आदि पर कर लगाकर आय अर्जित करती है।

जिला पंचायत में मुख्य कार्यपालन अधिकारी

जिला पंचायत के निर्णयों को जिले में लागू करवाने के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी राज्य सरकार द्वारा नियुक्त सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी होता है। यह सामान्यत: भारतीय प्रशासनिक सेवा का सदस्य होता है।

- सामुदायिक विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी आवश्यक है।
- जब किसी क्षेत्र के लोग स्वयं मिलकर अपनी (क्षेत्र की) समस्याएँ सुलझाते हैं, उचित वैधानिक उपाय करते हैं, तो उसे स्थानीय स्वशासन कहते हैं।
- स्वशासी संस्थाएँ लोगों में नेतृत्व क्षमता बढ़ाने का कार्य करती हैं।
- त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत एवं जिला पंचायत शामिल हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) ग्राम पंचायत के मुखिया को क्या कहते हैं?

(ब) पंचायतों का कार्यकाल कितने वर्षों का होता है?

(स) ग्राम सभा की बैठक कितने माहों में होती हैं?

(द) जिला पंचायत के अध्यक्ष को कौन सा दर्जा प्राप्त है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) स्थानीय स्वशासन का अर्थ समझाइए।

(ब) ग्राम पंचायत का गठन कैसे होता है? समझाइए?

(स) ग्राम पंचायतें ग्रामों के विकास के लिए क्या-क्या कार्य करती हैं?

(द) जनपद पंचायत का गठन एवं कार्यविधि समझाइए।

(य) जिला पंचायत के सदस्य कौन-कौन व्यक्ति होते हैं?

प्रोजेक्ट कार्य-

- आपके ग्राम/नगर की मुख्य समस्याएँ क्या हैं? इनकी सूची बनाइए। इन समस्याओं का निराकरण किनके द्वारा किया जा सकता है? लिखिए।
- पंचायत या अन्य स्थानीय संस्था की गतिविधि को कक्षा में अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करें।

❖❖❖❖

पाठ 22

नगरीय संस्थाएँ

आइए सीखें

- नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम के विषय में।

नगरों में हम अनेक प्रकार के उद्योग और व्यापार तथा क्रियाकलापों को देखते हैं। नगर बड़ी संख्या में दूरदराज के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। लोग बड़ी संख्या में नगरों में आते हैं तथा यहाँ आकर बस जाते हैं, जिससे नगरों की जनसंख्या बढ़ती है।

लोगों को ज्यादा से ज्यादा घर, बिजली, पीने के पानी व अच्छी यातायात सुविधाओं की आवश्यकता होती है नगरों की तथा नगरों में निवास करने वाले लोगों की समस्याएँ स्वाभाविक तौर पर गाँवों से भिन्न होती हैं। इन समस्याओं को सुलझाने के लिए नगरों तथा शहरों की स्वशासित संस्थाओं को अधिक धन व अधिकारों की आवश्यकता होती है।

नगरों व शहरों की स्थानीय स्वशासी संस्थाएँ नगर पंचायत, नगर पालिका व नगर निगम के नाम से जानी जाती हैं। इन्हें शहरी क्षेत्र की स्थानीय संस्थाएँ भी कहते हैं।

नगर पंचायत

नगर पंचायत, क्षेत्र व जनसंख्या के आधार पर नगर गाँव से बड़ा परन्तु शहर से छोटा होता है। यह शहरी जनसंख्या की सबसे छोटी इकाई है। प्रत्येक नगर में एक नगर पंचायत होती है। यह एक निर्वाचित संस्था है।

गठन- जिन नगरों की जनसंख्या पाँच हजार से बीस हजार तक होती है, वहाँ नगर पंचायतों का गठन किया जाता है। इन नगरों को छोटे-छोटे भागों में बाँटा जाता है। इन्हें वार्ड कहते हैं। प्रत्येक वार्ड से एक सदस्य उस वार्ड के मतदाताओं द्वारा निर्वाचित किया जाता है, इस चुने हुए सदस्य को 'पार्षद' कहते हैं।

प्रत्येक नगर पंचायत में एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष होता है। इनमें से अध्यक्ष का चुनाव जनता द्वारा सीधे तथा उपाध्यक्ष का चुनाव निर्वाचित पार्षदों द्वारा पार्षदों के बीच से ही किया जाता है। ये बैठकों की अध्यक्षता करते हैं।

नगर पंचायत के निर्वाचित सदस्य कुछ विशिष्ट अनुभवी व्यक्तियों को चुनते हैं, जिन्हें 'एल्डरमैन' कहते हैं। ये व्यक्ति नगर पंचायत को सलाह देने का कार्य करते हैं। किसी प्रस्ताव के पारित किये जाते समय एल्डरमेन मत नहीं दे सकते केवल सुझाव दे सकते हैं।

एक नगर पंचायत में वार्डों की संख्या **15** से **40** तक होती हैं।

नगर पंचायत का मुख्य प्रशासनिक अधिकारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी होता है। इसका कार्य नगर पंचायत के निर्णयों का पालन कराना होता है।

नगर पंचायत में पार्षद बनने हेतु स्थानीय निवासी, 21 वर्ष की आयु तथा मतदान का अधिकार होना आवश्यक है।

नगरपालिका

ऐसे शहर जो नगरों से बड़े होते हैं, वहाँ नगरपालिकाएँ गठित की जाती हैं। इनको नगर परिषद् या नगर बोर्ड भी कहते हैं।

गठन- जिन नगरों की जनसंख्या बीस हजार से अधिक और एक लाख से कम होती है, वहाँ नगर पालिकाएँ गठित की जाती हैं। नगरों को विभिन्न वार्डों में बाँटा जाता है। एक नगर पालिका में वार्डों की संख्या 15 से 40 तक हो सकती है। प्रत्येक वार्ड से एक सदस्य का निर्वाचन किया जाता है। इसे पार्षद कहते हैं।

नगर पालिका का एक अध्यक्ष व एक उपाध्यक्ष होता है। अध्यक्ष का चुनाव जनता द्वारा सीधे तथा उपाध्यक्ष का चुनाव निर्वाचित पार्षदों द्वारा किया जाता है। ये बैठकों की अध्यक्षता करते हैं। नगर पालिका की

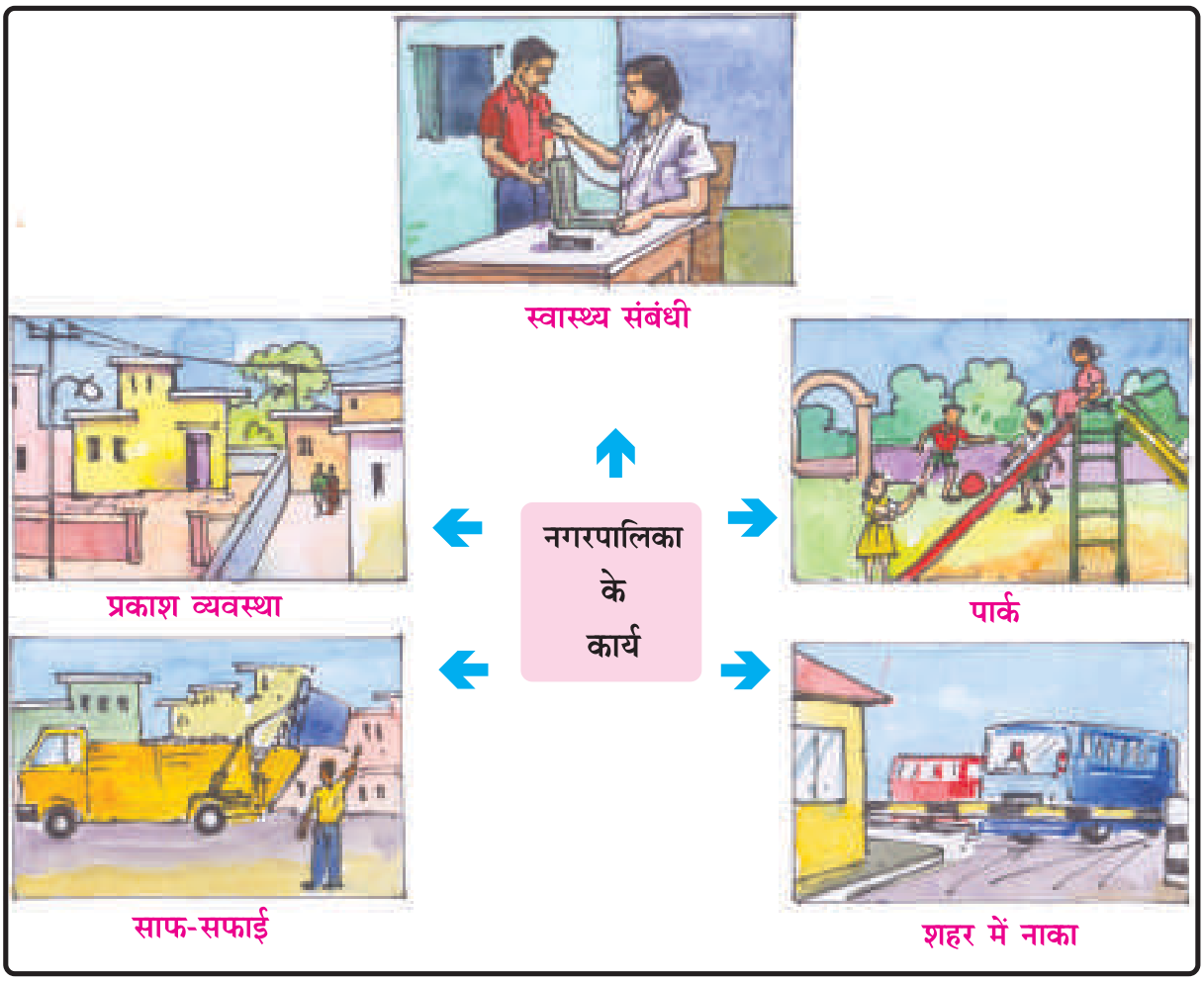

बैठकें नियमित होती हैं।

राज्य शासन द्वारा नगरपालिकाओं में मुख्य कार्यपालन अधिकारी नियुक्त किया जाता है, इसका कार्य परिषद के निर्णयों को लागू करवाना होता है।

प्रथम नगरपालिका मद्रास के पूर्व प्रेसिडेंसीनगर में 17वीं शताब्दी में गठित की गई थी। स्वतंत्रता के समय भारत में मात्र तीन नगरपालिकाएँ थीं- मद्रास, मुम्बई और कोलकाता।

नगर निगम

गठन- नगर निगम बड़े-बड़े शहरों में स्थापित किये जाते हैं, जिन नगरों की जनसंख्या एक लाख से अधिक होती है, वहाँ नगर निगम का गठन किया जाता है। नगर पंचायत तथा नगर पालिका की भांति बड़े शहरों के क्षेत्र को छोटे-छोटे भागों में बाँट कर पार्षदों का चुनाव किया जाता है।

नगर निगम में चुने हुए सदस्यों की संख्या 50 से 150 तक होती है। नगर निगम के सदस्य भी कुछ अनुभवी, विशिष्ट लोगों को एल्डरमैन के रूप में चुनते हैं।

नगर निगम का सदस्य बनने के लिए कम से कम 21 वर्ष की आयु तथा उस क्षेत्र का मतदाता होना आवश्यक होता है।

नगर निगम के अध्यक्ष को 'महापौर' अथवा 'मेयर' कहते हैं। एक 'उपमहापौर' की भी व्यवस्था है। महापौर का चुनाव जनता द्वारा सीधे तथा उपमहापौर का चुनाव निर्वाचित पार्षदों द्वारा किया जाता है।

प्रत्येक नगर निगम में एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी होता है। इसे निगम आयुक्त कहते हैं। इस पद पर नियुक्त होने वाला अधिकारी भारतीय प्रशासनिक सेवा या राज्य प्रशासनिक सेवा का वरिष्ठ अधिकारी होता है। इसका कार्य निगम के निर्णयों को लागू कराना है।

नगर पालिका एवं नगर निगम में डाक्टर, इंजीनियर तथा शिक्षा विशेषज्ञ भी होते हैं। इनमें नगरीय विकास के लिए कई समितियाँ होती हैं। इन समितियों के अपने अध्यक्ष होते हैं।

नगरीय स्वशासी संस्थाओं का कार्यकाल 5 वर्ष होता है। इनमें महिलाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़ा वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु आरक्षण की व्यवस्था भी है।

नगर पंचायत, नगरपालिका, व नगर निगमों के आय के साधन-

इन संस्थाओं की आमदनी के कुछ स्रोत हैं, जिनसे ये धन (कर) प्राप्त कर अपनी आय प्राप्त करती हैं:-

1. मकान, जमीन पर कर लगाना, इसे सम्पत्ति कर कहते हैं।
2. व्यापार, व्यवसाय तथा वाहनों पर कर लगाना।
3. पानी तथा रोशनी की सुविधा हेतु शुल्क लेकर।

4. इन संस्थाओं की स्वयं की सम्पत्ति जैसे भवन, दुकान, आदि से प्राप्त किराया।

5. राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान व वित्तीय सहायता।

6. विभिन्न प्रकार की अनियमतताओं पर लगाए गए जुर्माने से प्राप्त राशि।

नगर पंचायत, नगर पालिका व नगर निगमों के कार्य

इन नगरीय संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले कार्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है। अनिवार्य कार्य और ऐच्छिक कार्य।

अनिवार्य कार्य

- नगर के सुव्यस्थित विकास की योजना बनाना।
- भवन निर्माण व भूमि के उपयोग की स्वीकृति देना।
- सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए योजना बनाना।
- सड़कों तथा पुलों का रख-रखाव करना।
- प्रकाश व पेयजल की व्यवस्था करना।
- गंदे पानी के निकास हेतु नालियों का निर्माण व सफाई करवाना।
- जनता के स्वास्थ्य व शिक्षा की व्यवस्था करना।
- पर्यावरण की सुरक्षा व नगर की सुन्दरता के लिए पार्कों का निर्माण व वृक्षारोपण करवाना।
- बच्चों के खेलकूद व मनोरंजन हेतु स्थान का विकास करना। कमजोर वर्ग, विकलांग, मानसिक रूप से कमजोर व्यक्तियों तथा समाज के अन्य वर्गों की सुरक्षा करना।
- झोपड़ पट्टियों में जन सुविधाओं का विकास, गरीबी उन्मूलन के लिए कार्य, जन्म-मृत्यु का पंजीयन, श्मशान, कब्रिस्तान के लिए स्थान निर्धारित करना, आवारा पशुओं की रोकथाम करना व अग्निशमन के उपाय करना नगरीय संस्थाओं के अनिवार्य कार्य है।

ऐच्छिक कार्य-

- नई सड़कों, भवनों का निर्माण।
- पुस्तकालय, वाचनालय, चिड़ियाघर की व्यवस्था करना।
- धर्मशाला, विश्रामगृह, वृद्ध आश्रम आदि का निर्माण व प्रबंधन करना।
- शिशु कल्याण कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना।

- नगरों में हम अनेक प्रकार के उद्योगों व व्यापारिक क्रियाकलापों को देखते हैं।
- नगरों की स्थानीय स्वशासी संस्थाएँ, नगर पंचायत, नगरपालिका व नगर निगम के नाम से जानी जाती हैं।
- नगरपालिका व नगर निगम के सदस्यों को **'पार्षद'** कहते हैं।
- नगर निगम के अध्यक्ष को **'महापौर'** या **'मेयर'** कहते हैं।
- नगर निगम के सबसे बड़े प्रशासनिक अधिकारी को निगम आयुक्त के नाम से जाना जाता है।
- नगरीय संस्थाएं नगरों का विकास व नागरिकों के कल्याण का कार्य करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) शहरी क्षेत्र की स्थानीय संस्थाएँ किन्हें कहते हैं?

(ब) नगर पंचायत कितनी जनसंख्या वाले नगरों में गठित की जाती हैं?

(स) 'एल्डरमैन' क्या कार्य करते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) नगरीय संस्थाओं के अनिवार्य पाँच कार्य कौन-कौन से हैं?

(ब) नगरीय संस्थाओं के कौन-कौन से ऐच्छिक कार्य हैं?

(स) नगरीय संस्थाओं के आय के साधन बताइये।

(द) वार्ड, मेयर, अध्यक्ष व उपाध्यक्ष किसे कहते हैं?

(य) नगर पंचायत या नगरपालिका का गठन कैसे होता है? वर्णन कीजिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) वृक्ष लगवाना एवं उनकी देखभाल करना नगरीय संस्थाओं का ..... कार्य है।

(ब) 'नगर निगम आयुक्त' का कार्य ..... लागू करवाना है।

(स) नगरपालिका के सदस्यों को ..... कहा जाता है।

(द) स्थानीय संस्थाओं को राज्य सरकार से ..... प्राप्त होता है।

4. सही जोड़ी बनाइए-

अ	ब
अ. नगर पंचायत गठित की जाती है	एक लाख से अधिक जनसंख्या पर
ब. नगर पालिका गठित होती हैं-	पांच से बीस हजार की जनसंख्या पर।
स. नगर निगम गठित होता है-	बीस हजार से एक लाख की जनसंख्या पर।

प्रोजेक्ट कार्य- ● आप अपने नगर अथवा गांव के पास गठित किसी एक स्थानीय संस्था के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, आयुक्त के नाम पता कीजिए।

❖❖❖❖

पाठ 23

जिला प्रशासन

आइए सीखें

- जिला प्रशासन क्या है?
- जिला प्रशासन के सहयोगी विभाग कौन-कौन से हैं?

हमारे देश में छः सौ से अधिक जिले हैं। जिला प्रशासन व्यवस्था की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण इकाई है। जिला प्रशासन का मुखिया कलेक्टर या जिलाधीश कहलाता है। वह भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी होता है। कलेक्टर अपने जिले की समस्त तहसीलों व ग्रामों के प्रशासन की देख-रेख करता है। वह जिले का सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी होता है, अतः वह जिले में चल रहे सभी कार्यों पर नियंत्रण भी करता है।

जिले में गाँव व तहसील छोटी इकाइयाँ हैं। जिले में गाँवों के सुव्यवस्थित विकास के लिए विकासखंडों का गठन किया गया है।

जिले के अधिकारी व कर्मचारी

वास्तव में प्रशासन की सुविधा के लिए राज्य को जिलों में और जिलों को तहसीलों में बाँटा गया है। ये जिला प्रशासन की महत्वपूर्ण इकाई है। जिले में सरकार की नीतियों को लागू करने एवं कानून व्यवस्था हेतु जिला प्रशासन उत्तरदायी होता है। कलेक्टर की सहायता के लिए दूसरे अधिकारी व कर्मचारी होते हैं।

कलेक्टर के कार्य

कलेक्टर के प्रमुख कार्य इस प्रकार है-

- जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने का दायित्व कलेक्टर का है। इसलिए इसे दंडाधिकारी के अधिकार प्राप्त है।
- भूमि का अभिलेख तथा भूमि कर वसूल करना इसका दूसरा एवं महत्वपूर्ण कार्य है। इसे भूमि संबंधी विवादों को निपटारा करने का अधिकार भी प्राप्त है।
- जिले में नागरिक सुविधाएँ- स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात का प्रबंध, सरकारी इमारतों, सड़कों आदि की देखभाल, पर्यवेक्षण करना तथा आपात स्थिति में राहत प्रदान करना इसका कार्य है।
- जिले में पंचायतों व स्थानीय स्वशासी संस्थाओं के चुनाव कार्य भी इसी की देखरेख में सम्पन्न होते हैं।

- जिले के सभी विभागों, शासकीय कार्यालयों का पर्यवेक्षण कलेक्टर करता है।

जिले में कई विभाग होते हैं, जैसे- शिक्षा विभाग, पुलिस विभाग, वन विभाग, कृषि विभाग, राजस्व विभाग, स्वास्थ्य विभाग आदि। इन सभी विभागों में राज्य सरकार द्वारा अधिकारी व कर्मचारी नियुक्त किये जाते हैं, ये सभी कलेक्टर के कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं।

यद्यपि कलेक्टर महत्वपूर्ण अधिकारी है किन्तु किसी कानून, नियम, निर्देश आदि जो राज्य या केंद्र सरकार द्वारा जारी किये गए हों, को ये बदल नहीं सकते, और स्वयं कोई कानून भी नहीं बना सकते।

जिले में न्यायिक व्यवस्था

यद्यपि कलेक्टर को दंडाधिकारी के रूप में कुछ न्यायिक अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी प्रत्येक जिले में अलग से व स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था है। जिले के सभी न्यायालय राज्य के उच्च न्यायालय की देखरेखमें

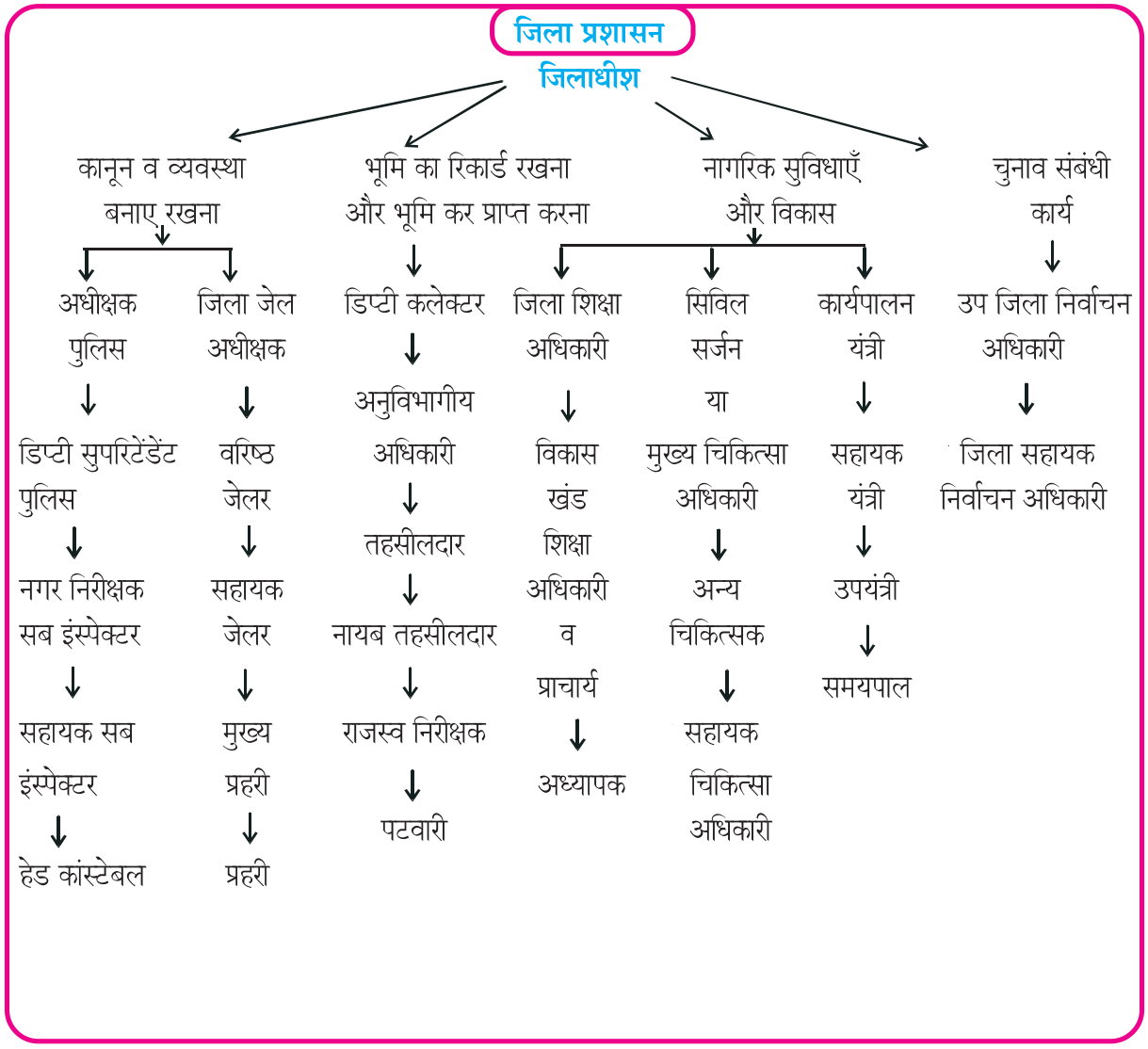

काम करते हैं। हमारे मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय जबलपुर में तथा इसकी खंडपीठ इंदौर व ग्वालियर में स्थापित है।

चोरी, मारपीट, हत्या आदि फौजदारी मामले कहलाते हैं। इनकी सुनवाई फौजदारी न्यायालयों में होती है। जमीन-जायदाद, रुपये- पैसे आदि के लेन-देन संबंधी विवाद दीवानी मामले कहलाते हैं। इनकी सुनवाई दीवानी न्यायालयों में होती है। जिले की न्याय व्यवस्था का ढांचा इस प्रकार है-

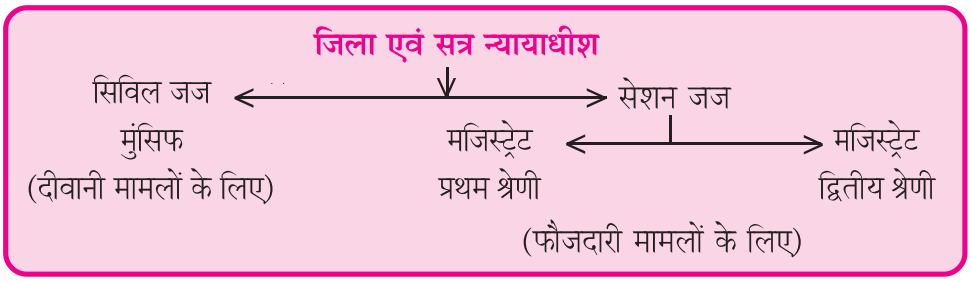

भूमि संबंधी ब्यौरे अब कम्प्यूटरीकृत किये जा रहे हैं। जिले के लोगों के विकास के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा के पर्यवेक्षण के लिए जनशिक्षा केंद्र, जनपद शिक्षा केंद्र तथा जिला शिक्षा केंद्रों की स्थापना की गई है। इनमें जनशिक्षक, विकासखंड शैक्षिक समन्वयक, समन्वयक; जनपद शिक्षा केंद्र, जिला समन्वयक एवं प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहे हैं।

- जिला भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण इकाई है।
- जिला प्रशासन का मुखिया 'कलेक्टर' अथवा जिलाधीश कहलाता है।
- जिले में गाँव व तहसील छोटी इकाइयाँ हैं।
- जिले में कानून व व्यवस्था बनाए रखना कलेक्टर का प्रमुख कार्य है।
- मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय, जबलपुर में तथा इसकी खंडपीठ, इंदौर व ग्वालियर में हैं।
- जिले में शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, वन विभाग, कृषि विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग व राजस्व विभाग महत्वपूर्ण होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) जिला प्रशासन का मुखिया क्या कहलाता है?

(ब) जिले में स्थापित महत्वपूर्ण दो विभागों के नाम बताइये।

(स) राज्य को जिलों व तहसीलों में क्यों बाँटा गया है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) कलेक्टर के कोई चार प्रमुख कार्य लिखिए।

(ब) दीवानी मामले क्या हैं? इनका निपटारा किस न्यायालय द्वारा किया जाता है।

(स) फौजदारी मामले क्या हैं? इनका निपटारा किस न्यायालय द्वारा किया जाता है।

(द) शिक्षा के पर्यवेक्षण के लिए जिले में क्या व्यवस्था है?

3. सही जोड़ी बनाइए-

क		ख
अ.	शिक्षा विभाग	सब इन्सपेक्टर
ब.	राजस्व विभाग	चिकित्सक
स.	पुलिस विभाग	नायब तहसीलदार
द.	चिकित्सा विभाग	सहायक यंत्री
य.	सिंचाई विभाग	विकास खंड शिक्षा अधिकारी

प्रोजेक्ट कार्य-

- इसी अध्याय के जिला प्रशासन संबंधी चार्ट में दर्शाये कौन-कौन अधिकारी/कर्मचारी आपके क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, उनके पदनामों की सूची अपने शिक्षक की सहायता से तैयार करें।

❖❖❖❖

पाठ 24

भारत की प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव-जन्तु

आइए सीखें

- भारत की प्राकृतिक वनस्पति के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं?
- भारत में वनों का क्षेत्रीय वितरण कैसा है?
- भारत में वन्य जीवन और उनके क्षेत्रीय वितरण को जानना
- प्रमुख भारतीय राष्ट्रीय उद्यानों के नाम व उनकी स्थिति।

जलवायु की दशाओं और प्राकृतिक वनस्पति में घनिष्ट संबंध पाया जाता है। **विविध प्रकार के वन, घास भूमियों और झाड़ियों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।** हमारे देश की वनस्पति को पाँच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है-

1. उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन
2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन
3. कंटीले वन तथा झाड़ियां
4. ज्वारीय वन
5. पर्वतीय वनस्पति

1. उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन

हमारे देश में उष्ण तथा आर्द्र जलवायु दशाओं वाले प्रदेश में जहां 200 से.मी. से अधिक औसत वर्षा होती है सदा हरित वनस्पति पाई जाती है।

क्षेत्र- इस प्रकार के वन पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों, पश्चिमी बंगाल के मैदानों, उड़ीसा, उत्तर-पूर्वी भारत और अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं।

विशेषताएं-

- इन वनों के वृक्षों की पत्तियां बड़ी मोटी और चिकनी होती हैं।
- वृक्षों की ऊँचाई अधिक होती हैं।
- विविध प्रकार के वृक्ष एक साथ मिलते हैं।
- ये वन घने और सदा हरे-भरे रहते हैं।

मुख्य वृक्ष- आबनूस, महोगनी, रोजवुड, बांस, नारियल, ताड़, रबर आदि।

2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन

जिन भागों में 75 से 200 से.मी. वर्षा होती है उन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से पर्णपाती वन पाए जाते हैं। इन्हें मानसूनी वन भी कहते हैं। इनको दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है- (1) आर्द्र पर्णपाती वन तथा (2) शुष्क पर्णपाती वन। पश्चिमी घाट के पूर्वी ढालों पर प्रायद्वीप के उत्तर पूर्वी भागों में, शिवालिक पहाड़ियों पर आर्द्र पर्णपाती वन मिलते हैं जबकि शुष्क पर्णपाती वनों का विस्तार भारत के बहुत बड़े क्षेत्र में है।

विशेषताएं-

- वृक्ष मध्यम ऊँचाई के होते हैं।
- वर्ष में एक बार ये वृक्ष अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। केवल आर्द्र पर्णपाती वनों के वृक्षों में यह क्रिया वर्ष भर चलती रहती है।
- एक ही जाति के वृक्ष एक साथ एक ही क्षेत्र में मिलते हैं. ये बहुत उपयोगी वन है।

मुख्य वृक्ष- सागौन, साल, शीशम, चन्दन आदि।

3. कंटीले वन तथा झाड़ियाँ-

जिन भागों में 75 से.मी. से कम वर्षा होती है वहां इन वनों का विस्तार है।

क्षेत्र- देश के उत्तर-पश्चिमी भाग, पश्चिम मध्यप्रदेश, राजस्थान, सौराष्ट्र, बुन्देलखंड और हरियाणा।

विशेषताएं-

- अधिकांश वृक्षों में कांटे होते हैं।
- वृक्षों की ऊँचाई कम होती है।
- वृक्ष दूर-दूर होते हैं।
- पत्तियां छोटी और जड़ें लंबी होती है।

प्रमुख वृक्ष- कीकर, बबूल, खैर, खजूर, बेर, नागफनी और कंटीली झाड़ियां।

4. ज्वारीय वन -

समुद्र तट के सहारे नदियों के डेल्टाओं में ज्वारीय वन पाए जाते हैं। ये खारे व ताजे पानी में एक साथ पनपते हैं। सुन्दरवन इसका बड़ा क्षेत्र है। ये वन पश्चिम बंगाल में गंगा के मुहाने पर पाए जाते हैं। मैंग्रोव और सुन्दरी मुख्य वृक्ष है। ज्वार आने पर समुद्र का खारा जल इन वनों में भर जाता है, और भाटा आने पर पानी उतर जाता है जिससे यहाँ की भूमि दलदली रहती है। ये वर्षभर हरे-भरे और घने होते हैं।

5. पर्वतीय वनस्पति -

हिमालय की तलहटी से लेकर ऊंचाई तक विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऊँचाई के अनुसार इनको निम्न पेटियों में विभाजित किया गया-

(अ) **आर्द्र पर्वतीय वन-** सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं। ओक, चेस्टनट मुख्य वृक्ष हैं।

(ब) **समशीतोष्ण कटिबन्धीय चीड़ के वन-** उत्तरी-पूर्वी भारत में ऊँचाई पर जहां अधिक वर्षा होती है, ये वन पाए जाते हैं। चीड़ मुख्य वृक्ष है।

(स) **शंकुधारी वन-** 1600 से 3500 मीटर ऊंचाई पर शंकुधारी वन पाए जाते हैं, जिनमें चीड़, सीडर, सिल्वर-फर, स्प्रूस और देवदार के वृक्षों की प्रधानता है।

(द) **अल्पाइन वन-** सबसे अधिक ऊँचाई पर शीतोष्ण शंकुधारी वन पाए जाते हैं। वृक्षों की पत्तियां नुकीली शाखाएं झुकी हुई होती है। सिल्वर फर, चीड़, बर्थ, झाड़ियाँ व घास भूमियां पाई जाती हैं। हिमालय की ऊँची ढलाने जाड़े में हिम से ढकी रहती हैं। फरवरी-मार्च में जब हिम पिघलती है तो यहाँ घास उगती है। इन्हें 'बुग्याल' कहते हैं।

जीवजन्तु

भारत में जितनी विविधता वनस्पति में पाई जाती है उतनी ही विविधता जीव जन्तुओं में भी पाई जाती है। वनस्पति जगत से प्राप्त भोजन या ऊर्जा पर ही जीव जन्तुओं का जीवन निर्भर है। अलग-अलग वनस्पति प्रदेशों में अलग-अलग जीव जन्तु पाए जाते हैं। ऊँचे पर्वतीय भागों में याक, मरुस्थलों में ऊँट, कच्छ के रन में जंगली गधे, पर्वतीय ढालों और दलदली भागों में गेंडे, गिर के वनों में सिंह और असम, केरल और कर्नाटक में हाथी, पर्वतीय ढालों की घास भूमियों में भेड़-बकरी, पतझड़ वनों में विविध प्रकार के हिरण, जंगली भैंसे, नीलगाय, तेन्दुआ, विभिन्न प्रकार के बन्दर आदि मिलते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु तथा मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। हमारे देश में अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी भी पाए जाते हैं।

वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान करने के लिए हमारे देश के विविध भागों में राष्ट्रीय उद्यान, वन्य प्राणी अभ्यारण्य और चिड़िया घर बनाए गए हैं। जिनमें कान्हा-किसली (मध्यप्रदेश), काजीरंगा (असम) गिर (गुजरात), कार्बेट (उत्तराखंड) बांधवगढ़ (मध्यप्रदेश) पेरियर (केरल) रणथम्भौर (राजस्थान) आदि प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य हैं।

- भारत में पाँच प्रकार की वनस्पति पाई जाती है- ऊष्ण कटिबंधीय वर्षा वन, उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन, कंटीले वन तथा झाड़ियां, ज्वारीय वन एवं पर्वतीय वनस्पति।
- विभिन्न प्रकार के वन, घास भूमियाँ और झाड़ियों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।
- भारत के विभिन्न भागों में शेर, तेन्दुए, हाथी, ऊँट, याक, गेंडे, जंगली भैंसे, हिरण, लंगूर, बंदर, सूअर आदि वन्य जीव तथा हजारों प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी पाए जाते हैं।
- बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु तथा मोर राष्ट्रीय पक्षी है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं?

(ब) मानसूनी वनों की दो विशेषताएं लिखिए।

(स) भारत में पाये जाने वाले किन्हीं दो वनों के नाम लिखिए।

(द) पर्वतीय वनों की दो पेटियों के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) भारत में कितने प्रकार की वनस्पति पाई जाती हैं ? किन्हीं दो का वर्णन कीजिए।

(ब) भारत में कौन-कौन से जीवजन्तु पाए जाते हैं ?

(स) 'वनों का महत्व' विषय पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

3. निम्नलिखित दो समूहों की आपस में सही जोड़ी बनाइए-

अ. वनस्पति के प्रकार	ब. मुख्य वृक्ष
(अ) उष्ण कटिबन्धीय सदाहरित वन	सुन्दरी वृक्ष
(ब) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन	चीड़ के वृक्ष
(ग) कटीले वन तथा झाड़ियाँ	सागौन वृक्ष
(घ) ज्वारीय वन	बबूल वृक्ष
(प) पर्वतीय वन	महोगनी वृक्ष

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) हमारा राष्ट्रीय पशु ..... है।

(ब) हमारा राष्ट्रीय पक्षी ..... है।

(स) नदियों के डेल्टाओं में ..... वन पाये है।

(द) गिर के वनों में ..... पाया जाता है।

(इ) मरूस्थल का मुख्य पशु ..... है।

5. निम्नलिखित में अन्तर बताइये-

(अ) सदाबहार वन और पर्णपाती वन

(ब) कंटीले वन और ज्वारीय वन

6. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित की स्थिति दर्शाइए-

कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, गिर राष्ट्रीय उद्यान, रणथम्भौर पक्षी अभ्यारण्य, ज्वारीय वन।

प्रोजेक्ट कार्य

- भारत में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के वन्य पशु तथा पक्षियों के चित्रों का संग्रह कीजिए।
- अपने जन्म दिन पर या किसी उत्सव पर कम से कम एक पौधा लगाकर और उस पर अपने नाम की पट्टिका लगाएँ।

❖❖❖❖

पाठ 25

भारत की प्रमुख फसलें

आइए सीखें

- भारत में कृषि का क्या महत्व है?
- भारत की प्रमुख फसलें कौन-कौन सी है?
- देश में पाई जाने वाली मिट्टी एवं फसलों का वितरण किस प्रकार है?

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की 70 प्रतिशत से ज्यादा जनसंख्या गांवों में निवास करती हैं। उनकी जीविका एवं भरण-पोषण का मुख्य आधार कृषि हैं। देश की अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी कृषि है। अनेक उद्योगों को कच्चा माल कृषि से मिलता है। कृषि उत्पादों पर आधारित इन उद्योगों का राष्ट्रीय आय में भारी योगदान है तथा इनमें बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देने की संभावनाएँ छिपी हैं। यही कारण है कि भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय कृषि का बड़ी तेजी से विकास हुआ है। यह सब देश के परिश्रमी किसानों, अनुकूल जलवायु और उपजाऊ मिट्टी के कारण संभव हो सका है। संसार के अधिकतर देशों में साल में केवल एक ही फसल पैदा की जाती है। किन्तु भारत में दो फसलों की पैदावार होती हैं। भारत में भी अब वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया जाने लगा है। संसाधनों का उपयोग व आवश्यकतानुसार रासायनिक खादों तथा अधिक उपज देने वाले बीजों के उपयोग से भरपूर फसल होती है। विभिन्न तरह के कीड़ों, नाशक जीव, फफूंद तथा खरपतवार से फसलों को बचाने के लिए अब कीटनाशक, फफूंदनाशी तथा खरपतवार नाशक दवाएं उपलब्ध हैं। उर्वरता बनाए रखने तथा बढ़ाने के लिए हरी तथा गोबर जैसी जैव खादों के साथ-साथ खेतों में रासायनिक उर्वरकों का उचित मात्रा में उपयोग के साथ ही साथ नये-नये कृषि उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।

प्रमुख फसलें

भारत के अलग-अलग भागों में अलग-अलग फसलें होती हैं। किसी भाग में गन्ना एवं चावल अधिक होता है तो कहीं दालें अधिक होती हैं, तो कहीं गेहूँ, चना तो कहीं मक्का, ज्वार अधिक होती है।

फसलें पानी व तापमान की आवश्यकतानुसार अलग-अलग समय में बोई जाती हैं। बोवाई के आधार पर फसलों को तीन वर्गों में बांटा गया है -

ऋतु	फसल का प्रकार	फसल का नाम	अवधि
वर्षा ऋतु	खरीफ	धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, मूँगफली, उड़द, कपास, सोयाबीन, सूरजमुखी, कोदों, तिल, अरहर, मूँग, भिंडी,ग्वार, तम्बाकू आदि ।	जून-जुलाई माह में (वर्षा के प्रारंभ में) बोई जाती है और सितम्बर-अक्टूबर माह में काट ली जाती है ।
शीत ऋतु	रबी	गेहूं, जौ, चना, सरसों, गन्ना, अलसी, मसूर, राई, मटर, जई, आलू, गाजर, मूली, टमाटर, गोभी, पालक आदि ।	अक्टूबर-नवंबर माह में बोई जाती है और गर्मी के प्रारंभ में मार्च-अप्रैल माह में काट ली जाती है ।
ग्रीष्म ऋतु	जायद	सब्जियां, ककड़ी, खरबूज, तरबूज, मूँग आदि ।	ये गर्मी के प्रारंभ (मार्च-अप्रैल) में बोई जाती है तथा वर्षा के प्रारंभ (जून-जुलाई) में काट ली जातीहै।

भारत की लगभग 65-70 प्रतिशत जनसंख्या जीविकोपार्जन हेतु कृषि पर निर्भर है । हमारे देश की जलवायु, भौगोलिक परिस्थितियों एवं मिट्टी खेती के लिए अनुकूलता प्रदान करती है, जिसके फलस्वरुप हमारे देश में वर्ष भर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जा सकती है जो कि अन्य स्थानों पर संभव नहीं है।

वर्षा काल के दौरान देश के विभिन्न भागों में जून-जुलाई से लेकर सितम्बर-अक्टूबर तक धान, तम्बाकू, सूरजमुखी, ज्वार, मक्का, बाजरा, सोयाबीन, अरहर, मूंग, उड़द, तिल, कपास, मूँगफली इत्यादि फसलें उत्पादित की जाती है, इन्हें **खरीफ मौसम की फसलें** कहा जाता है । इसी प्रकार अक्टूबर-नवम्बर से लेकर मार्च -अप्रैल तक के समय में गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर, अलसी, मसूर, गन्ना इत्यादि फसलें मुख्य रूप से उत्पादित की जाती है, इन्हें **रबी मौसम की फसलें कहा जाता है** । मार्च -अप्रैल से लेकर जून-जुलाई तक गर्म मौसम में बेल वाली फसलें जैसे-गिलकी, तोरई, लौकी, तरबूज, ककड़ी, कद्दू, करेला, भिण्डी एवं ग्रीष्मकालीन मूँग इत्यादि उगाई जाती है, इन्हें **जायद की फसलें** कहा जाता हैं।

गर्म एवं उष्ण जलवायु में काजू, नारियल, खजूर, अंगूर इत्यादि फलों व समान तापक्रम एवं आर्द्रता वाले क्षेत्रों में आम, अमरुद, केला, अनार, पपीता, संतरा, अनानास इत्यादि फलों तथा ठण्डी जलवायु वाले (उत्तरी भारत) क्षेत्रों में सेवफल, नाशपाती, आडू, बादाम इत्यादि फलों को वर्षभर देश में उत्पादित किया जा सकता है। विभिन्न पुष्पीय पौधों का उत्पादन भी वर्ष भर किया जा सकता है। अतः हमारे देश में संपूर्ण वर्ष भर किसी न किसी फसल को उगाया जा सकता है। इसी कारण खेती पर निर्भरता अधिक है।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्ष के 365 दिन हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में कोई न कोई फसल अनिवार्य रूप से उगायी जा सकती है व देश की अधिकांश जनसंख्या विभिन्न कृषि उत्पादन से संबंधित कार्यो जैसे जुताई, निंदाई, गुड़ाई, कटाई, फल व सब्जियों का परिरक्षण, स्थानान्तरण या कृषि आधारित उद्योगों जैसे-पशुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी, मत्स्यपालन इत्यादि में वर्षभर संलग्न रहते है । इसी कारण कृषि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है ।

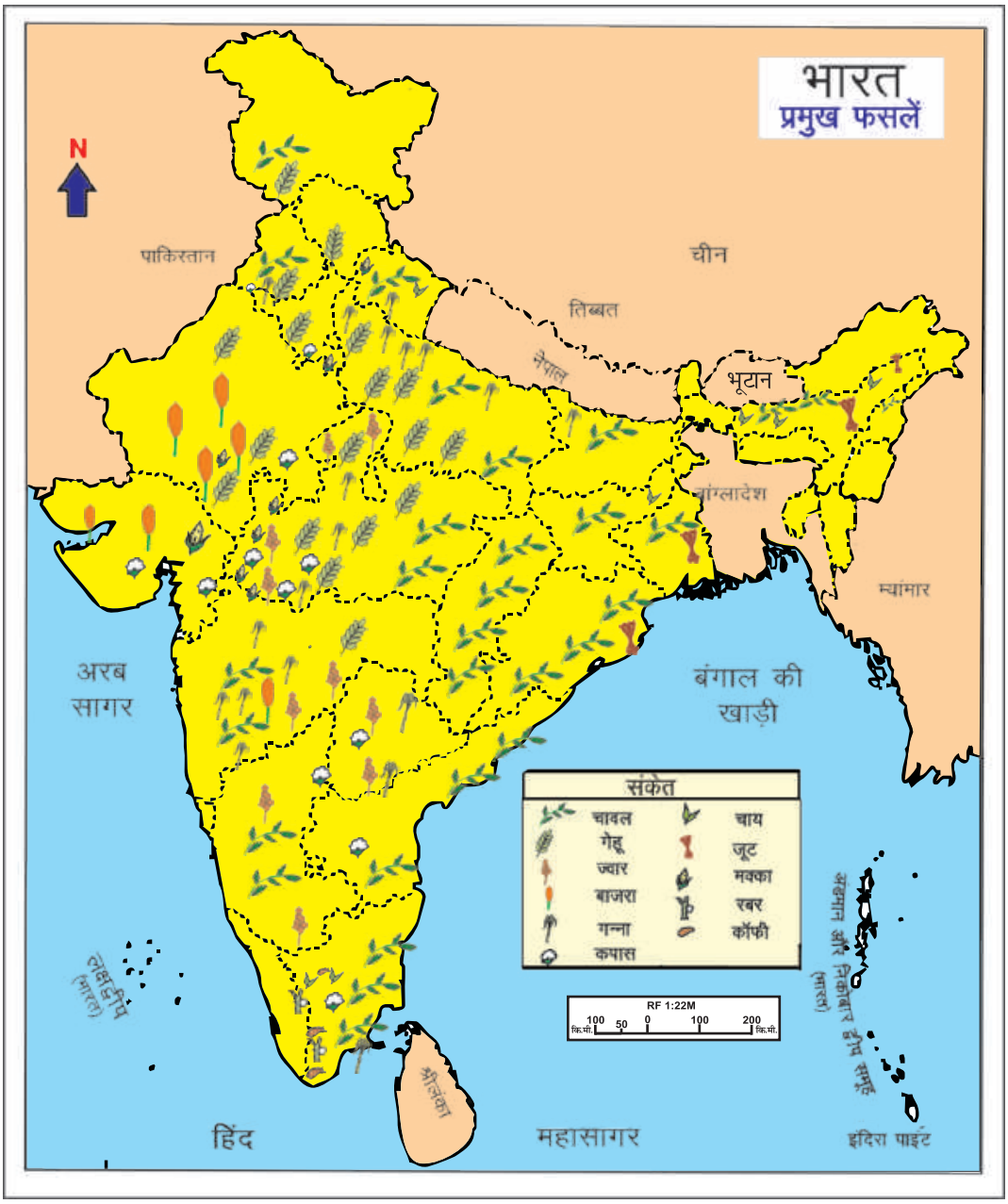

मिट्टी एवं फसलें

हम मुख्यतः भोजन, वस्त्र के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि उपजों व फसलों के लिए मिट्टी एक महत्वपूर्ण कारक है। विभिन्न फसलें तिलहन, पेय पदार्थ, सब्जियाँ, फल, फूल आदि मिट्टी में ही उगाए जाते हैं। भूवैज्ञानिक संरचना, धरातलीय उच्चावच, जलवायु तथा प्राकृतिक वनस्पति की विभिन्नता के कारण भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टीयाँ मिलती हैं। मृदा परिच्छेदिका संस्तरों के विकास तथा जलवायु दशाओं से इनके अंतसंबंध के आधार पर भारत में निम्नलिखित प्रकार की मिट्टी पाई जाती है -

1. **जलोढ़ मिट्टी -** यह मिट्टी नदियों द्वारा निक्षेपित महीन गाद से निर्मित होती है। यह मिट्टी भारत के उत्तरी मैदान में गंगा, सतलज व ब्रह्मपुत्र के मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत के महानदी, गोदावरी, कृष्णा

तथा कावेरी नदियों के डेल्टाई भाग व तटवर्ती क्षेत्रों में मिलती है। उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, असम, राजस्थान व मध्यप्रदेश राज्यों में यह पायी जाती है। इन क्षेत्रों की मुख्य फसलें गेहूँ, चावल, गन्ना, जूट, सरसों, बाजरा आदि है।

2. काली मिट्टी– यह मिट्टी ज्वालामुखी के लावा निक्षेपण से बनी है, जो मुख्यतः महाराष्ट्र, दक्षिणी एवं पूर्वी गुजरात, पश्चिमी मध्यप्रदेश, उत्तरी कर्नाटक, उत्तरी आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में पायी जाती हैं। इस मिट्टी में कपास, मूँगफली, गन्ना, तम्बाकू, दलहन (मूँग, उड़द, अरहर, चना, मटर) तिलहन (सूरजमुखी, तिल, मूँगफली, अरण्डी) आदि फसलें होती है।

3. लाल मिट्टी - यह मिट्टी आग्नेय शैल से बनी है। यह मिट्टी तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, दक्षिणी पूर्वी महाराष्ट्र, पूर्वी आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं झारखण्ड में पायी जाती हैं। यह मिट्टी कम उपजाऊ है, यहाँ पर मोटे अनाज मक्का, ज्वार, धान, कोदों तथा दलहन (मोठ, मूँग, उड़द) एवं तिलहन की कृषि की जाती है।

4. लेटेराइट मिट्टी - यह मिट्टी कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी पश्चिमी घाट तथा इलायची की पहाड़ियों, पूर्वी घाट व छोटा नागपुर, तमिलनाडु और गुजरात के कुछ भागों में पायी जाती हैं। इन प्रदेशों में धान तथा दलहन एवं तिलहन, चाय, काजू और रबर की कृषि की जाती है।

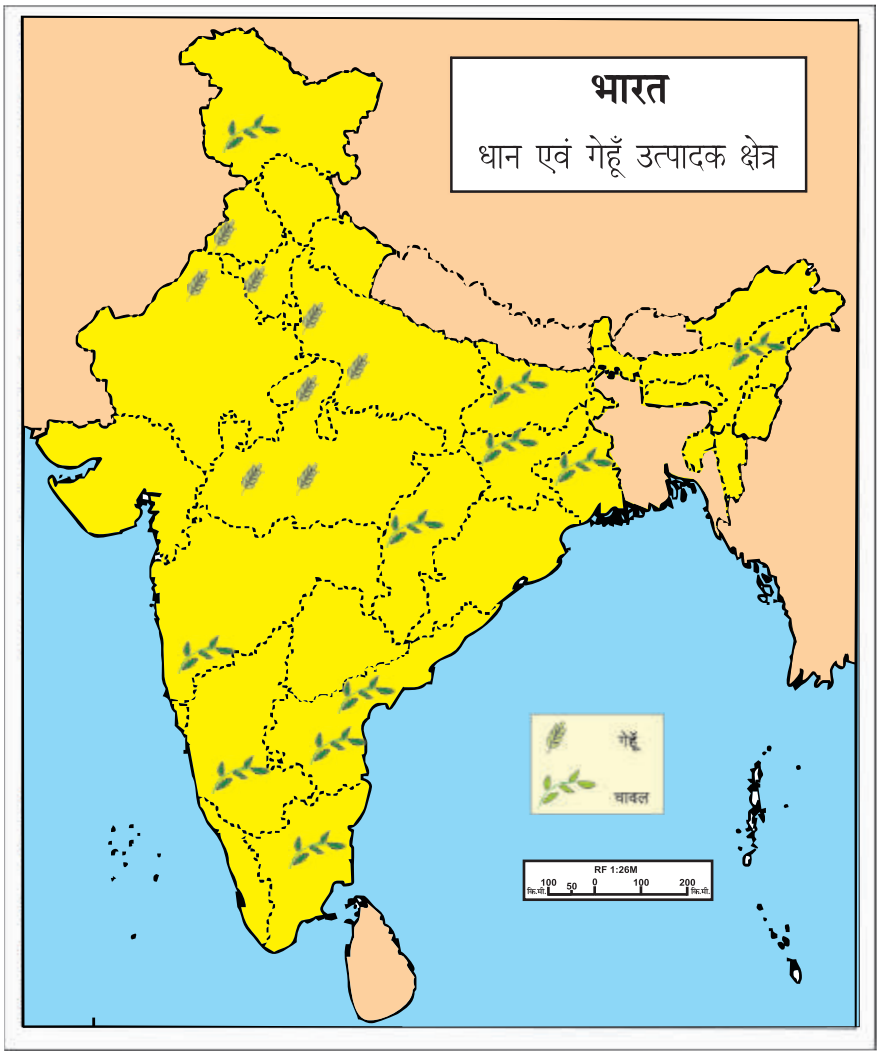

5. पर्वतीय मिट्टी - पर्वतीय प्रदेश में पायी जाने वाली मिट्टी की गहराई बहुत कम होती है। यह मिट्टी मुख्यतः हिमालय क्षेत्र, उत्तरी पूर्वी भारत, पहाड़ी क्षेत्रों, पश्चिमी एवं पूर्वी घाट व प्रायद्वीपीय भारत में नीलगिरि, सतपुड़ा पहाड़ियों में पायी जाती है। यहाँ पर बागाती फसलों की कृषि की जाती है। जिसमें चाय, कहवा, मसालें एवं फल (सेव, अखरोट, नाशपाती, आड़ू आदि) मुख्य है।

6. मरूस्थलीय मिट्टी - इस मिट्टी को बलुई मिट्टी भी कहते है। यह मिट्टी पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी पंजाब, दक्षिणी हरियाणा तथा गुजरात में पायी जाती है। इन क्षेत्रों में मोटे अनाज जैसे ज्वार- बाजरा, जौ, सरसों, चना, कपास, मोठ, लोबिया, मूँग, खजूर, बेर आदि की खेती होती है। लेकिन जहाँ सिंचाई की सुविधा है वहाँ पर गेहूँ की कृषि भी की जाती है।

प्रमुख खाद्यान्न फसलें- गेहूं, धान और दालें आदि खाद्यान्न फसलें हैं। यह सामान्यतः प्रतिदिन के भोजन में प्रयोग में लायी जाती हैं। इसके अलावा ज्वार, बाजरा और मक्का भी खाद्यान्न फसलें हैं। मानचित्र में प्रमुख खाद्यान्न/फसलों का वितरण बताया गया है। चावल पूर्वी भारत एवं दक्षिणी भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल हैं जो पं. बंगाल, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, बिहार, असम में पैदा होता है। गेहूं, उत्तरी भारत की मुख्य खाद्यान्न फसल है। प्रमुख उत्पादक राज्य है- उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और मध्यप्रदेश।

ज्वार मुख्य रूप से महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक, गुजरात और मध्यप्रदेश में उगायी जाती हैं। बाजरा, राजस्थान और गुजरात की मुख्य फसल है। मक्का की फसल पंजाब, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और आंध्रप्रदेश में उगायी जाती है।

नीचे भारत का नक्शा दिया गया है इस नक्शें में वह राज्य दिखाएं गये हैं जहां गेहूं व धान की खेती की जाती है। दिए गए नक्शें को देखकर उन राज्यों के नाम लिखो जहां-जहां गेहूं व धान उगाया जाता है।

गेहूं उत्पादक राज्य	धान उत्पादक राज्य
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

दालें- यह हमारे भोजन में प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है। चना, अरहर अथवा तुअर, मसूर, उड़द, मूंग तथा मटर दालों की प्रमुख किस्में हैं। इन सभी दालों को उन क्षेत्रों को छोड़कर जहां वर्षा बहुत अधिक होती है, पूरे भारतवर्ष में उगाया जाता है। दाल के पौधे फलीदार होते हैं। ये जिस मिट्टी में बोये जाते हैं उसकी उर्वरता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

अखाद्यान्न फसलें

तिलहन- मूंगफली, सरसों, तिल, अलसी, अरंडी, कुसुम, सूरजमुखी और सोयाबीन तिलहन के अंतर्गत आते हैं। इन सभी के बीजों से तेल निकाला जाता है। पूर्वी तथा उत्तरी भारत में सरसों, पश्चिमी भारत में मूंगफली, मध्य भारत में सोयाबीन तथा दक्षिण भारत में नारियल के तेल का प्रयोग खाना बनाने में किया जाता है। परंतु मूंगफली और सूरजमुखी का तेल खाना बनाने में पूरे भारत में प्रचलित है।

रेशेदार फसलें- कपास तथा जूट दो प्रमुख फसलें हैं जिनसे रेशें प्राप्त होंते हैं। दक्षिण पठार की काली मिट्टी में कपास का पौधा अच्छी तरह उगता है तथा यहां पर्याप्त ताप व खिली-धूप भी मिलती है। महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश व गुजरात में कपास होता है। पटसन या जूट की खेती पश्चिम बंगाल में गंगा के डेल्टा में मुख्य रूप से की जाती है।

रोपण फसलें- चाय, कहवा भारत में उगाई जाने वाली दो प्रमुख पेय फसलें हैं। चाय आसाम की ब्रह्मपुत्र और सूरमा घाटियों में पश्चिम बंगाल के हिमालय के ढालों पर, कांगड़ा कुमाऊ और दक्षिण भारत की नीलगिरि के पहाड़ी ढालों पर उगाई जाती है। भारत संसार के प्रमुख चाय निर्यातक देशों में से एक है।

कहवा, उष्णकटिबंधीय उच्च भूमि की उपज है। कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। कहवा के कुल उत्पादन का लगभग तीन चौथाई भाग निर्यात किया जाता है।

गन्ने के पौधे के लिए उच्च तापमान, सिंचाई के लिए अधिक और अच्छे जल निकास वाली उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। हमारे देश के बहुत से भागों में गन्ने की खेती की जाती है जिसमें उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश आदि प्रमुख उत्पादक राज्य है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) भारत में कृषि का क्या महत्व है?

(ब) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय कृषि का तेजी से विकास हुआ, क्यों?

(स) भारत में बोई जाने वाली खरीफ, रबी और जायद फसलों के दो-दो नाम लिखें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिट्टियों का वर्णन करते हुए उनमें बोई जाने वाली फसलों को बताइए।

3. भारत के मानचित्र में चावल, गेहूं, गन्ना, कपास तथा जूट उत्पादक राज्यों को दर्शाइए :-

पाठ 26

भारत के खनिज, शक्ति के साधन और उद्योग

आइए सीखें

- भारत में खनिज पदार्थ एवं शक्ति के साधनों का वितरण किस प्रकार है?
- खनिज पदार्थों की उपयोगिता क्या है?
- खनिज पर आधारित उद्योग कौन-कौन से हैं?

प्रकृति ने हमें संसाधन नि:शुल्क प्रदान किये हैं, जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। मानव ने खनिजों के अनेक उपयोग जान लिए हैं। इनसे हम तरह-तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाते हैं। देश के औद्योगिक विकास में इनका महत्वपूर्ण हाथ है। खनिज पदार्थ हमारी पृथ्वी के गर्भ (अन्दर) में बहुत गहराई तक छिपे हुए तथा समुद्र के अध: स्तल के नीचे भी दबे हुए हैं। इस वैज्ञानिक युग में इन खनिज पदार्थों का महत्व बढ़ता जा रहा है।

हमारा देश खनिज पदार्थों में काफी सम्पन्न है। यहां लोहा, मैंगनीज, अभ्रक, तांबा, सीसा, जस्ता बाक्साईट, सोना आदि खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इनके अलावा शक्ति के साधन हैं, जैसे कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस आदि।

आइये अब हम हमारे देश में कौन-कौन से खनिज पदार्थ कहां-कहां पर निकलते हैं, उनके बारे में जाने-

खनिज पदार्थ तक पहुंचने के लिए भूपर्पटी (भूमि) में एक बड़ा और गहरा छेद किया जाता है तथा सुरंगे बनाकर खनिज निकाले जाते हैं। ऐसी खान को खनिकूप या शेफ्ट माइन कहते हैं।

हमारे देश में कई खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इनके वितरण को जानने के लिए भारत के खनिज पदार्थ के मानचित्र को ध्यान से देखिये तथा मानचित्र को देखकर इन खनिज पदार्थों की सूची बनाइये जो हमारे देश में निकाले जाते हैं-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

5 _____ 6 _____ 7 _____ 8 _____

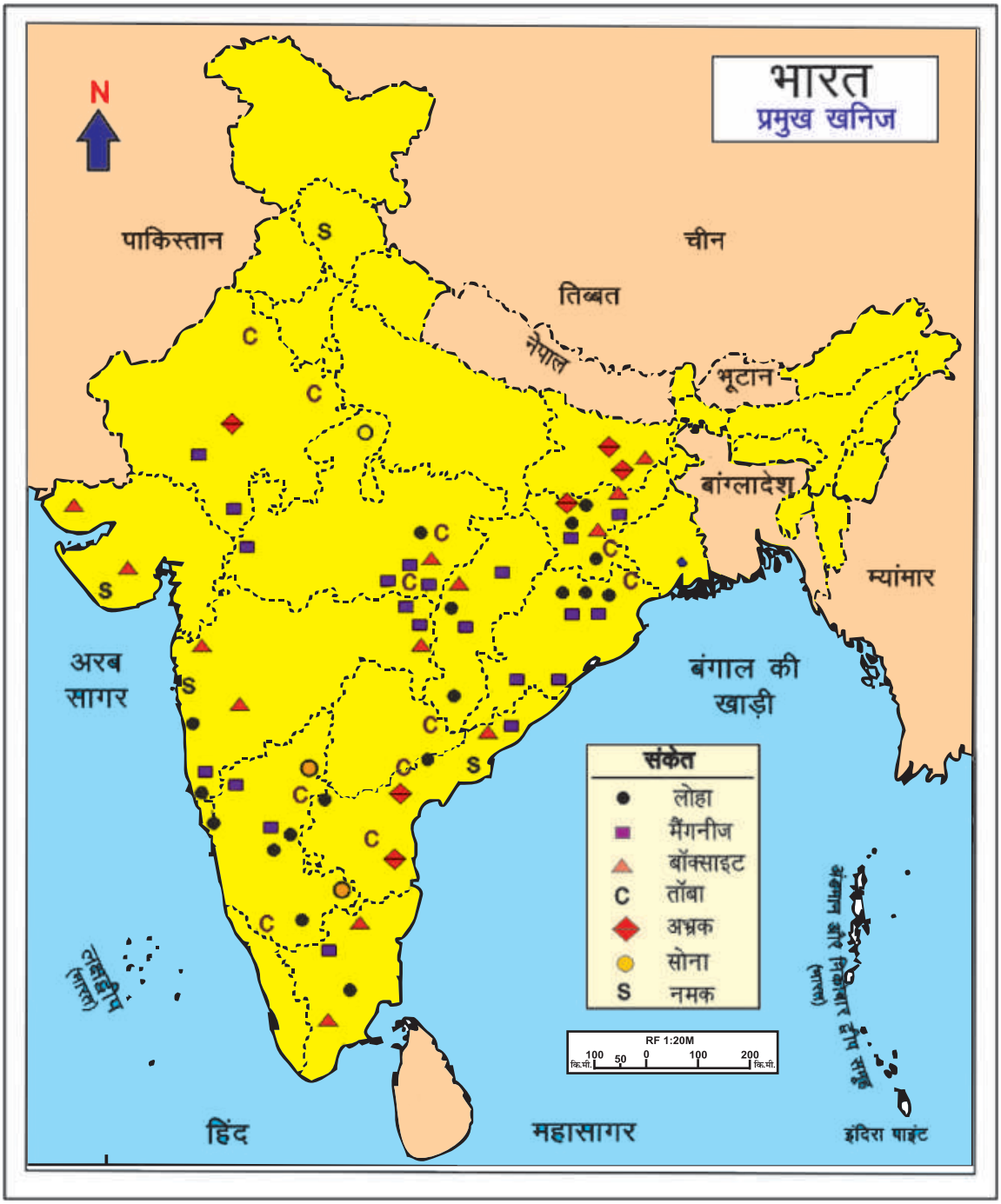

भूपर्पटी (भूमि) में कुछ ऐसे कुएं खोदे जाते हैं जिनसे खनिज तेल निकाला जाता है। इन्हें तेल कूप कहते हैं। तेल कूप खोदने और खनिज तेल बाहर ले जाने की प्रक्रिया बेधन या ड्रिलिंग कहलाती है।

प्रमुख खनिज

लोहा- हमारे देश में उत्तम कोटि का लोहा बड़े पैमाने पर निकाला जाता है। इस लोहे की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अत्यधिक मांग है।

लोहा हमारे देश में झारखंड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान में पाया जाता है। आधे से अधिक लोहे के भंडार बिहार के सिंह भूमि जिले और उड़ीसा के निकटवर्ती क्योंझर और मयूरभंज जिलों में निकाला जाता है।

लोहे से इस्पात, रेल पटरियां सरिये, रेल के स्लीपर, कई प्रकार की मशीनें कलपुर्जे, बर्तन आदि बनाये जाते हैं। इमारतें, पुल आदि में भी लोहा काम में आता है।

मध्यप्रदेश में लोहा मुख्य रूप से कटनी-जबलपुर और नरसिंहपुर जिले में मिलता है।

मैंगनीज- मैंगनीज का औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारत में उड़ीसा में क्योंझर, मयूरभंज, कर्नाटक में चितलदुर्ग, शिमोगा, चिकमंगलूर, धारवाड़ आदि में निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त बिहार, आंध्रप्रदेश, राजस्थान और मध्यप्रदेश में मैंगनीज निकाला जाता है। मध्यप्रदेश में बालाघाट, छिंदवाड़ा, सिवनी, जबलपुर एवं झाबुआ में मैंगनीज पाया जाता है।

मैंगनीज का उपयोग ब्लीचिंग पाउडर, सीसा को रंगीन बनाने, लोहे में मिलाने में, सूखी बैटरी, प्लास्टिक, शीशे के समान, चीनी के बर्तन और रासायनिक पदार्थ में होता है।

बाक्साइट- बाक्साइट का उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। यह खनिज बिहार, गुजरात तथा मध्यप्रदेश में प्रमुखता से निकाला जाता है। इनके अतिरिक्त आंध्रप्रदेश,महाराष्ट्र में भी इसका उत्पादन होता है।

बाक्साइट का उपयोग एल्यूमीनियम बनाने, चीनी मिट्टी के बर्तन, मिट्टी का तेल (घासलेट) साफ करने, रासायनिक द्रव तैयार करने, सीमेंट तैयार करने, वायुयानों और विद्युत तारों के निर्माण में होता है। बाक्साइट मध्यप्रदेश के जबलपुर, बालाघाट, मंडला, कटनी, छिंदवाड़ा जिलों में निकाला जाता है।

तांबा- तांबा भारत के बिहार के सिंहभूमि, मध्यप्रदेश के बालाघाट, राजस्थान के झुँझुनू तथा अलवर, आंध्रप्रदेश के गुंटूर, कर्नाटक के चित्रदुर्ग में तांबे का उत्पादन किया जाता है।

तांबे का उपयोग बिजली के समान बनाने और घरेलू बर्तन, सिक्के आदि बनाने में होता है।

अभ्रक- अभ्रक का उपयोग कई पदार्थ बनाने में होता है। यह ताप और विद्युत का कुचालक है। अत: इसका उपयोग बिजली की सामग्री बनाने, रंग रोगन, वार्निश आदि में किया जाता है।

देश में अभ्रक बिहार, आंध्रप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु और केरल में निकाला जाता है। मानचित्र में देखिये। भारत में संसार का 90 प्रतिशत अभ्रक का उत्पादन किया जाता है।

सोना- भारत में सोने की खानें मुख्य रूप से कर्नाटक में रायचूर, हट्टीखान, आंध्रप्रदेश के अनन्तपुर के रामगिर क्षेत्र में है।

चांदी- चांदी का हमारे देश में कर्नाटक के कोलार तथा जबार क्षेत्र में ही उत्पादन होता है।

उपर्युक्त खनिजों के अतिरिक्त हमारे देश में सीसा, जस्ता, हीरा, ग्रेफाइट, क्रोमाईट, यूरेनियम आदि खनिज पदार्थ भी निकाले जाते हैं।

शक्ति के साधन

जिन संसाधनों से ऊर्जा उत्पन्न की जाती हैं, उन्हें शक्ति के साधन कहते हैं। जैसे कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल विद्युत, आण्विक खनिज आदि शक्ति के साधन है। आइये इनके बारे में जानें-

कोयला- औद्योगिक ऊर्जा का प्रमुख साधन होने के साथ कोयला एक कच्चा माल है। लोहा तथा इस्पात एवं रसायन उद्योगों के लिए कोयला का उपयोग अनिवार्य है। देश में व्यापारिक शक्ति का 60 प्रतिशत से भी अधिक आवश्यकताएं कोयले से पूरी होती हैं।

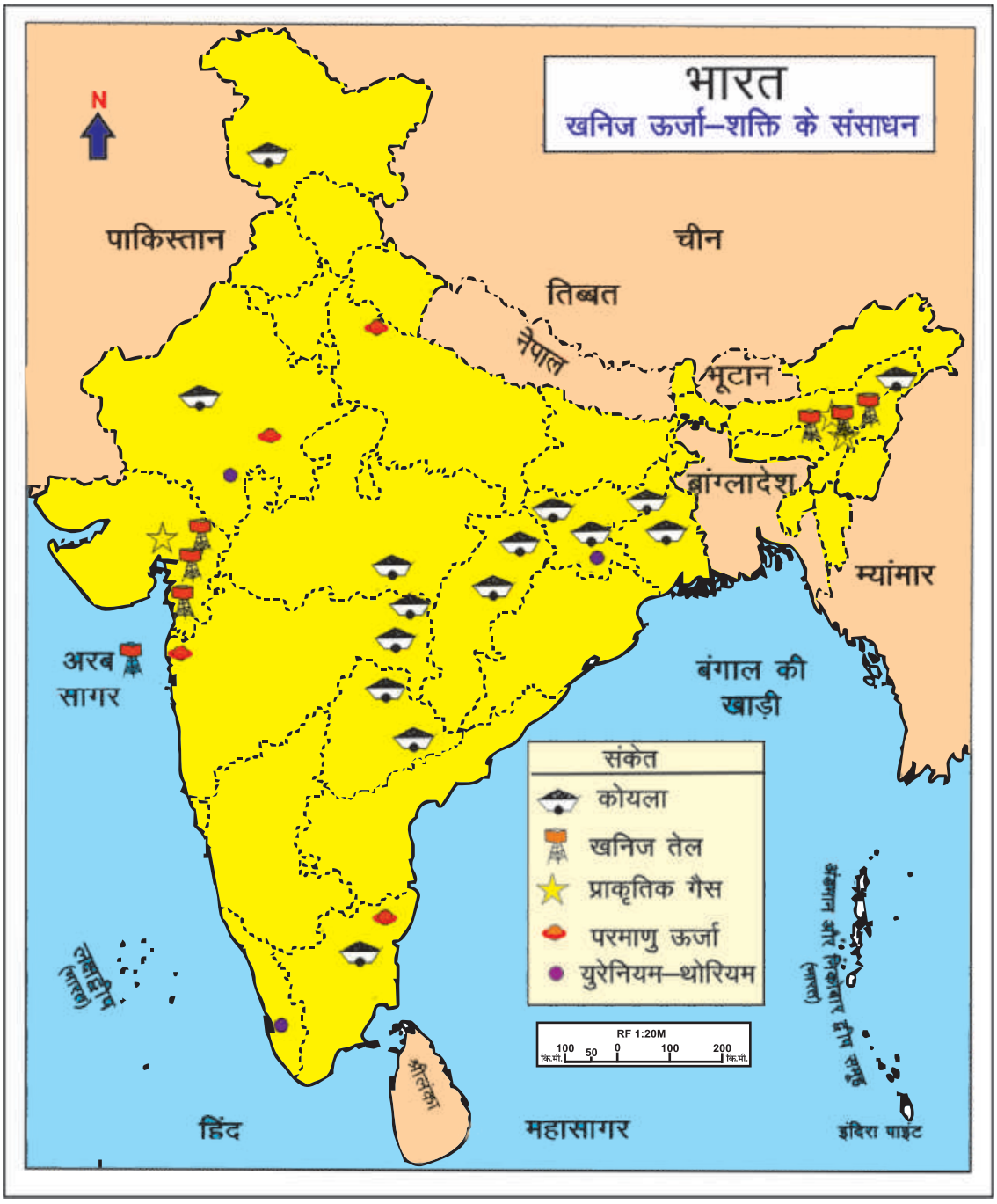

कोयले के उत्पादन में संसार में हमारे देश का 5वां स्थान है। हमारे देश में कोयले का उत्पादन पश्चिमी बंगाल के रानीगंज, बर्द्धमान, बांकुरा, पुरलिया, वीरभूमि, दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी में निकाला जाता है। बिहार में झरिया, गिरिडीह, बोकारो, हजारीबाग में तथा मध्यप्रदेश के रीवा, उमरिया, पेंचघाटी, सोहागपुर, छिंदवाड़ा आदि जिलों में निकाला जाता है। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र, **तेलंगाना,** अरुणाचल प्रदेश में भी कोयले का उत्पादन किया जाता है।

खनिज तेल और गैस

भारत में तेल का क्षेत्र 10 लाख वर्ग किलोमीटर में है। यह देश का एक तिहाई क्षेत्रफल है। इसके अंतर्गत गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान, तटीय पट्टियां तथा तट के सहारे फैला और समुद्री जल में डूबा हुआ है। गुजरात के मैदान, थार का मरुस्थल और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह क्षेत्र भी आते हैं। खोज के बाद इन क्षेत्रों में खनिज तेल की उपस्थिति ज्ञात हुई है। स्वतंत्रता के पूर्व असम में ही खनिज तेल निकाला जाता था। वर्तमान में खनिज तेल असम, गुजरात तथा मुम्बई के तटीय समुद्र से निकाला जाता है।

मुम्बई तट से 115 कि.मी. दूर समुद्र में 'मुंबई हाई' के नाम से प्रसिद्ध भारत का सबसे बड़ा तेल क्षेत्र है। समुद्र में तेल की खोज के लिए जापान से 'सागर सम्राट' नाम का जहाज मंगाया गया था।

खनिज तेल क्षेत्रों के साथ ही गैस भंडार भी पाये जाते हैं। लेकिन तेल क्षेत्रों से अलग प्राकृतिक गैस के भंडार केवल त्रिपुरा और राजस्थान में खोजे गए हैं। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु आंध्रप्रदेश तथा उड़ीसा के समुद्री किनारों पर गहरे सागर में भी प्राकृतिक गैस के भंडार मिले हैं।

उपर्युक्त शक्ति के साधन के अतिरिक्त हमारे देश में ताप और परमाणुशक्ति से भी ऊर्जा उत्पन्न की जा रही है। इनके अतिरिक्त पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा का भी तीव्रगति से उपयोग हो रहा है।

- भारत खनिज की दृष्टि से सम्पन्न देश है।
- यहां पर लोहा, मैगनीज, बाक्साइट, अभ्रक, तांबा, आदि खनिज प्रचुर मात्रा में निकाले जाते हैं।
- संसार का 90 प्रतिशत अभ्रक भारत में निकाला जाता है।
- जिन संसाधनों से ऊर्जा उत्पन्न होती उसे शक्ति के साधन कहते हैं- जैसे कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल विद्युत, परमाणु ऊर्जा आदि।

क्या आप जानते हो? भारत में चार परमाणु बिजली घर काम कर रहे हैं। महाराष्ट्र गुजरात की सीमा पर तारापुर, राजस्थान में कोटा के पास रावतभाटा में, तमिलनाडु के कलपक्कम में तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में गंगा के तट पर नरोरा में परमाणु बिजली घर है। मानचित्र में ये स्थान देखिये।

शक्ति के साधनों की कमी वाले देश में प्राकृतिक गैस की उपलब्धि एक अनमोल उपहार है। प्राकृतिक गैस पर आधारित बिजली घर बनाने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है। गैस पाइप लाइनों के द्वारा गैस का परिवहन सरल हो गया है। अब मुम्बई और गुजरात के गैस क्षेत्रों से गैस मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश तक भेजी जा रही है। यह हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर गैस लाइन के नाम से जानी जाती है।

भारत के प्रमुख उद्योग

भारत में पर्याप्त मात्रा में विभिन्न प्रकार के संसाधन पाये जाते हैं। इस कारण देश में उद्योगों के विकास

की अनेक संभावनाएँ हैं। कच्चे माल के साथ ऊर्जा के साधनों का होना, सड़कों व रेलमार्गों की सुविधा, तकनीकी शिक्षा, प्राप्त अनुभवी कारीगर, बाजार की उपलब्धता, अनुकूल शासकीय नीति आदि आधारभूत सुविधाओं के लगातार वृद्धि ने भारत में उद्योगों को बढ़ावा दिया है। परंतु इन सुविधाओं का सभी जगह समान वितरण न होने के कारण भारत में उद्योगों का वितरण असमान है।

कृषि आधारित उद्योग- देश में कपास, गन्ना, जूट, तिलहन, तंबाकू, चाय, काफी, रबर आदि का उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। सूती वस्त्रोद्योग, शक्कर, जूट, तेल की मिलें, वनस्पति तेल के कारखाने आदि कृषि आधारित उद्योग है। इनमें से सूती वस्त्रोद्योग व शक्कर उद्योग को आइये हम जाने-

सूती वस्त्रोद्योग- कपास, जूट, ऊन, रेशम आदि के रेशों से वस्त्र बनाया जाता है। कपास से बीज निकालना, धुनाई, सूत कसाई, कपड़ा बुनाई, रंगाई आदि सभी प्रक्रियाओं का समावेश सूती वस्त्रोद्योग के अंतर्गत होता है। सूती वस्त्रोद्योग में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिला है। भारत में महाराष्ट्र, गुजरात तथा तमिलनाडु में यह उद्योग मुख्य रूप से विकसित हुआ है। मुंबई तथा अहमदाबाद सूती वस्त्रोद्योग के प्रमुख केंद्र हैं।

शक्कर उद्योग- शक्कर उद्योग का विकास मुख्यत: गन्ने की उपलब्धता पर आधारित है। पहले शक्कर कारखानों में लगने वाली मशीनों का विदेशों से आयात करना पड़ता था, जिससे अधिक पूँजी की आवश्यकता पड़ती थी। लेकिन अब देश में ही मशीनें बनाई जाती हैं। परिणामस्वरूप देश में शक्कर के कारखानों का तेजी से विकास हो रहा है। भारत में शक्कर के सबसे अधिक कारखाने उत्तरप्रदेश में है। इसके बाद महाराष्ट्र का स्थान हैं।

खनिज पर आधारित उद्योग

लोह इस्पात उद्योग- लोह इस्पात उद्योग किसी देश के औद्योगिक विकास का आधार स्तम्भ होता है। सभी प्रकार की मशीनें, यातायात के साधन, खेती के औजार, गृह निर्माण व्यवसाय आदि सभी लोह इस्पात पर निर्भर है। लोह खनिज को शुद्ध कर उससे इस्पात बनाने के लिए लोह खनिज, कोक, चूने का पत्थर, मैंगनीज, पानी आदि की आवश्यकता होती है। इस कारण इस उद्योग की स्थापना बहुधा कोयला क्षेत्रों में हुई है।

भारत में पहला आधुनिक लौह इस्पात कारखाना पश्चिम बंगाल में कुल्टी में स्थापित हुआ था, परंतु बाद में बड़े पैमाने पर इस्पात उत्पादन करने वाला कारखाना जमशेदपुर में स्थापित हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी क्षेत्र में अनेक स्थानों पर यह उद्योग स्थापित किया गया। छत्तीसगढ़ में भिलाई, पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर, उड़ीसा में राऊरकेला, झारखंड में बोकारो, तमिलनाडु में सलेम तथा आंध्रप्रदेश के विशाखापट्टनम में यह उद्योग स्थापित किया गया है।

सीमेंट उद्योग- सीमेंट निर्माण कार्य उद्योग का प्रमुख तत्व है। सीमेंट उद्योग के लिए चूने का पत्थर,

चिकनी मिट्टी, जिप्सम, कोयला आदि कच्चे माल की आवश्यकता होती है। चूने का पत्थर तथा अन्य भारी कच्चे माल के ढोने में ज्यादा खर्च होता है, इसलिए सीमेंट के कारखाने कच्चे माल के क्षेत्र में ही स्थापित किए जाते हैं।

भारत में सीमेंट का पहला कारखाना चेन्नई में स्थापित किया गया था। आज देश में तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार, झारखंड, राजस्थान, कर्नाटक तथा आंध्रप्रदेश प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. भारत में पाए जाने वाले कोई दो खनिज पदार्थों के नाम लिखिए।

ब. भारत में कोयला किन-किन राज्यों में निकाला जाता है? दो नाम लिखिए।

स. भारत में कृषि आधारित उद्योग कौन-कौन से है। किन्हीं दो के नाम लिखिए ।

द. शक्कर उद्योग में पहले पूँजी अधिक क्यों लगती थी? बताइए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. लोहा इस्पात उद्योग के पांच केंद्रों के नाम लिखिए और यह किन राज्यों में स्थित हैं बताइए।

ब. भारत में सीमेंट उद्योग किन-किन राज्यों में स्थित हैं और क्यों ?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. भिलाई में ..... उद्योग है। (लोहा इस्पात/चीनी/कागज)

ब. बाक्साइट ..... में निकाला जाता है। (गुजरात/दिल्ली/हरियाणा)

स. 'मुम्बई हाई' भारत का सबसे बड़ा ..... है (रेलमार्ग/खनिज तेल क्षेत्र)

द. तांबा मध्यप्रदेश के ..... जिले में निकाला जाता है। (उज्जैन/शहडोल/बालाघाट)

4. खनिज पदार्थों को उनके उपयोग के आधार पर सही जोड़ी बनाईए-

	खनिज	उपयोग
अ.	कोयला	ब्लीचिंग पाउडर में
ब.	तांबा व अभ्रक	लोहा इस्पात एवं रसायन उद्योग में
स.	बाक्साइट	बिजली का सामान
द.	मैंगनीज	एल्यूमिनियम बनवाने

5. नीचे दी गई तालिका की पूर्ति कीजिए-

क्र.	नाम	उत्पादन क्षेत्र
अ.	लोहा	----------
ब.	मैंगनीज	----------
स.	बाक्साइट	----------
द.	खनिज तेल	----------
य.	अभ्रक	----------

6. सही उत्तर चुनिए-

अ. भारत में कोयला उत्पादक क्षेत्र है –

(1) उत्तरप्रदेश (2) पश्चिम बंगाल (3) दिल्ली (4) जम्मू-कश्मीर।

ब. भारत में संसार का 90 प्रतिशत खनिज निकाला जाता है–

(1) अभ्रक (2) लोहा (3) तांबा (4) कोयला

स. दुर्गापुर इस्पात संयंत्र किस राज्य में स्थित है –

(1) उड़ीसा (2) झारखंड, (3) तमिलनाडु (4) पश्चिमी बंगाल

द. परमाणु बिजली घर किस राज्य में स्थापित है –

(1) राजस्थान (2) मध्यप्रदेश (3) जम्मू कश्मीर (4) नागालैंड

7. मानचित्र में भारत के खनिज, शक्ति के साधनों एवं उद्योगों को दर्शाइए :-

(i) लोहा इस्पात उद्योग (ii) सूती वस्त्र उद्योग (iii) खनिज तेल, (iv) कोयला

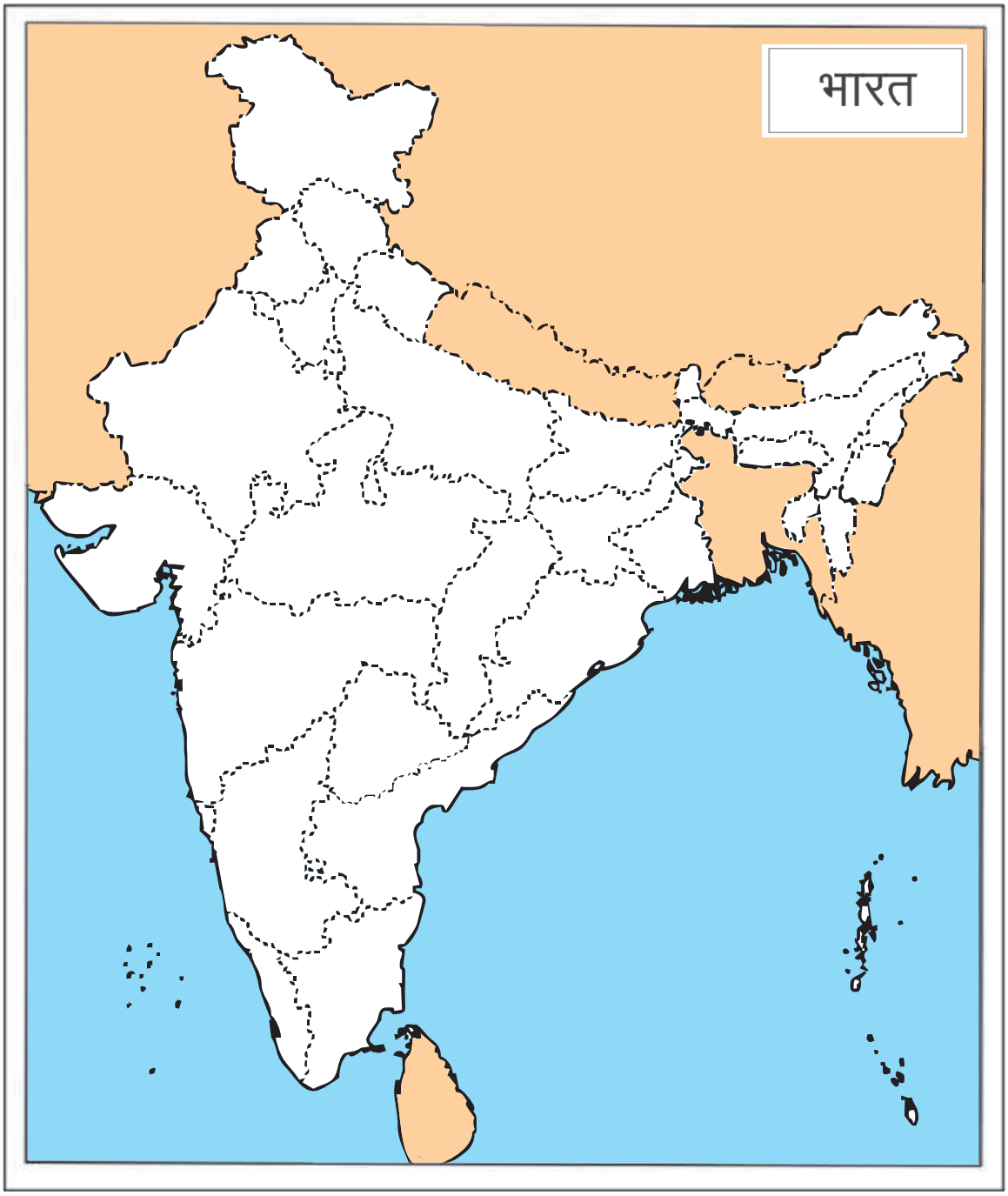

पाठ 27

भारत में परिवहन के साधन

आइए सीखें

- भारत में परिवहन के साधन कौन-कौन से हैं?
- भारत में परिवहन के साधनों का क्या महत्व है?
- भारत के प्रमुख स्थलमार्ग, जलमार्ग व वायुमार्ग कौन-कौन से हैं?
- भारत के पड़ोसी देशों को जोड़ने वाले मार्ग कौन से हैं?

हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने के लिए तथा वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान लाने-ले जाने के लिए अनेक साधनों का उपयोग करते हैं, जैसे: सायकल, बैलगाड़ी, मोटर, बस, रेलगाड़ी आदि। प्राचीनकाल में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पैदल ही जाया करते थे तथा सामान लाने-ले जाने के लिए पशुओं का उपयोग करते थे। पहिये के आविष्कार के साथ ही अनेक साधनों का विकास होता गया। वर्तमान में एक स्थान से दूसरे स्थान तक शीघ्र पहुंचने के लिए हवाई जहाज जैसे तीव्र साधन का उपयोग होने लगा है।

एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए उपयोगी सभी साधन परिवहन के साधन कहलाते हैं।

परिवहन के साधनों का महत्व-

वायु, जल, वनस्पति तथा बहुमूल्य खनिजों की तरह ही परिवहन के विभिन्न साधन भी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। किसी भी देश की आर्थिक प्रगति वहाँ सुलभ परिवहन के साधनों पर निर्भर करता है। दूर-दूर स्थानों को आपस में जोड़ने, सामाजिक समरसता व सद्भाव तथा देश की सुरक्षा में परिवहन के साधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

परिवहन के प्रमुख मार्ग -

परिवहन के विभिन्न साधन विभिन्न मार्गों पर चलते हैं, जैसे- सायकल, बैलगाड़ी, मोटर-कार, बस आदि सड़क मार्ग पर, रेलगाड़ी रेलमार्ग पर, हवाई जहाज, वायुमार्ग पर तथा नाव, जलयान, जलमार्ग पर। आइए, भारत के प्रमुख स्थल मार्ग, जलमार्ग तथा वायुमार्ग के बारे में जानें –

स्थल मार्ग- सड़कें तथा रेलमार्ग स्थल मार्ग के अंतर्गत आते हैं। सम्पूर्ण भारत में सड़कों का जाल बिछा है। भारत के लगभग सभी छोटे-बड़े कस्बे व शहर कच्ची-पक्की सड़कों से जुड़े हैं। भारत की सड़कों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में रखा जा सकता है:-

1. राष्ट्रीय राजमार्ग
2. प्रान्तीय राजमार्ग
3. जिला एवं ग्रामीण सड़कें

राष्ट्रीय राजमार्ग विभिन्न प्रदेशों की राजधानियों, देश के बड़े औद्योगिक व व्यापारिक नगरों, प्रमुख

बन्दरगाहों को आपस में जोड़ने वाली पक्की सड़कें होती हैं। इन मार्गों का निर्माण व रख रखाव केंद्र सरकार के अधीन केंद्रीय लोक निर्माण करती हैं।

राष्ट्रीय राजमार्गों को उनके क्रमांक 1, 2, 3.... आदि के नाम से जाना जाता है। उदाहरण के लिए आगरा और मुम्बई शहर को जोड़ने वाली सड़क को 'राष्ट्रीय राजमार्ग क्र.-3' के नाम से जाना जाता है। आइए जाने भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग को-

(1) **राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-1 :-** यह मार्ग अमृतसर-अंबाला-जालंधर होते हुए दिल्ली को जोड़ता है।

(2) **राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-2 :-** यह मार्ग दिल्ली-मथुरा-आगरा-कानपुर-इलाहाबाद-वाराणसी-कोलकाता शहरों को जोड़ती हैं।

(3) **राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-12 :-** यह मार्ग मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जबलपुर को राजस्थान के जयपुर शहर से जोड़ती है। इस मार्ग में पड़ने वाले प्रमुख शहर है— भोपाल, झालवार, कोटा तथा टोंक।

उपरोक्त सभी राष्ट्रीय राजमार्गों को मानचित्र में ध्यान से अवलोकन कीजिए। नीचे तालिका में कुछ राष्ट्रीय राजमार्गों के नाम (क्रमांक) उनके मार्ग में पड़ने वाले शहरों के नाम के साथ दिए है। इन्हें ध्यान से पढ़िये और मानचित्र में उन शहरों को आपस में पेंसिल से मिलाएँ :

तालिका : राष्ट्रीय राजमार्ग

राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक	कहां से कहां तक	मार्ग में आने वाले प्रमुख शहर
4	थाणे-चेन्नई	थाणे-पुणे-बेलगाँव-चेन्नई
5.	बहरागोडा-चेन्नई	बहरागोडा-कटक-भुवनेश्वर विशाखापतनम-विजयवाड़ा-चेन्नई
6.	धुले-कोलकाता	धुले-अकोला-नागपुर-रायपुर-सम्बलपुर-बहरागोडा-सम्बलपुर
7.	वाराणसी-कुमारी अन्तरीप	वाराणसी-मँगावन-रीवाँ-जबलपुर-नागपुर-हैदराबाद-कर्नूल-बंगलौर-कृष्णागिरि-सलेम-मदुराई-कुमारी अन्तरीप

उपरोक्त राष्ट्रीय राजमार्गों की तरह सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों का जाल बिछा हुआ है।

प्रांतीय राजमार्ग- ये राज्य की प्रमुख सड़कें होती हैं। राज्य के व्यापार के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये सड़कें पड़ोसी राज्य की प्रमुख सड़कों से जुड़ी होती हैं। इनका निर्माण एवं रख-रखाव की जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती है।

जिला तथा ग्रामीण सड़कें- जिले के विभिन्न भागों को जोड़ने वाली सड़कों का भी विशेष महत्व होता है। ये सड़कें जिले के विभिन्न कस्बों उत्पादक केंद्रों, मंडियों व गाँवों को आपस में जोड़ती हैं।

रेलमार्ग : स्थल मार्ग के अंतर्गत रेलमार्गों का विशेष महत्व है क्योंकि स्थलमार्ग पर चलने वाले सभी साधनों की तुलना में रेल सस्ता तथा तीव्रगति से चलने वाला साधन है। भारत में सर्वप्रथम रेलगाड़ी सन् 1853 में थाणे और मुम्बई के बीच (34 कि.मी.) चली थी। वर्तमान में सड़क मार्गों की तरह देश के सभी प्रमुख शहर रेलमार्गों से जुड़े हैं। जम्मू से कन्याकुमारी तक बिछी रेल लाइन देश की सबसे लंबी दूरी का रेल मार्ग है। इस मार्ग पर हिमसागर एक्सप्रेस चलती है। रेलों का ठीक-ठीक संचालन हो, इसके लिए देश के समस्त रेलमार्गों को 9 क्षेत्रों (जोन) में बाँटा गया है। ये क्षेत्र हैं:-

1. पूर्वी रेल्वे
2. उत्तरी रेल्वे
3. दक्षिण रेल्वे
4. पश्चिम रेल्वे
5. मध्य रेल्वे
6. उत्तर-पूर्वी सीमान्त रेल्वे
7. दक्षिण मध्य रेल्वे
8. दक्षिण पूर्वी रेल्वे
9. उत्तर-पूर्वी रेल्वे।

भारत के प्रमुख रेलमार्ग-

(1) **मुम्बई-दिल्ली रेलमार्ग-** मुम्बई से दिल्ली के मध्य मुख्य रूप से दो रेलमार्ग है। पहला- मध्य रेल मार्ग जो नासिक, भुसावल, इटारसी, झाँसी, आगरा, मथुरा होता हुआ दिल्ली को जोड़ता है और दूसरा- पश्चिम रेलमार्ग जो सूरत, बड़ोदरा, रतलाम, मथुरा होता हुआ दिल्ली पहुँचता है।

(2) **मुम्बई-कोलकाता रेलमार्ग-** मुम्बई से कोलकाता जाने के लिए दो मार्ग हैं। एक मुम्बई-मनमाड़-भुसावल-वर्धा-नागपुर- रायपुर-टाटानगर होते हुए कोलकाता तथा दूसरा मुम्बई-भुसावल-इटारसी-जबलपुर-इलाहाबाद-रानीगंज होते हुए कोलकाता।

(3) **मुम्बई-चेन्नई रेलमार्ग-** इस मार्ग में पुणे, सोलापुर, रायपुर तथा गुंटकल स्टेशन आते हैं।

(4) **चेन्नई-दिल्ली रेलमार्ग-** इस रेलमार्ग पर विजयवाड़ा, काजीपेठ, वर्धा, नागपुर, इटारसी, झाँसी आदि महत्वपूर्ण स्टेशन आते हैं।

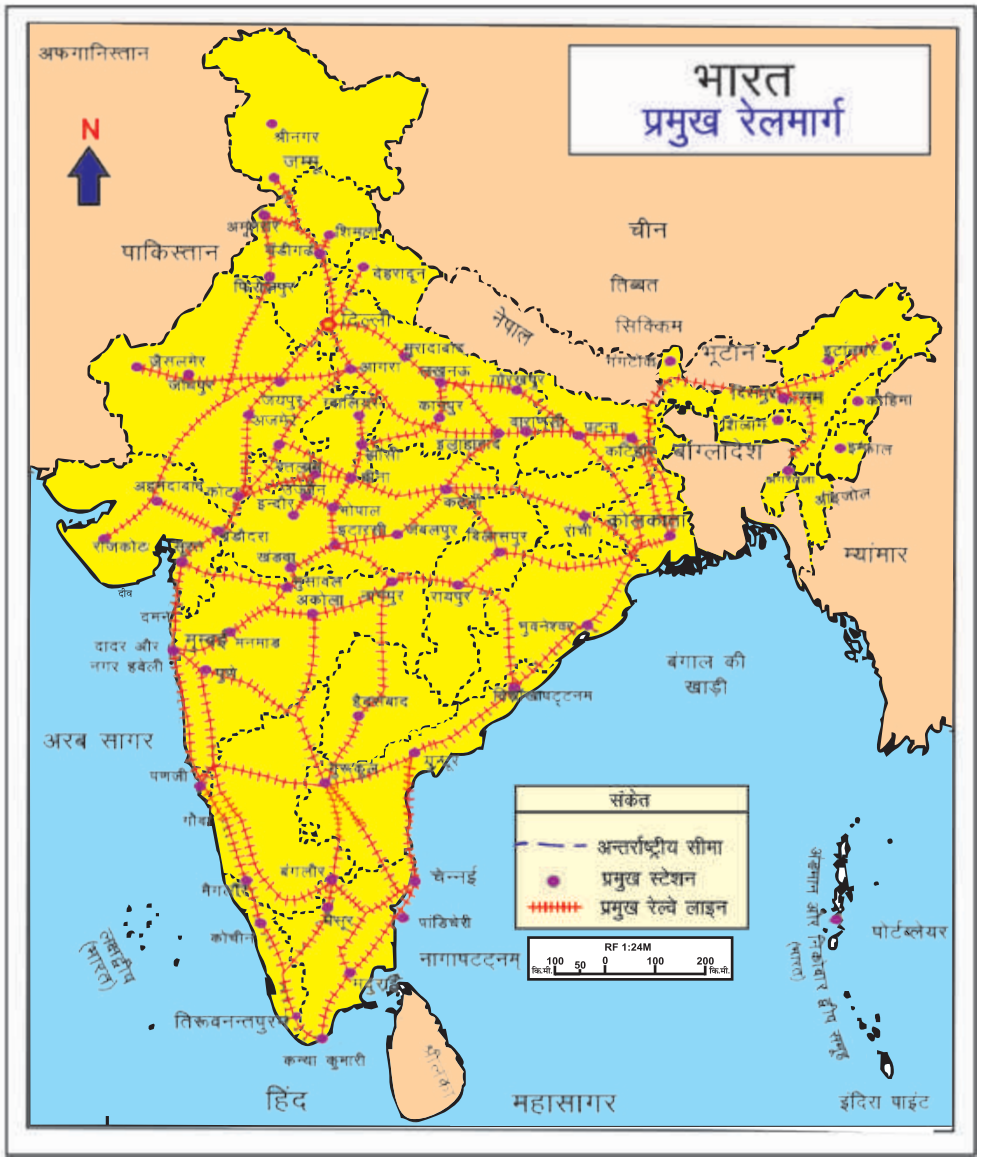

जलमार्ग- भारत में जल यातायात में दो प्रकार के मार्ग हैं-

1. आन्तरिक जलमार्ग 2. समुद्री जलमार्ग

आन्तरिक जलमार्ग- भारत की कुछ नदियाँ जैसे- गंगा, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा आदि कुछ नदियाँ हैं जहां बड़ी-बड़ी नावों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा जाता है। यद्यपि रेलों और सड़कों के विकास हो जाने के कारण नदियों का उपयोग जलमार्गों के रूप में कम ही होता है।

दक्षिण भारत की नदियाँ पठारी प्रदेश के ऊँचे नीचे स्थानों से होकर बहती है, इस कारण ये जल यातायात के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

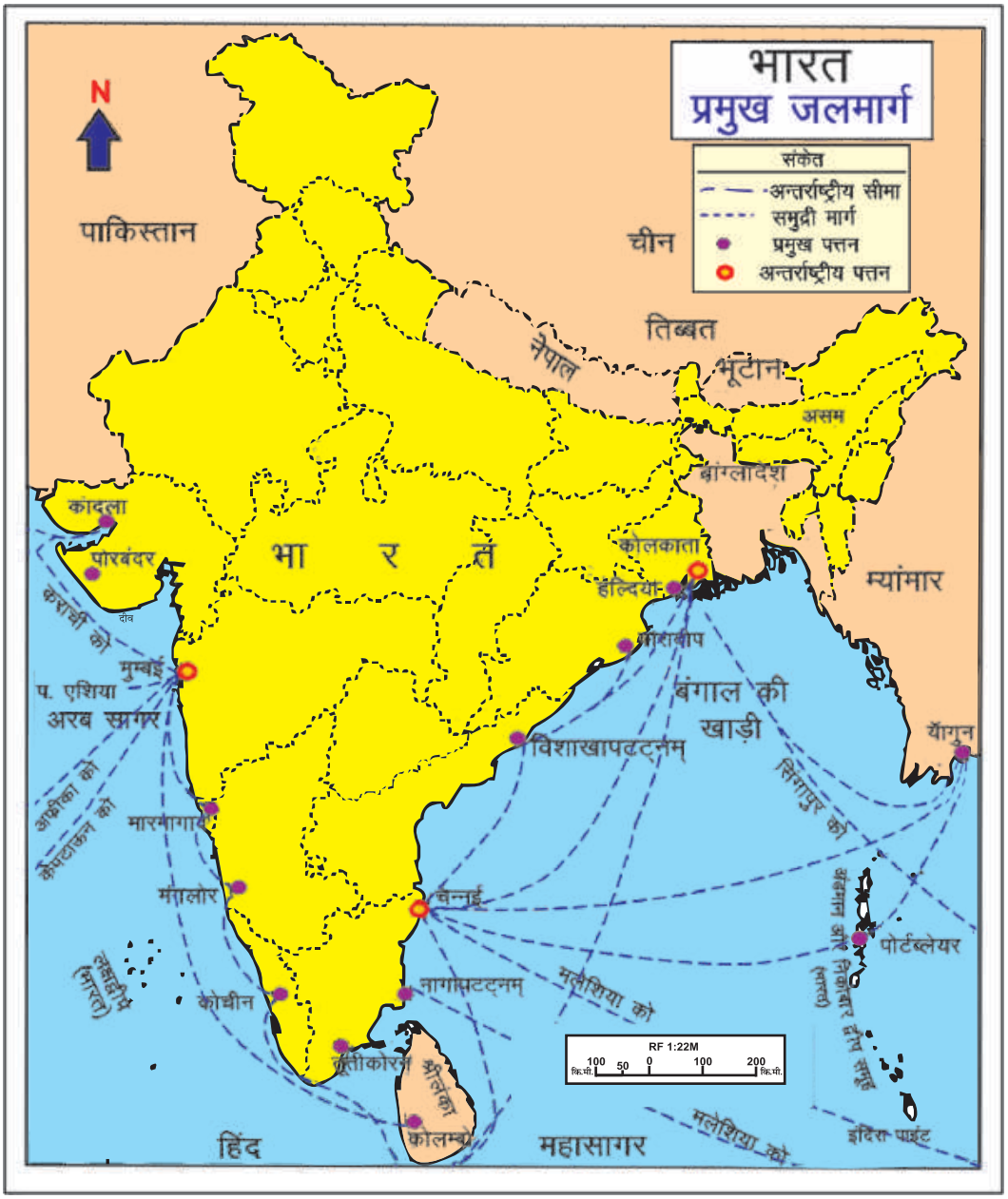

समुद्री जल मार्ग : भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा है। देश के समुद्रतट की लंबाई लगभग 5600 किलोमीटर है, जहां 12 बड़े बन्दरगाह तथा अनेक छोटे-छोटे बन्दरगाह विकसित हुए हैं। इन बन्दरगाहों से समुद्री परिवहन विकसित हुआ है।

बन्दरगाह समुद्र तट पर बने ऐसे स्थान होते हैं जहां से बड़ी-बड़ी नौकाओं तथा जलयानों द्वारा माल और यात्रियों को लाने-ले जाने का कार्य किया जाता है।

जलमार्ग मानचित्र का ध्यान से अवलोकन करें। देश में कांडला, मुम्बई, गोवा, मंगलोर, कोचीन, चेन्नई, विशाखापतनम, पारादीप, कोलकाता बड़े बंदरगाह हैं। इन बन्दरगाहों से अनेक देशों के साथ समुद्री यातायात किया जाता हैं।

मानचित्र को ध्यान से देखकर नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए :—

क्र.	बन्दरगाह का नाम	बन्दरगाह से बाहर जाने वाले मार्ग कौन से देशों को जाता है।
1.	मुंबई	----------
2.	कोलकाता	----------
3.	चेन्नई	----------
4.	पारादीप	----------
5.	विशाखापतनम	----------

बन्दरगाहों से समुद्री यातायात दूसरे देशों के साथ-साथ देश के तट के सहारे-सहारे एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह के बीच भी होते हैं, उदाहरण के लिए मुम्बई से गोवा, मंगलोर आदि स्थानों को भारत के पूर्वी तट के सहारे-सहारे किन-किन बन्दरगाहों के मध्य समुद्री यातायात किया जाता हैं, मानचित्र देखकर लिखिए-

———————————————————————————————

———————————————————————————————

वायुमार्ग- स्थलमार्ग तथा जलमार्ग पर चलने वाले सभी साधनों की तुलना में वायुमार्ग पर चलने वाले साधन तीव्रगति से चलने वाले होते हैं। भारत जैसे विशाल देश में वायुमार्ग का आवागमन में बहुत महत्व है।

भारत के लगभग सभी राज्यों की राजधानी वायुमार्ग से जुड़े हैं। इसी प्रकार, भारत विश्व के सभी प्रमुख देशों से वायुमार्ग से जुड़ा है। देश के भीतर तथा देश से बाहर आने-जाने वाले वायुमार्ग की व्यवस्था दो

पृथक-पृथक संस्था करती है। ये संस्था हैं:-

(1) एअर इंडिया लिमिटेड- यह देश के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विमान सेवा उपलब्ध कराने वाली प्रमुख संस्था है। ये अमेरिका, कनाडा, यूरोप, मध्यपूर्व एशिया, सुदुर पूर्व और अफ्रीका के लिए सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं। नई दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता तथा चेन्नई- ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं जहां से अन्तर्राष्ट्रीय सेवाएं उपलब्ध होती हैं। इन हवाई अड्डों में अन्य देशों के विमान भी आते-जाते हैं।

(2) इंडियन एअर लाइन्स- ये संस्था घरेलू विमान सेवा उपलब्ध कराती हैं। मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखकर बताइये कि देश के भीतर कौन-कौन से शहर वायुमार्ग से जुड़े हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(अ) परिवहन के साधन किसे कहते हैं? कोई दो उदाहरण दीजिए।

(ब) भारत में परिवहन के प्रमुख मार्ग कौन-कौन से हैं, नाम लिखिए।

(स) राष्ट्रीय राजमार्ग और प्रान्तीय राजमार्ग में अन्तर बताइए।

(द) कौन सा राष्ट्रीय राजमार्ग जबलपुर और जयपुर शहर को जोड़ता है?

(य) भारत के रेलमार्गों को कितने क्षेत्रों में बांटा गया है? नाम लिखिए।

(र) मुम्बई और कोलकाता बन्दरगाह से कौन-कौन से देशों को जलयातायात होता है?

(ल) भारत के किन्हीं चार बन्दरगाहों के नाम लिखिए।

(व) दक्षिण भारत की नदियाँ आन्तरिक जलमार्ग के लिए अनुपयुक्त है, क्यों?

2. भारत के मानचित्र में निम्नांकित को दर्शाइये –

(अ) राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 3 एवं 6

(ब) मुम्बई-चेन्नई रेलमार्ग

(स) विशाखापट्टनम जलमार्ग

(द) पारादीप जलमार्ग

(य) दिल्ली-चेन्नई वायुमार्ग

(र) कोलकाता बन्दरगाह

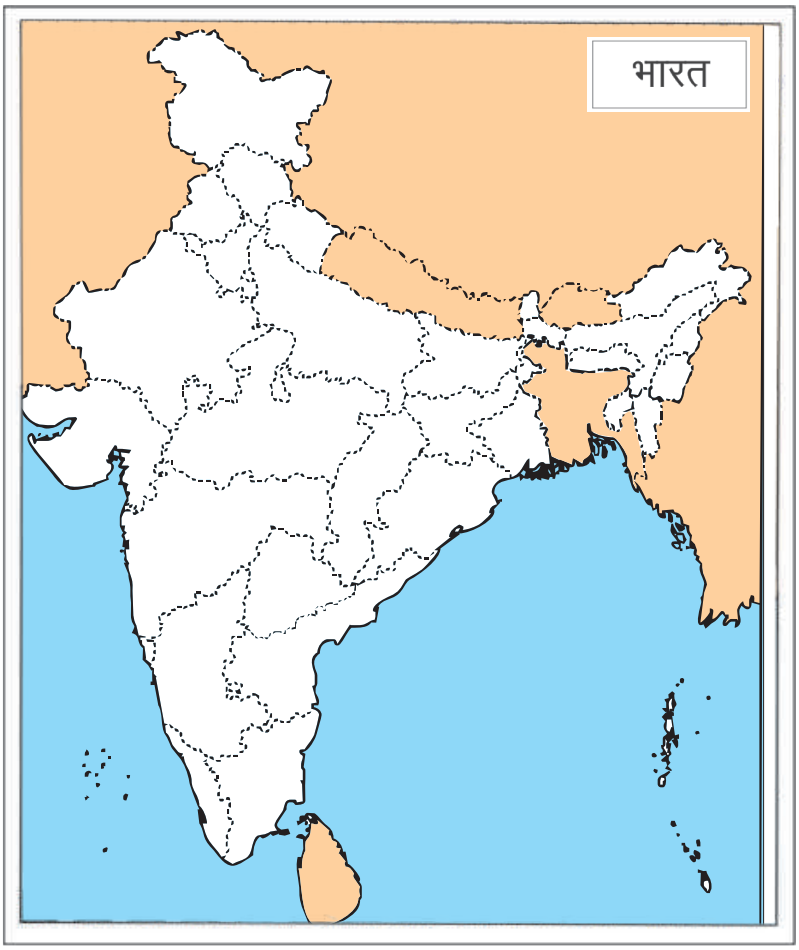

पाठ 28

भारत की जनसंख्या एवं वितरण

आइये सीखें

- भारत में जनसंख्या से परिचय।
- जनसंख्या वितरण पर प्रभाव डालने वाले भौगोलिक कारक कौन-कौन से हैं?
- भारत में जनसंख्या का वितरण किस प्रकार हैं?
- जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण कैसा है?
- भारत में जनसंख्या की विशेषताएँ क्या है?

जनसंख्या की दृष्टि से भारत संसार में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। सन् 2011 में भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ 5 लाख से अधिक हो चुकी है। जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से यह संसार के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत है। अर्थात संसार में भारत का सातवां स्थान है। अन्य पाँच बड़े देश, रूस, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील व आस्ट्रेलिया में भारत से कम जनसंख्या पायी जाती है। भारत में विश्व की कुल जनसंख्या के लगभग 16.7 प्रतिशत लोग निवास करते हैं।

वितरण और घनत्व - भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। जनसंख्या कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक घनी बसी है तो कुछ जगह बहुत कम लोग रहते हैं। जैसे नगरों, औद्योगिक क्षेत्रों और उपजाऊ कृषि क्षेत्रों में अधिक लोग रहते हैं। इसके विपरीत ऊँचे पर्वतों, घने वनों व ठंडे क्षेत्रों में कम लोग रहते हैं। जनसंख्या के इस असमान वितरण के लिए कई कारक उत्तरदायी है।

भौगोलिक कारक - जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों में स्थल की बनावट, जलवायु, मिट्टी, खनिजों के भंडार इत्यादि प्रमुख हैं।

1. स्थलाकृति - लोग पर्वत, पठार, रेगिस्तान के बजाय मैदानी क्षेत्रों में रहना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि मैदानी क्षेत्र कृषि, विनिर्माण कार्य की दृष्टि से उपयोगी होते हैं। अत: मनुष्य अपने जीविकोपार्जन एवं खाद्यान्न की उपलब्धता वाले क्षेत्र में रहना ही पसंद करता है। विश्व के स्थल क्षेत्र के लगभग आधे भाग पर मैदान पाये जाते हैं। लेकिन विश्व की लगभग 90 प्रतिशत आबादी मैदानी क्षेत्रों में ही रहती है, जैसे गंगा यमुना का मैदान, यूरोप का उत्तरी मैदान, यांग्टीसिक्यांग का मैदान, मिसिसिपी का मैदान विश्व के सघन आबादी वाले क्षेत्र है।

2. जलवायु- मनुष्य के रहने के लिए सामान्य वर्षा एवं शीतोष्ण जलवायु अच्छी मानी जाती है। अत: मनुष्य अत्यधिक गर्म या अत्यधिक ठंडे प्रदेशों वाली जलवायु में रहना पसंद नहीं करते हैं। इसी कारण से

भूमध्यरेखीय, उष्ण जलवायु एवं ध्रुवीय प्रदेशों में लोग कम रहते हैं। हमारे देश में भी थार के रेगिस्तान एवं हिमालय के क्षेत्रों में कम लोग रहते हैं।

3. मृदा या मिट्टी- लोगों के किसी स्थान पर बसने में मिट्टी का भी महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि मृदा या मिट्टी, कृषि को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। इस प्रकार मिट्टी से ही हमें अपना भोजन, वस्त्र और घर मिलता है। यही कारण है कि भारत में गंगा, ब्रह्मपुत्र नदी घाटी क्षेत्र, चीन के ह्वांगहो तथा मिस्र के नील नदी के उपजाऊ मैदान घने बसे हुए हैं।

4. खनिजों का भंडार- खनिजों के भंडार एवं खनिजों की खोज भी लोगों को जीवकोर्पाजन के लिए आकर्षित करते हैं, जैसे भारत में छोटा नागपुर का पठार, दक्षिण अफ्रीका की हीरे की खाने तथा मध्य पूर्व के तेल क्षेत्रों में अधिक आबादी होने के उदाहरण हैं।

भारत में जनसंख्या का वितरण - भारत विश्व के सर्वाधिक अधिक जनसंख्या वाले देशों में से

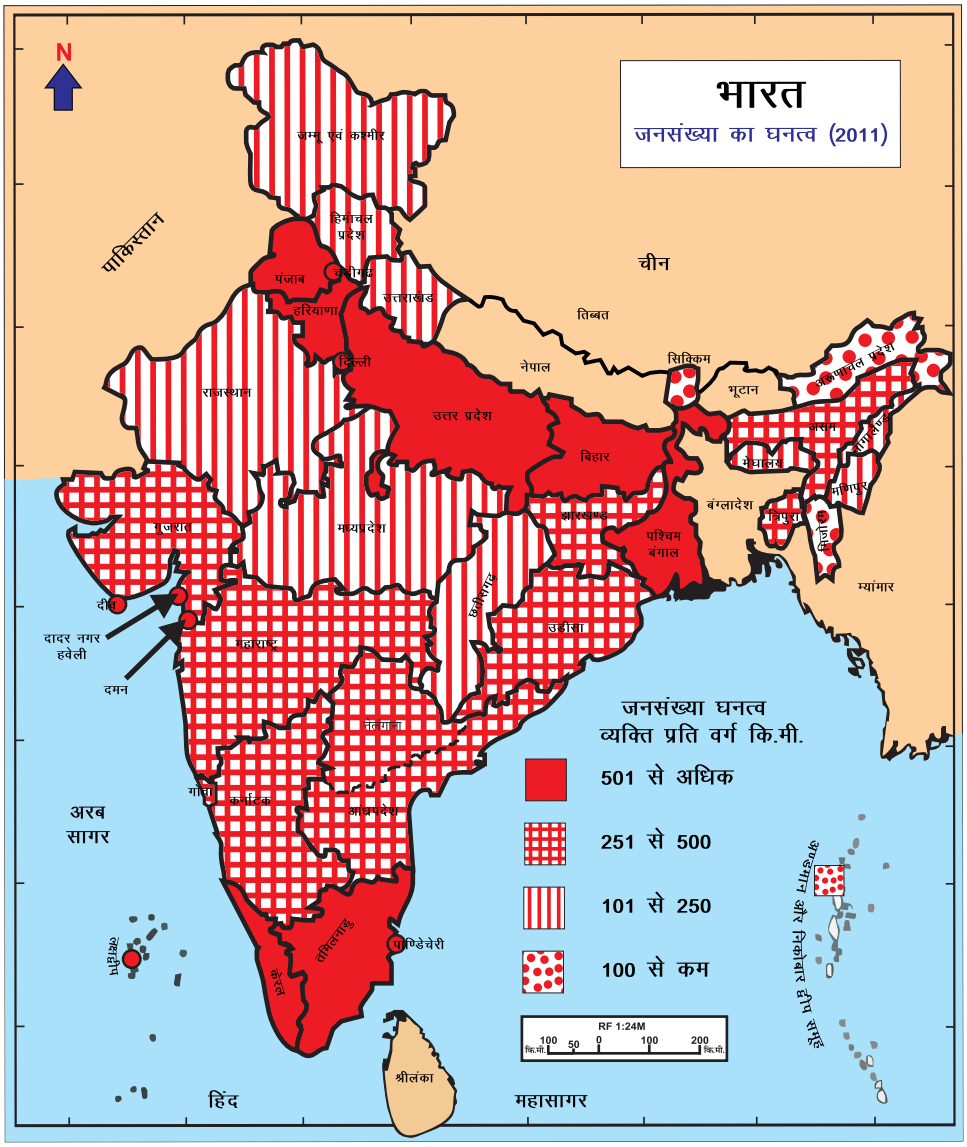

एक है। वर्ष 2011 की जनसंख्या का औसत घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। भारत को यहाँ रहने वाले लोगों के घनत्व के आधार पर तीन वर्गों में रखा गया है।

धरातल के किसी इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व या जनघनत्व कहते हैं। इसे सामान्यत: वर्ग कि.मी. में व्यक्त किया जाता है, जैसे 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.।

1. सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र- भारत के जिन क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व 501 से अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, इन्हें अत्यधिक सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र कहते हैं। इनमें दिल्ली, चंडीगढ़, पाण्डिचेरी, दमन एवं दीव, लक्षद्वीप, बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल, उत्तरप्रदेश, दादर और नगर हवेली, हरियाणा, तमिलनाडु व पंजाब आदि राज्य शामिल हैं।

जिन क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व 251 से 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, इन्हें सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र कहते हैं। इनमें झारखंड, असम, गोवा, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, गुजरात व उड़ीसा आदि राज्य शामिल हैं।

2. सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र- इस क्षेत्र के अन्तर्गत देश के वे सभी राज्य हैं, जहाँ जनसंख्या का घनत्व 101 से 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्र में सम्मिलित प्रदेश हैं- मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, नागालैण्ड एवं मणिपुर।

3. कम जनसंख्या वाले क्षेत्र- इन क्षेत्र में सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश एवं अंडमान व निकोबार द्वीप समूह आते हैं। यहाँ जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 100 व्यक्ति से भी कम है।

मध्यप्रदेश का जनसंख्या का घनत्व 236 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। अर्थात मध्यप्रदेश सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र में आता है।

दिए गए नक्शे को ध्यान से देखते हुए सघन जनसंख्या घनत्व व कम जनसंख्या घनत्व वाले पांच-पांच राज्यों के नाम नीचे लिखिए-

सघन जन घनत्व वाले राज्य	कम जन घनत्व वाले राज्य
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.

भारतीय जनसंख्या की विशेषताएं

व्यवसायिक भिन्नता- हमारे देश की जनसंख्या में व्यावसायिक रूप से बड़ा असन्तुलन है। भारत की लगभग दो तिहाई जनसंख्या आज भी कृषि पर निर्भर है। जनसंख्या का 10 प्रतिशत भाग उद्योगों में लगा है और शेष भाग सेवाओं में लगा हुआ है। इस प्रकार हमारी जनसंख्या का बहुत ही थोड़ा भाग अर्थव्यवस्था व्यवसाय क्षेत्र में काम करता है। व्यवसायों के द्वारा ही कच्चे माल से उपयोगी वस्तुएं बनाकर उसके मूल्य में अभिवृद्धि की जाती है। अत: जनसंख्या में व्यवसायिक भिन्नता है।

स्त्री-पुरुष अनुपात- कुल जनसंख्या में स्त्री पुरुष बीच के संख्यात्मक अनुपात को स्त्री-पुरुष अनुपात कहते हैं। इसे प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है जैसे, भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात 2011 की जनगणना के अनुसार 943 है अर्थात यहां प्रति 1000 पुरुषों में 943 महिलाएं हैं। स्पष्ट है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम है।

आयु संरचना- लोगों के विकास के विभिन्न पहलुओं के लिए योजनाएं बनाने में जनसंख्या का आयु के अनुसार वितरण बहुत सहायक होता है। जनसंख्या को निम्न तीन आयुवर्गों में विभाजित किया जाता है- (1) 0-14 वर्ष (2) 15-64 वर्ष और (3) 65 वर्ष से अधिक। भारत की जनसंख्या का अधिकांश भाग युवा वर्ग में आता है। कार्यशील आयु वर्ग के लोगों का वर्ग भी काफी बड़ी है। अत: सरकार को युवा वर्ग के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएँ जुटाने के लिए प्रयत्न करने पड़ते हैं।

साक्षरता स्तर- किसी भी भाषा में साधारणत: संदेश को पढ़ना, लिखना और समझना ही साक्षरता है। स्वतंत्रता के समय जनसंख्या का केवल छठा भाग ही साक्षर था। वर्ष 2011 में 73 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। देश में केरल सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य है। जबकि बिहार सबसे कम साक्षरता वाला राज्य है। मध्यप्रदेश का साक्षरता प्रतिशत 69.3 है।

देश की जनसंख्या में स्त्री व पुरुषों के साक्षरता स्तर में भी अंतर है। देश में स्त्रियों की साक्षरता 64.6 प्रतिशत है यानि अभी भी देश की लगभग 35 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित हैं जबकि लगभग तीन चौथाई पुरुष (78.7 प्रतिशत) साक्षर है। मध्यप्रदेश में महिला साक्षरता 59.2 प्रतिशत है।

ग्रामीण व नगरीय विभिन्नता- भारत गांवों का देश है यहां लगभग 6 लाख से अधिक गांव हैं और कुल आबादी का लगभग 68.8 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती हैं। 31.2 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में बसती है जहाँ के अधिकतर व्यक्ति कृषि के अतिरिक्त सेवा कार्य, उद्योग, व्यापार, परिवहन आदि से जीविका चलाते हैं।

सांस्कृतिक भिन्नता- भारत में अनेक प्रजातियों के लोग रहते हैं। द्रविड़, मंगोल तथा आर्य यहां की प्रमुख प्रजातियां हैं। समय के साथ-साथ वे आपस में एक-दूसरे से इस प्रकार घुल मिल गई है, कि उनके मूल लक्षण अब लुप्त हो गए हैं।

भारत के लोग भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं। एक ही धर्म को मानने वाले लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं। भाषाएं, प्रजातियों, धर्मों, जातियों तथा प्रदेशों की सीमाओं में नहीं बंधी है। इन प्रजातीय, धार्मिक भाषायी तथा प्रादेशिक विविधताओं के बावजूद हम सभी भारतीय है।

भारत की जनसंख्या की एक तिहाई जनसंख्या अनुसूचित जनजातीय की है। इस प्रकार जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अभी भी देश के सुदूर पहाड़ी अंचलों, जंगलों में आच्छादित क्षेत्रों में जहाँ सुविधाएँ लगभग नगण्य है, निवास करती है। इन लोगों की अपनी अलग संस्कृति व रहन-सहन है। जनजातियों का वितरण भी भारत में असमान है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में घोषित अनुसूचित जनजातियों को जनसंख्या की दृष्टि से तीन प्रमुख भागों में बांटा गया है-

(1) उत्तर-पूर्वी क्षेत्र- यह क्षेत्र सबसे सघन जनजाति वाला क्षेत्र है। इसमें नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, असम, त्रिपुरा व मेघालय राज्य शामिल हैं। इनमें नागा, अंगामी, मिकिर, लुसाई, गारो, खासी, बोरो, कुकी और खम्पा आदि प्रमुख जनजातियां हैं। नागा जनजाति की संख्या सर्वाधिक है।

(2) मध्यवर्ती क्षेत्र- इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, दक्षिणी उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश तथा गुजरात शामिल हैं। यहां प्रमुख रूप से संथाल, उराव, बिरहोर, भुईया, खारिया, मुण्डा, भील, कोल, जुआंग, मुड़िया, मारिया, कोरबा, गोंड तथा कोरकू जनजातियां हैं।

मध्यप्रदेश की कुछ जनजातियां –

मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से निम्नलिखित जनजातियां हैं- भील, गोंड, कीर, कोरकू, नेहाल, बैगा, भैना, भरिया, सहरिया, भूमिया आदि। मध्यप्रदेश के बालाघाट, छिंदवाड़ा, मंडला, डिण्डौरी, सीधी, शहडोल, अनूपपुर, झाबुआ, खरगोन, खंडवा, शिवपुरी, धार जिले प्रमुख हैं जहां अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं।

(3) दक्षिणी क्षेत्र- इस क्षेत्र में कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश सम्मिलित हैं। यहां पर टोडा, दुरूला, चेचू, पुरवा, निपयान, भूरालो, मुथुवान, करूम्बा, कन्निकर, भुराली, कड्डार, मालकुसवान प्रमुख जनजातियाँ हैं। अण्डमान निकोबार में अण्डमान, जरावा, निकोबारी, सण्टीली मुख्य जनजातियाँ हैं, निवास करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(अ) भारत में जनसंख्या की कौन-कौन सी विशेषताएं हैं नाम बताते हुए किसी एक को विस्तार से लिखिए।

(ब) भारत में अधिक जनसंख्या वाले राज्य बताइए?

(स) भारत की प्रमुख जनजातियों का वितरण बताइए।

(द) मध्यप्रदेश में कौन-कौन सी जनजातियां रहती हैं। किन्हीं तीन के नाम लिखिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए-

(अ) भारत की ..... प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है।

(ब) मध्यप्रदेश की साक्षरता दर ..... है।

(स) स्त्री व पुरुष जनसंख्या के संख्यात्मक अनुपात को ..... कहते हैं।

(द) भारत की लगभग दो तिहाई जनसंख्या ..... पर निर्भर है।

3. सही जोड़ी बनाइए –

	क	ख
(अ)	सबसे कम साक्षरता वाला राज्य	केरल
(ब)	सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य	मध्यप्रदेश
(स)	जनजातियां बोरो, खासी	बिहार
(द)	गोंड, भील जनजातियां	असम

❖❖❖❖

विविध प्रश्नावली-III

I. लघुत्तरीय प्रश्न-

1. मौर्य वंश का अंतिम शासक कौन था?
2. संगम साहित्य से आशय बताइए।
3. महाबलीपुरम के रथ मंदिरों का निर्माण किस वंश के राजाओं ने कराया?
4. अलवार किसके उपासक थे?
5. पल्लव वंश के दो शासकों के नाम लिखिए।
6. पुलकेशिन द्वितीय कहाँ का राजा था?
7. फाह्यान कौन था? वह किसके शासनकाल में भारत आया था?
8. थाईलैण्ड का प्राचीन नाम बताइए।
9. नगर पंचायत का मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कौन होता है?
10. नगरपालिका के सदस्यों को क्या कहा जाता है?
12. जिला पंचायत के कोई दो कार्य लिखिए।
12. दीवानी और फौजदारी मुकदमें में क्या अंतर है?
13. मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय कहाँ स्थित हैं?
14. मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालय की खंडपीठ किन दो शहरों में स्थित हैं?
15. रबी फसल और खरीफ फसल में अंतर लिखिए।
16. रेशेदार फसल से आप क्या समझते हैं? उदाहरण दीजिए।
17. शक्ति के साधन किसे कहते हैं?
18. भारत के पड़ोसी देशों को जोड़ने वाले प्रमुख मार्ग बताइए।
19. बंदरगाह से आप क्या समझते हैं?
20. ह्वेनसांग ने भारत के विषय में क्या लिखा है? वर्णन कीजिए।
21. पुलकेशिन द्वितीय ने किसकों हराया था?

II. दीर्घउत्तरीय प्रश्न-

1. हर्षवर्धन की विजयों का वर्णन कीजिए।
2. टिप्पणी लिखिए-
   (अ) भारत का पश्चिमी देशों से संबंध
   (ब) भारत का अरब देशों से संबंध
   (स) भारत का मध्य एशिया से संबंध
   (द) भारत का चीन से संबंध
3. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? ग्राम पंचायत तथा जिला पंचायत के गठन बताइए।
4. नगरपालिका का गठन कहाँ व कैसे होता हैं? समझाइए।
5. नगर निगम का गठन समझाइए?
6. भारत का प्रमुख प्राकृतिक वनस्पति विभागों में बाँटिए तथा किसी एक विभाग का वर्णन कीजिए।
7. टिप्पणी लिखिए-
   (अ) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन
   (ब) ज्वारीय वन
8. भारत में पाये जाने वाले खनिजों का वर्णन कीजिए।
9. भारतीय जनसंख्या की विशेषताएँ लिखिए।

III. बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. शक शासकों ने अपनी राजधानी बनाई थी -
   (अ) दिल्ली (ब) उज्जैन (स) अजमेर (द) भोपाल
2. हर्षचरित के लेखक थे -
   (अ) हर्षवर्द्धन (ब) ह्वेनसांग (स) बाणभट्ट (द) कालिदास

3. भुक्ति कहा जाता था -
(अ) प्रांत (ब) जिला (स) नगर (द) ग्राम
4. बाघ की गुफा में बने चित्र किस काल की चित्रकला का उदाहरण है-
(अ) कुषाण काल (ब) गुप्त काल (स) हड़प्पा काल (द) वैदिक काल
5. जिले का सर्वोच्च अधिकारी होता है-
(अ) जिला पुलिस अधीक्षक (ब) जिला शिक्षा अधिकारी
(स) कलेक्टर (द) जिला परियोजना अधिकारी
6. भारत में पहला आधुनिक लौह इस्पात कारखाना स्थापित हुआ था -
(अ) भिलाई (ब) राउरकेला (स) विशाखापटनम (द) कुल्टी
7. भारत में पहला सीमेंट कारखाना स्थापित हुआ था-
(अ) मध्यप्रदेश (ब) बिहार (स) उत्तरप्रदेश (द) तमिलनाडु
8. कोयले के उत्पादन में संसार में भारत का स्थान है -
(अ) पहला (ब) तीसरा (स) पाँचवा (द) दूसरा
9. बन्दरगाह है -
(अ) चेन्नई (ब) दिल्ली (स) भोपाल (द) महाबलेश्वर
10. भारत में रेलमार्गों के जोन की संख्या है -
(अ) 7 (ब) 8 (स) 9 (द) 10

IV. असमान छाँटिए -

1. कुषाण, नाग, चेर, कण्व
2. मेघदूत, रघुवंश, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, नीतिसार
3. जावा,यवद्वीप, इण्डोनेशिया, बर्मा
4. चन्द्रगुप्त प्रथम, चन्द्रगुप्त द्वितीय, राघवेन्द्र गुप्त, समुद्रगुप्त
5. ग्राम पंचायत, राज्य पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत
6. सागौन, शीशम, नारियल,साल
7. कीकर, बबूल, जलकुंभी, नागफनी
8. आलू, तिल, सरसों, मूंगफली
9. चेन्नई, भोपाल, कोलकाता, मुंबई

V. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. शुंग वंश का अंतिम शासक ..... था।
2. साँची के स्तूप का तोरणद्वार का निर्माण ..... के काल में हुआ था।
3. 'विक्रमादित्य' की उपाधि ..... को मिली थी।
4. 'स्वर्ण युग' ..... काल को कहा जाता है।
5. रघुवंश के रचयिता ..... थे।
6. चीनी यात्री ह्वेनसांग ..... के काल में भारत आया था।
7. नालंदा वर्तमान में ..... राज्य में स्थित है।
8. चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद सर्वप्रथम ..... ने किया।
9. ईसाई धर्म के संस्थापक ..... थे।
10. प्राचीन काल में ईरान ..... कहलाता था।
11. 'अविस्ता-ए-जेंद'नामक धार्मिक उपदेशों का संग्रह ..... धर्म से संबंधित है।
12. सरपंच ..... पंचायत का मुखिया होता है।
13. पार्षद बनने की न्यूनतम आयु ..... वर्ष होती है।
14. ककड़ी, खरबूज, तरबूज ..... की फसलें हैं।
15. मध्यप्रदेश का जनसंख्या घनत्व ..... व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

अभ्यास प्रश्न पत्र

विषय : सामाजिक विज्ञान

समय : 3 घंटे

नोट : सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है -

प्र. 1 निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए -

(अ) शिलालेख कहा जाता है -

(i) पत्थरों पर लिखे लेख (ii) किताबों में लिखे लेख

(iii) भोजपत्र पर लिखे लेख (iv) ताँबे के पत्रों पर लिखे लेख

(ब) हमारे देश में कुल कितने राज्य हैं -

(i) 27 (ii) 28

(iii) 29 (iv) 25

(स) भारत में कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं -

(i) उत्तरप्रदेश (ii) पश्चिम बंगाल

(iii) दिल्ली (iv) जम्मू कश्मीर

(द) नगरीय व ग्रामीण स्वशासी संस्थाओं का कार्यकाल होता है-

(i) 3 वर्ष (ii) 5 वर्ष

(iii) 2 वर्ष (iv) 1 वर्ष

प्र.2 सही जोड़ी बनाइए-

(i) जन गण मन	शुंग शासक
(ii) अग्निमित्र	राष्ट्रगान
(iii) वन्देमातरम्	ज्योतिषी और खगोलशास्त्री
(iv) आर्यभट्ट	राष्ट्रीय गीत

प्र. 3 उचित शब्द को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(i) हड़प्पा सभ्यता में ..... व पर्यावरण शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया गया थ। (गंदगी/साफ सफाई)

(ii) लोक सभा, विधान सभाओं एवं स्थानीय निकायों में जनजातियों के लिए ..... दिया गया है। (आरक्षण/मकान)

(iii) एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए उपयोगी साधनों को ..... के साधन कहते हैं। (वायुमार्ग/परिवहन)

निर्देश- निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में लिखिए।

प्र. 4 रेशम मार्ग क्या था?

प्र. 5 अपने किन्हीं तीन पड़ोसी जिलों के नाम लिखिए।

प्र. 6 भारत में बोई जाने वाली खरीफ व रबी की फसलों के नाम लिखिए।

निर्देश- निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

प्र. 7 पृथ्वी को जीवित ग्रह क्यों कहते हैं?

प्र. 8 सौरमंडल का चित्र बनाकर, उसे नामांकित कीजिए।

प्र. 9 ग्लोब/मानचित्र पर अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ क्यों खींची जाती हैं।

प्र. 10 आर्यों के काल को वैदिक काल क्यों कहा जाता है?

प्र. 11 गणसंघ तथा जनपद क्या थे?

प्र. 12 समुदाय के विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी का क्या महत्व है लिखिए?

निर्देश- निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

प्र. 13 सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ समझाते हुए लिखिए कि अशोक ने प्रजा की भलाई के लिए कौन-कौन से कार्य किए?

अथवा

सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता नाम से क्यों पुकारा जाता है? इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता क्या थी लिखिए।

प्र. 14 ग्राम एवं नगर स्तर पर जनसंख्या की दृष्टि से समितियाँ कौन-कौन सी है? विस्तार से लिखिए।

अथवा

परस्पर निर्भरता की आवश्यकता क्यों पड़ती है? दो देशों के मध्य पारस्परिक निर्भरता को उदाहरण देकर समझाइए।

प्र. 15 भारत में मानसून की उत्पत्ति किस प्रकार होती है समझाकर लिखिए।

अथवा

भारत की जनसंख्या की कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं लिखिए।

प्र. 16 ग्लोब किसे कहते हैं व इसकी उपयोगिता लिखिए?

अथवा

भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइए –

(i) दिल्ली-चेन्नई वायुमार्ग

(ii) मुम्बई शहर

(iii) चावल उत्पादक क्षेत्र

(iv) हिमालय पर्वत

(v) गंगा नदी